कथाक उपन्यास
उपन्यासक कथा

अशोक



मैथिली अकादमी, पटना
बिहार

कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा

(मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक अध्ययन)

अशोक



मैथिली अकादमी, पटना
बिहार

मैथिली अकादमी प्रकाशन-194

ISBN-81-85763-62-3

प्रकाशक :
मैथिली अकादमी
740/800 लालबहादुर शास्त्री नगर, पटना-23

प्रथम संस्करण-2012
प्रति-500
कुल पृष्ठ-96

मूल्य-75/- (पचहत्तर) टाका मात्र

मुद्रक :
सरस्वती प्रेस
गोरखनाथ कम्पाउण्ड,
बोरिंग केनाल, पटना
मो.-9304625963, 9334601243

अध्यक्षक कलम सँ

मैथिली साहित्यक भंडार कें भरबाक लेल अकादमी अनेक प्रकारक कार्यक्रमक आयोजन करैत अछि। 'भाषणमाला' एहने आयोजन अछि। एहि आयोजनक तीन टा उपलब्धि अछि। पहिल, जाहि विशिष्ट व्यक्तिक स्मृतिमे भाषण-कार्यक्रम कयल जाइत अछि हुनका प्रति आदर आ श्रद्धा निवेदित करब, दोसर, मिथिला-मैथिली सँ सम्बद्ध विषय पर स्वतः एकटा आलेख उपलब्ध करब आ तेसर, साहित्यिक आ सांस्कृतिक चेतना जगायब।

प्रस्तुत कृति एहने भाषणक पुस्तकाकार संस्करण थिक। मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ रचनाकार श्री अशोक जेहने प्रसिद्ध कथाकार छथि तेहने गंभीर समीक्षक। ओना, हिनक कविता, नाटक आ निबन्ध सेहो कम महत्वपूर्ण नहि अछि, मुदा प्रसिद्ध छथि ई कथा-लेखक आ आलोचकक रूपमे। 'कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा' हिनक समीक्षा-वृत्तिक अनुपम देन अछि। विशद आ व्यापक अध्ययन, सूक्ष्म आ तार्किक विश्लेषण तथा सटीक आ स्पष्ट अभिव्यक्ति हिनक आलोचनाक विरल विशेषता अछि। मैथिलीक प्रारम्भिक उपन्यास पर केन्द्रित हिनक पुस्तक उपन्यास साहित्य कें बुझबाक लेल त' उपयोगी अछिये, मैथिली समीक्षाक सेहो प्रतिमान अछि।

विश्वास अछि, पाठकलोकनि अकादमीक एहि प्रकाशनक स्वागत करताह।

पटना,
दिनांक 6-8-2012

कमलाकान्त झा
अध्यक्ष

प्रकाशकीय

अकादमीक तत्वावधानमे आयोजित गौरीनाथ मिश्र भाषणमालाक अवसर पर देल गेल व्याख्यानक ई आलेख थिक, जकर सुरुचिपूर्ण प्रकाशन सँ अकादमी गौरबक अनुभव क' रहल अछि।

मैथिली अकादमी भाषा-साहित्यक विकास लेल बहुविध कार्यक्रम करैत अछि जे सर्वविदित अछि। भाषणमाला कार्यक्रम एकटा एहने प्रयास अछि। एहि अवसर पर मैथिली भाषाक विभिन्न विधापर मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ रचनाकार लोकनि द्वारा निर्धारित विषय पर भाषण होइत अछि आ पाण्डुलिपि पुस्तकाकार प्राप्त होइत अछि। प्रस्तुत पुस्तक 'कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा' एहने भाषणक पुस्तकीय रूप अछि । लेखक छथि प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अशोक। प्रस्तुत पोथीमे विद्वान रचनाकारक आलोचनात्मक विचार प्रस्तुत अछि। मैथिलीमे एहि प्रकारक पोथी बहुत कम अछि। सुधी-पाठक, छात्र समुदाय सँ ल' क' साहित्यक अनुशीलन कयनिहार धरिक लेल ई परम उपयोगी सिद्ध होयत से पूर्ण विश्वास अछि ।

पटना,
दिनांक 6-8-2012

जितेन्द्र प्रसाद
निदेशक-सह-सचिव

दुटप्पी

जखन मैथिली अकादमी, पटना द्वारा गौरीनाथ मिश्र भाषणमालाक अन्तर्गत भाषण देबाक लेल हमरा कहल गेल आ भाषणक विषय चुनबाक भार सेहो देल गेल त' हम अवग्रहमे पड़लहुँ। कोन विषय पर भाषण देल जाय? विचार भेल जे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास पर बाजल जाय। एकर कारणो छल। हरिमोहन झाक कन्यादान ओ द्विरागमन तथा यात्रीक पारो उपन्यास पर निबन्ध लिखबाक क्रममे हम आरम्भिक उपन्यास सभ पर विचार केने रही। सन्धान पत्रिकाक सम्पादन करैत डा० रामदेव झाक सौजन्यसँ कुमार गंगानन्द सिंहक 'भोल' नामसँ छपल 'मनुष्यक मोल' उपन्यास सन्धानक एक अंकमे छपनहुँ रही। मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास सभक अध्ययनक समय ओकर कथा-वस्तु हमरा संवेदित केने रहय। तैं हम यैह निर्णय केलहुँ जे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासे पर बाजी। विषय राखल गेल, 'कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा।' आयोजन सम्पन्न भेल। हम करीब एक घंटा धरि अपन लिखल भाषण पढ़लहुँ।

भाषण श्रोतालोकनिकेँ पसिन्न पड़लनि। हम उत्साहित भेल रही। फेर अकादमी दिससँ भाषणकेँ पोथीक रूपमे प्रस्तुत करबाक आग्रह हुअ लागल। करीब सय-सबा सय पृष्ठक पोथी। हम फेर अवग्रहमे पड़ि गेल रही। एक घंटाक भाषणकेँ पोथीक रूपमे कोना प्रस्तुत कयल जाय? अकादमीक भाषणमालाक पूर्व निर्धारित योजना शुरुहेसँ हमरा झंझटि मे देने रहय। असलमे कोनो एक विषय पर आलोचनात्मक पोथी हम आइ धरि लिखने नहि छी। फुटकर निबन्ध सभ लिखने छी आ से पोथीक रूपमे संगृहीत भ' प्रकाशितो भेल अछि। एही कारण सभसँ योजनाबद्ध रूपमे परिच्छेद आदि निर्धारित क' पोथी लिखब हमरा दुरूह लागल। तैं समस्या बनल रहल। समय बीतैत गेल।

वस्तुतः मैथिली अकादमीए के धन्यवाद जे अन्ततः पोथीक रूपमे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास पर जे-जेना भेल पाण्डुलिपि तैयार क' प्रकाशन लेल प्रस्तुत क' सकलहुँ। से, जेना कहलहुँ, विषयक चयनसँ पुर्वहिसँ मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास पर सोचैत-विचारैत, लिखैत रहबाक आ अकादमीक तगादाक दबाबक कारणे प्रस्तुत क' सकलहुँ। तैं लगातार चलैत चिन्तनक फलस्वरूप एहि प्रस्तुतिमे एक प्रकारक आन्तरिक संगति पाठककेँ भेटि सकैत अछि। परिच्छेदक निर्धारणक क्रममे तैँ पूर्व प्रकाशित निबन्धक शीर्षको बदल' पड़ल अछि। प्रकाशित निबन्ध सेहो परिच्छेदक रूपमे राखल अछि। ठाम-ठीम किछु परिवर्त्तनो कयल अछि। एही संग परिशिष्टक रूपमे भारतीय भाषाक प्रकाशित आरम्भिक उपन्यासक संग मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक सूची देने छी। परिशिष्टमे अपन हरिसिंहदेवी कथा एहि कारणे देने छी कि हरिसिंहदेवी प्रथासँ उपजल मानसिकता एखनो खतम नहि भेल अछि। ओ व्यवस्था आब भने अप्रासंगिक भेल चल जाइत हो, ओहि प्रथाक प्रभावसँ खण्ड-पखण्ड भेल समाजक मानसिकता पूरा-पूरी बदलल नहि अछि। बदलबाक दिशामे मुदा आत्मसंघर्ष अवश्य क' रहल अछि।

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास पर विचार करैत बेर-बेर ई कचोट होइत रहल जे बहुतो उपन्यास आइयो धरि पोथीक रूपमे उपलब्ध नहि भेल अछि। कतेक त' पत्रिकेमे पड़ल अछि। पोथीक रूपमे प्रकाशनसँ उपन्यास सभ पाठककेँ सुलभ भ' सकत। पाठक ओकरा पढ़ि सकत। आलोचकलोकनि लेल विभिन्न कोणसँ ओकर अध्ययन प्रस्तुत करब सम्भव भ' सकत। ई पोथी ओहि दिशामे अपना हिसाबसँ मात्र एक शुरूआत थिक।

पटना, 23/04/2012 — अशोक

अनुक्रम

मैथिली उपन्यासक भूमिका 11
कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा 20
जागरणक छटपटाहटि 40
ग्रहणसँ उग्रास धरि 53
बुच्चीदाइक पराभव 64
मनोरथक पारो 80

परिशिष्ट

(क) भारतीय भाषाक आरम्भिक उपन्यासक सूची 86
(ख) मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक सूची 89
(ग) हरिसिंहदेवी (कथा) 90

मैथिली उपन्यासक भूमिका

अधिकांश भारतीय आरम्भिक उपन्यासमे स्त्री सामाजिक मूल्य, मान्यता आ आकांक्षाक माध्यम रहल अछि। उपन्यास सभमे स्त्रीक प्रति गहींर सहानुभूति अछि। उपन्यासक नायिकाक रूपमे उत्पीड़ित स्त्रीक चित्रण एक राष्ट्रीय प्रतीक-कथा बनि गेल अछि। यैह भारतीय उपन्यासक भारतीयता थिक। मुदा मैथिलीमे स्त्रीक प्रति ई सहानुभूति तत्कालीन परिस्थितिमे विवाहक ब्याजेँ सामाजिक अध:पतनकेँ रोकब छल। समाजमे बहु-विवाह, अनमेल-विवाह, बाल-विवाह, पुनर्विवाह आदि बहुतो सामाजिक कुरीति पसरल रहय। एहि सभ सँ समाज गर्त्तमे जा रहल छल। वर्ण व्यवस्था आ हरिसिंहदेवी प्रथा दुनू मीलि स्त्रीक दशाकेँ एकदम दयनीय बनाक' राखि देने छल। स्थिति एहन विषम रहय जे स्त्री, बेटीक रूपमे जन्म लेबासँ डेराय लागल रहय। नारी जीवन करुण कथा बनि क' रहि गेल छल।

धियाक जनम जनु देहु विधाता
धिया डुबैत बिच धार ॥

x x x x

जाहि दिन आ हे बेटी तोहर जनम भेल
घरे-घरे ठोकल केंबाड़ हे ॥

एहनामे मैथिलीक आधुनिक साहित्यकारलोकनि ई बात सोच' लगला जे स्त्रीक जीवनमे सुधारक बिना परिवार आ समाजक सुधार सम्भव नहि थिक। संगहि सामाजिक सुधारक बिना स्त्रीकेँ जीवन नहि भेटि सकैत छैक। तैं सामाजिक सरोकारे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे विवाहक मुद्दा के प्रमुख स्थान देबाक कारण बनल। ई मिथिलाक अपन खास परिस्थिति छल जे नवोन्मेषक साहित्य उपन्यासमे अभिव्यक्त भेल, ओना एकर अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य सेहो विद्यमान रहय। यैह मैथिली उपन्यासक मैथिलत्व थिक।

मैथिलीमे उपन्यास विधाक प्रतिष्ठापक जनार्दन झा 'जनसीदन' सामाजिक स्तर पर नारीवर्ग पर होइत परम्परा पोषित अत्याचार पर कठोर प्रहार करैत कहैत

छथि जे, 'जाहि समाजमे कन्याकेँ शिक्षा देब अनुचित बूझल जाइत अछि, कन्याकेँ शारीरिक आओर मानसिक उन्नति करब महापाप बूझल जाइत अछि, अयोग्य पतिक हाथमे दै सर्वदाक हेतु आओर माटिमे मिला देल जाइत अछि, आओर बहिकिरनियोसँ बढ़ि नीच दशामे राखल जाइत अछि, से समाज कदापि उन्नत नहि भय सकैत अछि। जाहि समाजक कन्या योग्य वर नहि पाबि सतत खिन्न रहैत अछि, जाहि समाजमे बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह आदि दूषित प्रथा प्रचलित अछि, से समाज सभ्य मण्डलीमे कथमपि आवृत्त नहि भै सकैत अछि आओर ने ओहि समाजक सन्तान देशोन्नतिक पथमे अग्रसर भै सकैत अछि।'[1] वस्तुत: मिथिलामे वैवाहिक कुरीति ततेक गम्भीर ओ जड़िआयल रहल अछि जे समस्त समाज-व्यवस्थाकेँ आक्रान्त कयने रहल। एहि कुरीतिक जड़िमे पंजी व्यवस्था अथवा हरिसिंहदेवी व्यवस्था छल। विवाह-व्यवस्थामे सुधारक उद्देश्यसँ शुरु भेल ई प्रथा मैथिल ब्राह्मण समाजकेँ छोट-पैघमे बाँटि क' राखि देलक। टुकड़ी-टुकड़ी क' देलक। मिथिलाक उत्कर्षक आधार विद्या ओ व्यक्तित्व रहय। मुदा पंजी व्यवस्था एहि दुनू मूल्यकेँ छहोछित क' उत्कर्षक आधारेके हिला देलक। फलस्वरूप ब्राह्मण समाज अध:पतन दिस अग्रसर भ' गेल। जनसीदनजी समाजक चरित्र, स्वभाव, संस्कार, आचार, विचार, व्यवहार ओ परम्परा सम्बन्धी पन्द्रहटा सामाजिक दोष ओ दुर्गुणक प्रति समाजक प्रबुद्ध वर्गक ध्यान आकृष्ट कयलनि। ओ दोष आ दुर्गुण सभ रहय-वैमनस्य, अन्धपरम्परावंश-विक्रय-व्यापार, अपरिमित व्यय, सोपहासनिन्दा, हिंसा, ईर्ष्या (अधिकतया स्त्रीगणक), दम्भ, आलस्य, दारिद्र्य, कपट, स्वार्थता, मात्सर्य, जातीय गौरवोन्माद, अधर्म एवं अधर्मक पोषणार्थ दुराचार।[2]

मैथिलीक आरम्भिक पत्र-पत्रिकामे एहि प्रकारक दोष आ दुर्गुणक प्रति प्रबुद्ध मैथिल सभ निबन्ध आदिक द्वारा समाजकेँ सचेत ओ सुधारक लेल प्रेरित कर' लगला। मैथिलीक आरम्भिक कथा-उपन्यासक विषय-वस्तु आ अन्तर्वस्तु समाजक एही दोष आ दुर्गुण दिस ध्यान आकृष्ट करबाक दृष्टि संग समक्ष आब' लागल। उपन्यासकारलोकनि समाजक दोष आ दुर्गुणक प्रति सचेत आ सतर्क करैत समाजकेँ उन्नति एवं उत्थान दिस जागरूक करबाक प्रयास केलनि। उपन्यासमे से काज विभिन्न चरित्रक उपस्थापन आ संघर्षक माध्यमे देखाओल गेल। नीक आ बेजाय चरित्रकेँ पाठकक समक्ष राखि उपन्यासकार समाजमे सुधारक प्रति लोककेँ ग्रहणशील बनेबाक प्रयास केलनि। वस्तुत: उपन्यासकार लोकनि अपन औपन्यासिक पात्रक विविध ओ विभिन्न आचरण देखाक' समाज-सुधारक प्रति अपन विचारक प्रकटीकरणे केलनि। एहि क्रममे ई मोन

पाड़ब प्रासंगिक होयत जे उपन्यासकार प्रेमचन्द उपन्यासकेँ मानव चरित्रक चित्र मात्र बुझैत रहथि। ओ कहने छथि जे मानव चरित्र पर प्रकाश देब तथा ओकर रहस्यकेँ अनावृत्त करबे उपन्यासक मूल तत्व अछि।

जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिलीमे पाँचटा उपन्यास लिखलनि। सती-सर्वस्व (1912), निर्दयी सासु (1914), शशिकला (1915-16), पुनर्विवाह (1926) आ द्विरागम रहस्य (1945-46)। एहि पाँचो उपन्यासमे सँ मात्र दूटा निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह आइ धरि पोथीक रूपमे उपलब्ध अछि। शेष तीनू उपन्यास मिथिला-मिहिर पत्रिकामे ओहिना अनामिते पड़ल अछि।

जनसीदनजीक सती-सर्वस्वमे एक संयुक्त परिवारक कथा कहल गेल अछि। परिवारमे कटुता, कलह ओ अशान्ति अछि। जकर प्रमुख कारण लेखक स्त्री समाज बीच पसरल अज्ञानता ओ अशिक्षाक कारणे उत्पन्न दोषकेँ मानलनि अछि। तकरे विविध रीतिसँ रेखांकित करबाक कोशिश कयने छथि। शशिकलामे राज दरबारमे चाकरीक कारणे लोकके होइत असोकर्य, कठिनता ओ कष्टक अनुभूत यथार्थ अभिव्यक्त भेल अछि। द्विरागम रहस्यमे शिक्षाक महत्वक संग संस्कृत शिक्षाक प्रति ह्वासोन्मुख समाज-दृष्टि, आधुनिक शिक्षाक प्रति लोकक उन्मुखता आ नारी-शिक्षाक लेल अतिशय आवेश उपन्यासमे प्रकट भेल अछि। द्विरागम-रहस्यक प्राय: सभ स्त्री-पात्र किछुने किछु अवश्ये पढ़' लिख' जनैत अछि।[3]

उपन्यासकार जनसीदनक उपन्यास सभमे नारीक विभिन्न रूपक दर्शन त' होइत अछि, मुदा नारीक वाह्य सौन्दर्यक वर्णन नहि भेटैत अछि। नारी-पुरुषक नैसर्गिक प्रेमक अभिव्यक्ति नहि भ' पबैत अछि। दाम्पत्य-प्रेम पर्यन्तक अभिव्यक्तिमे लेखक जेना कुण्ठाग्रस्त भ' जाइत छथि। पति-पत्नीक अन्तरंग-एकान्त क्षणमे जँ कखनो दाम्पत्य प्रेमक स्वर फुटितो अछि तँ ओ नीति-उपदेश एवं प्रेमक शास्त्रीय परिभाषाक भारसँ मूक भ' जाइत अछि।[4] स्त्री-पुरुषक बीच राग-भावक अभिव्यक्तिमे मैथिली उपन्यासकार बादो धरि सामान्यतया कने कंजूस रहला अछि। ई कंजूसी पारम्परिक ब्राह्मणवादी मानसिकताक देन थिक। एहि कारणे स्त्रीक वाह्य सौन्दर्यक वर्णन धरिमे लौकिकसँ वेशी शास्त्रीय-संस्कृत शब्दावलीक प्रयोग बहुधा भेटि सकैत अछि। साहित्यकारलोकनिमे एक प्रकारक संकोच रहरहां बनल रहल अछि। ओना मैथिलीमे उपन्यास कहि क' छपल 'मोहिनी मोहन' (1907-08) मे नायिका मोहिनी ओ नायक मोहनक बीच प्रीतिक अंकुरण ओ विभिन्न बाधा सभक बाद

दूनूक विवाहक वर्णन पूर्वहिं आबि चुकल अछि। दाम्पत्य-प्रेम मुदा से पारम्परिक रीतिक कांचीनाथ झा 'किरण'क 'चन्द्रग्रहण' (1933) मे बेस भावपूर्ण रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि। से भावपूर्ण अभिव्यक्ति योगानन्द झाक 'भलमानुष' (1944) मे सेहो भेल अछि। एतेक धरि जे कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल (1924) मे मृत पत्नी मनोरमाक स्मृतिमे पति हर्षनाथ कन्या पाठशाला खोलबैत छथि। संन्यासी भ' जाइत छथि। मुदा मनोरमाक स्मृति जोगाक' रखबाक पाछाँ दाम्पत्य-प्रेमसँ वेशी सामाजिक कुरीतिक दंश अछि। हर्षनाथ कहैत छथि जे, 'जावत ई मकान रहत तावत बिन किछु बजनहि कन्या-विक्रयक भीषण परिणाममे सँ एकटा उदाहरणक गवाही दैत रहत।[5] नारीक वाह्य सौन्दर्यक वर्णनक संग नारी-पुरुषक बीच राग-भावक अभिव्यक्ति यात्रीक पारो (1946) मे आबिक' हम सभ देखैत छी। मुदा से पिसियौत बहीनि ओ ममियौत भाइक बीचक भेल अछि। तैं एहि प्रेमकेँ अवैध ओ अनुचित मानल गेल। एहि प्रसंग आलोचक रमानाथ झा एक उल्लेखनीय बात कहलनि अछि। ओ कहैत छथि जे, 'साहित्य केवल सुधारक सामग्री नहि थिक। ई तँ एक गोट कला थिक ओ कला केवल कलाहुक हेतु होइत अछि तथा उपन्यास साहित्यक मर्मज्ञलोकनि कहताह जे एतादृश उपन्यास विशेष सम्मान्य होइत अछि।' आलोचक रमानाथ झाकेँ दुनूक बीच मनहि मन भेल प्रेमसँ कोनो हानि नहि लगैत छनि। ओ एकरा केवल मानसिक भावमात्रक अंकन मानि कहैत छथि जे, 'मन पर जखन अधिकार नहि भेल ओ दुहूक मनमे जखन एकर उदय भए गेल तखन यथार्थवादी, वास्तविकताक चित्रकार, लेखक कोन रुपेँ मर्यादाक सङ्ग ओकर निर्वाह करबैत ओकर विषम फल देखाओल अछि से हमरा जनैत उचितेटा नहि चमत्कारक भेल अछि।'[6]

मुदा, कला आ यथार्थक सम्बन्धमे उपन्यासकार प्रेमचन्दक कहब रहनि जे 'कला देखाइत त' यथार्थ अछि मुदा यथार्थ होइत नहि अछि। ओकर खूबी यैह थिक जे ओ यथार्थ नहि होइतो यथार्थ बुझाइत अछि।'[7] वास्तविकता आ कलात्मकताक एही सरणि पर चलैत मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे मैथिल स्त्री लजायल, कठुआयल, पाथरक बनल मुरुत सँ ल'क' हाड़-मांसक बनल, विद्रोही होइत नारी धरिक यात्रा तय केलक अछि। बुच्चीदाइक चुप्पी पारोमे आबिक' टूटल अछि। पारो बाज' भुक' लगैत अछि। अपन मनोरथ व्यक्त कर' लगैत अछि। एहि क्रममे सुधारवादी दृष्टि, परिवर्त्तन दिस बढ़ैत सेहो देखाइ पड़ि सकैत अछि। समाज व्यवस्थामे सुधार-संशोधनसँ ल' परिवर्त्तन दिस डेग बढ़ैबा धरिक एहि यात्रामे उपन्यास सफल भेल अछि।

एहि प्रकारेँ मैथिली उपन्यासक यात्रा स्पष्टत: समाज सापेक्ष दृष्टि संग शुरु भेल। समाजमे मिथिला समाज छल। मिथिलाक ब्राह्मण समाज। आन जाति-वर्गक समस्या नहिएँ जेकाँ व्यक्त भेल अछि। पात्रक रूपमे आनो जाति-धर्म-वर्गक लोक आयल अछि। कतहु-कतहु एहन पात्र सभक प्रति सहानुभूति सेहो प्रकट भेल अछि। जेना, पुण्यानन्द झाक मिथिला दर्पण (1925) मे। मुदा समाज अथवा सामाजिक सुधारक परिधिमे खाली ब्राह्मणे समाज अछि। केवल एकटा उपन्यास रास विहारी लाल दासक 'सुमति' (1918) मे कायस्थ समाजक कथा अछि। ब्राह्मणो समाजक समस्या सभमे खाली ब्राह्मण स्त्रीक दु:स्थिति दिस उपन्यासकारलोकनिक ध्यान गेलनि। ताहूमे स्त्री शिक्षाक संग वैवाहिक प्रथामे सुधार-संशोधने धरि। केवल 'पारो' एहिसँ भिन्न अछि। पारोमे समाज-परिवर्त्तन दिस डेग बढ़ैत दृष्टिगोचर होइत अछि। से एहि कारणे जे उपन्यासमे ओहि अन्यायी व्यवस्था पर सांघातिक चोट कयल गेल। 'चन्द्रग्रहण' उपन्यास मुदा एकदम फराक विषय पर लिखल गेल। ओकर परिधि व्यापक अछि। ओहि मे मैथिलक नैतिक अध:पतनके रोकबाक क्रममे मानवीय चरित्रक दृढ़ता ओ उदात्तता देखाओल गेल अछि। से धार्मिक कट्टरता अथवा साम्प्रदायिकताक सोच अथवा विभ्रमकेँ दूर करबाक लेल मानव चरित्रक विकासक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत देखाओल गेल अछि।

मैथिली आरम्भिक उपन्यासमे स्त्रीक दु:स्थितिक पाछाँ विवाहके केन्द्र विन्दु बनयबाक कारण हरिसिंहदेवी प्रथासँ उत्पन्न समस्या सभ रहय। से समस्या कैक तरहक रहय। एही संग बाल विवाह समाजमे प्रचलित छल। वृद्ध विवाह छल। बिकौआ प्रथा समाप्त नहि भेल रहय। एहि प्रथाक एक परिणाम ई भेल छल जे एक पुरुषक मृत्यु भेला पर दू-चारिटा नहि दर्जनो स्त्री विधवा भ' जाइत छली। बाल विवाहक कारणे विधवा भ' जाइत छली। विधवा-विलापसँ समाजमे त्राहि-त्राहि मचल छल। एहेन विधवा सभमे सँ पहिल विवाहित स्त्रीकेँ छोड़ि क' अन्य स्त्री 'कन्यादानी' रूपमे नैहरे मे जीवन गुदस्त करैत छली। दुखक पहाड हुनका सभ पर टूटि पड़ैत छलनि। बहुतो पड़ा क' आनठाम चल जाइत छली। नौड़ी-खबासिन बनल अथवा देह बेचिक' गुजर करबा पर विवश होइत छली। काशी एहन विधवा सभसँ भरल छल। 1960-70 ई. धरि जखन हम काशीमे रहैत रही एहेन विधवा मैथिल स्त्रीकेँ विश्वनाथ-अन्नपूर्णा मंदिर लग भीख मगैत देखने रही। परिवारसँ उपेक्षित संन्यासिनी अथवा भीखमंगनी बनल एहेन स्त्रीकेँ मैथिलीमे झगड़ादन करैत देखि हमरा कोनादन लगैत रहय। चतुरानन मिश्रक 'कला' (1948) उपन्यासमे एहि तथ्यक साक्ष्य भेटैत अछि। एहि

उपन्यासमे विधवा भेल नायिका कलाक विवाह होइत अछि। एहिसँ पूर्व मैथिली उपन्यासमे विधवाक विवाहक साक्ष्य नहि भेटल अछि। ब्राह्मण विधवा स्त्रीक विवाहक दृष्टि सँ ई उपन्यास एक प्रगतिशील उपन्यास कहल जा सकैत अछि। एहि प्रकारेँ सैंकड़ो-हजारोक संख्यामे स्त्रीक विधवा बनि, दीन-हीन बनि जेबाक पाछाँ हरिसिंहदेवी प्रथासँ उपजल बिकौआ प्रथा सन सामाजिक समस्या रहय। तैं स्त्रीक विभिन्न कारणे बनल दारुण स्थितिक समाधानक रूपमे विवाहकेँ उपन्यासक केन्द्रमे राखल गेल। एहिसँ परिवार ओ समाजक उत्थान ओ उन्नतिक मादे सोचल गेल।

परिवार ओ समाजक दृष्टिसँ विवाहक समस्या एखनो प्रासंगिक अछि। भने ओकर रूप बदलि गेल हो। हरिसिंहदेवी भने आब कमजोर ओ अप्रासंगिक भेल चल जाइत हो, पुरुषक अर्थकरी शिक्षाक संग स्त्री शिक्षा दिस भने समाज व्यापक रूपमे उन्मुख भेल हो, ब्राह्मण समाजमे पहिनेक अपेक्षा भने आर्थिक समृद्धि आयल हो मुदा विवाहक समस्या रूप बदलि क' एखनो कायम अछि। आइ कन्यालोकनि भने पढ़ि-लिखि लेथु, नोकरी-चाकरी कर' लागथु, काटर प्रथा खतम नहि भेल अछि। आर बढ़ले चल जा रहल अछि।

स्त्रीक स्वाधीनता दिस बढ़ैत समाजमे स्त्रीक एखनो जिनिस बनल रहब एक दुखदायी प्रकरण थिक। बाजारवाद एहिमे अपन उपस्थितिसँ दु:स्थिति के आर गहींर ओ व्यापक बना रहल अछि। स्वाधीन स्त्री सेहो बाजारक ललक ओ ललचमे पड़िक' जिनिसक रूपमे अपन विनिमय मूल्य चाह' लगली अछि। वर्ण ओ वर्ग आधारित व्यवस्थाक संग सामंती ओ भूमण्डलीकृत मानसिकता एहि मे सान चढ़ा रहल अछि। एहनामे विवाह संस्थाक प्रति स्त्रीक बीच वितृष्णा उत्पन्न भ' रहल अछि। ई वितृष्णा पुरुषक कठोर मानसिकता आ विवाहक माध्यमसँ स्त्रीकेँ बंधनमे रखबाक चेष्टा-कुचेष्टासँ सेहो उत्पन्न भेल अछि। वस्तुत: यदि विवाहसँ स्त्रीक कामनाक दमन होइत अछि त' स्त्री अवसाद-ग्रस्त हेबे करती। तैं बिमारी आब परिवार संस्थाक विखंडन दिस बढ़ि रहल अछि। ओना युवा वर्ग आब सोच' लागल अछि जे विवाहक बीच प्रेम आ स्वायत्तता एक महत्वपूर्ण वस्तु थिक जे स्त्रीक पक्षमे एक स्वस्थ परिवारक आधारशिला राखत। वस्तुत: परिवार समाजक पहिल सीढ़ी थिक तैं परिवारमे मुख्य भूमिकाक निर्वाह कर'वाली स्त्रीक सम्मान ओकर स्वाधीनताक रक्षा कैये क' कयल जा सकैत अछि। स्त्रीक पक्षमे न्याय, प्रेम-विवाह आ अन्तरजातीय विवाह द्वारा सेहो भ' सकैत अछि। एहि प्रकारेँ विवाहक वर्त्तमान समस्याक समाधान लेल

सोच-विचारक प्रसंग तथा एहि प्रसंगमे सामाजिक चेतनाक संग उपन्यासक प्रस्तुति लेल सेहो ऐतिहासिक दृष्टिसँ मैथिली उपन्यासक उदयकाल केँ मोन पाड़ब आवश्यक थिक।

हमरा सभकेँ मोन पाड़बाक थिक जे कन्यादान (1933) मे बुच्चीदाइक कोनो मनोरथ व्यक्त नहि भेल अछि। मनोरथ भेटैत अछि त' सी.सी. मिश्रक। हुनका अंग्रेजी बजनिहारि अंग्रेजिया चालि-चलनवाली स्त्रीक मनोरथ रहनि। एकदम आधुनिक। आधुनिकताक परिभाषा हुनकर अपन छलनि। एहि मनोरथक समाधान अन्तत: द्विरागमन (1943) मे ओ बुच्चीदाइकेँ छबे मासमे अंग्रेजी बजनिहारि-भुकनिहारि बना, स्कर्ट-ब्लाउज पहिराक' बैडमिंटन खेलेबाक लूरि सिखाक' करैत छथि। अपन योग्य बुच्चीदाइकेँ बना लैत छथि। मुदा पारोमे मनोरथ अभिव्यक्त भेल अछि पार्वतीक। ओकर मनोरथ रहैक जे विरजूए भैया सन जँ ओकरा वर होइतैक। अर्थात् जकरा देखि ओकरा आकर्षण होइक। जे ओकरासँ प्रेम करैत होइ। एहन पुरुष! मुदा ओकर मनोरथ पूर नहि भ' सकलैक। किएक? समाजक कारणे। समाज ओकर विवाह बूढ़, धुत्थुर वर सँ करा देलकै। ओ किछु ने क' सकल। ओकर बिरजूओ भैया किछु नहि क' सकलै। उपन्यासकार यात्रीक चेतनामे सुनगैत ई ताप, आक्रोश नवतुरिए आबओ आगाँक समाधान तकलक। नवतुरिया (1954) आगाँ आयल। एहीठाम आबिक' पारोक मनोरथ एक चेतना बनि गेल। सामाजिक चेतना।[8]

मैथिलीक बादक उपन्यासमे पारोक एहि चेतनाक विकास विभिन्न रूपमे भेल अछि। से ओना विस्तृत अध्ययनक विषय थिक। मुदा संक्षेपमे कही त' विवाहेत्तर पुरुषक प्रति राग-भाव राजकमल चौधरीक 'आदिकथा' (1958) तथा मायानन्द मिश्रक' बिहाड़ि, पात आ पाथर (1960) मे अछि। स्त्रीक अस्मिता ओ आर्थिक-सामाजिक स्वायत्तताक संघर्ष लिलीरेक 'मरीचिका' (1982) ओ उषा किरण खानक 'हसीना मंजिल' (1995) मे देखाओल गेल अछि। ई बात ध्यान देबा जोगर अछि जे स्त्रीक अस्मिता ओ आर्थिक-सामाजिक स्वायत्तताक संघर्ष मैथिली उपन्यासमे नारी उपन्यासकारेक कलमसँ चित्रित भेल अछि। मुदा अहू दुनू उपन्यासमे पारस्परिक प्रेम आ सामाजिक-आर्थिक स्वायत्तता, सम्मानक संग देब' बला पतिक मनोरथ नायिकालोकनिकेँ पूर नहि भ' सकलनि अछि। वस्तुत: स्त्री चाहे ब्राह्मण हो वा दलित, हिन्दू हो अथवा मुसलमान ओकर समस्या सामान्यतया एके रंगक रहलैक अछि। गरीब ओ दलित स्त्रीकेँ ओना दोहरी मारि सह' पड़ैत छैक। गरीबी आ पुरुष मानसिकता दुनूक।

उपन्यासक माध्यमसँ भारतमे राष्ट्रीय चेतना-निर्माणक कथा स्त्रीक स्वाधीनताक संग किसानक आत्मनिर्भरता ओ समृद्धि पर केन्द्रित रहल अछि। मुदा स्त्री आ किसान एखनो समस्याग्रस्त अछिए। एकर कारण एखनो मौजूदा समाजक ओ व्यवस्था थिक जे स्त्री आ किसानकेँ दोयम दर्जा द'क' हाशिया पर रखने अछि। जा धरि स्त्री आ किसान केन्द्रमे नहि आओत ताधरि व्यवस्था परिवर्त्तन सम्भव नहि अछि। मैथिलीमे यात्रीक बलचनमा, ललितक पृथ्वीपुत्र आ धीरेन्द्रक भोरुकवा उपन्यास 1965-1967क बीच प्रकाशित भेल। ई तीनू उपन्यास खेतिहर-किसानक जीवन पर आधारित अछि। मुदा बलचनमा, पृथ्वीपुत्र ओ भोरुकबामे नायक-नायिकाक दाम्पत्य-प्रेमक सहज अभिव्यक्ति सेहो भेटैत अछि। से सामाजिक परिवेशक परिवर्त्तनसँ सम्भव भेल अछि। पृथ्वीपुत्रमे ओना स्त्री-पुरुषक प्रेम सेहो अछि। आ से ब्राह्मण कलपू मिसर आ अछोप बिजलीक बीचक अछि। मुदा कलपू मिसर द्वारा विवाहक प्रस्ताव पर बिजली पाछू हटि जाइत अछि। अछोप हेबाक ओकर संज्ञान समाप्त नहि भ' सकलैक अछि। वस्तुतः ई बिजलीक मूल्य बोध नहि, बिजलीक चरित्र गढ़' बला ललितक मूल्यबोध थिक। मूल्यबोधक स्रोत वर्णवादी वा ब्राह्मणवादी मानसिकतामे निहित अछि।[9] मिथिलामे आर्थिक ओ सामाजिक जीवनमे परिवर्त्तनक बिना स्त्री आ किसानक जीवनमे परिवर्त्तन सम्भव नहि थिक। कृषि कर्मसँ पलायनक तथा खेत बचेबाक लेल संघर्षक एहि परिदृश्यमे कृषिकेँ उद्योगसँ जोड़ब, कृषिक विकास होयब आवश्यक भ' गेल अछि। एहनामे बलचनमाक बालचन यादव, पृथ्वीपुत्रक सरुप पासवान कि भोरुकबाक ठकबा कियोट सन खेत-खरिहानक प्रति ममत्व रखनिहार एवं ओहि लेल वैचारिक दृढ़ताक संग संघर्ष केनिहार गृहस्थ मोन पड़ब स्वाभाविक थिक।[10] से मैथिलीक तत्कालीन उपन्यास सभ के पढ़ि क' मोन पड़ैत अछि।

एही संग की कन्यादान अथवा पारो सन उपन्यास पढ़ि क' बुच्चीदाइ अथवा पारोके बिसरि सकैत छी? से अहू कारणे नहि बिसरि सकैत छी जे एहि दुनू उपन्यासकेँ पढ़िक' मिथिलाक एक पण्डित, कौचर्य करैत कहने रहथि जे,

स्वच्छन्द प्रोफेसर हाथ पैर दन्तावली पुर्वहिं तोड़ि देल
दुर्भाग्यसँ सम्प्रति मैथिलीक पारो कपारो फोड़ि देल

आब ओ पण्डितजी कतहु भेटता नहि। समाजमे फूटल कपारक विसविसी सेहो कम भ' गेल अछि। स्त्रीक प्रति समाज ओ परिवारमे सम्मान ओ स्नेहक भाव बढ़ि रहल अछि। बेटी आब बलाय नहि रहल। नब आ आधुनिक मिथिलाक निर्माण लेल ई एक शुभ लक्षण थिक।

सन्दर्भ संकेत :

1. रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन', विनिबन्ध, साहित्य अकादेमी
2. वैह
3. वैह
4. वैह
5. कुमार गंगानन्द सिंह, मनुष्यक मोल, सन्धान पत्रिका-2
6. रमानाथ झा, पारोक प्रसङ्ग, आचार्य रमानाथ झा रचनावली-2
7. प्रेमचन्द, कला और यथार्थ, वागर्थ
8. अशोक, उपन्यासकार यात्री, यात्री साहित्यावलोकन, चेतना समिति
9. अशोक, ललितक पृथ्वीपुत्र : खेतिहरक जीवन-संघर्ष, मैथिली शोध पत्रिका-5, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय
10. वैह

■

कथाक उपन्यास : उपन्यासक कथा

आन भाषा-साहित्यक अपेक्षा मैथिलीमे उपन्यासक उदय विलम्बसँ भेल। भारतमे सेहो उपन्यासक उदय 1857क बादे भेल। 1857 मोन रखबाक थिक। किएक त' 1857क वर्ष भारतीय स्वाधीनताक पहिल संघर्षक रूपमे महत्वपूर्ण अछि। ओहि प्रमुख राजनीतिक घटनाक बाद भारतमे उपन्यासक उदय भेल। से मात्र कोनो संयोग नहि छल। देशक रूपमे भारतक अवधारणा 1857 सँ शुरू होइत अछि जखन कि ओहिकालमे भारत सम्प्रभु राष्ट्र नहि छल। हमरा सभकेँ ई मोन रखबाक थिक जे भारतमे उपन्यास सभ ओही कठिन, संघर्षपूर्ण वर्षक बाद लिखल जाय लागल। हमरा सभकेँ ईहो मोन रखबाक चाही जे उत्तरी अमेरिकामे उपन्यास पर अपन मन्तव्य दैत लेसली फिडलर[1] कहैत छथि जे 'देश आ उपन्यासक जन्म संगहि संग भेल।' उत्तरीए अमेरिकामे नहि, देश आ उपन्यासक क्रमिक जन्म लातिन अमेरिका, अफ्रीका आ एशियाक देश सभमे सेहो संगहि संग भेल। एहि क्रममे रूसकेँ सेहो जोड़ल जा सकैत अछि जत' दिसम्बरवादी आन्दोलनक बाद पुश्किन पहिने 'टेल्स ऑफ वेलकिन आ' तकरवाद कैपटेन्स डॉटर' लिखलनि। तकर बादे गोगोलक 'दी ओभरकोट' आ लेरमनटोवक 'हीरो ऑफ आवर टाइम' आयल। ओकर बाद टालस्टाय, दोस्तोवस्की आ तुर्गनेव अपन उपन्यास प्रस्तुत कयलनि।[2] दिसम्बरवादी विद्रोह 1825 मे भेल छल। 14 दिसम्बर 1825 के दिसम्बरवादी सभक विद्रोहकेँ जारशाही सरकार क्रूरतापूर्वक कुचलि देलक। विद्रोहक पाँच नेताकेँ फाँसी द' देल गेल आ आन सभकेँ साइबेरिया पठा देल गेल। दिसम्बरवादी मुख्यत: कुलीन वर्गसँ आबयवला रूसी क्रान्तिकारीलोकनिक गुप्त सोसाइटीक सदस्य रहथि जे भूदास प्रथाक अन्त आ जारशाहीक निरंकुशताकेँ सीमित कर' चाहैत रहथि।[3]

मार्च 2000 मे साहित्य अकादेमी द्वारा भारतक आरम्भिक उपन्यास पर आयोजित विचारगोष्ठीमे आरम्भिक भारतीय उपन्यासक अध्ययन लेल आधार सभक पूनर्सूत्रीकरणक प्रश्न उठबैत आलोचक नामवर सिंह सेहो उपन्यास आ

देशक जन्म संगहि संग मानैत छथि। ओ इहो कहैत छथि जे भारतीय उपन्यास जाहिमे देशक जन्मक बोध होइत अछि से ओ उपन्यास सभ थिक जकर केन्द्रमे स्त्री छथि। से स्त्री कखनोकाल पतिता त' कखनो दासी (गुलाम) त' कखनो प्रेममे आज्ञाकारी देखाइत छथि। उपन्यासक नायिकाक रूपमे उत्पीड़ित स्त्रीक चित्रण एक राष्ट्रीय प्रतीक-कथा बनि गेल अछि। हुनकर कहब छनि जे भारतमे जखन उपन्यास आ देशक जन्म संगहि संग भेल तखन भारतीय समाजमे स्त्री रूढ़िमे जकड़ल, आदर्शमे घेरल आ यातनामे जीवन गुदस्त क' रहल छल, तैँ आरम्भिक भारतीय उपन्यासमे कतहु आदर्शक प्रतिमा आ वीरांगनाक रूपमे चित्रित भेल अछि, कतहु पतिता अछि त' कतहु पतिव्रता। कतहु-कतहु उपन्यासकारक पुरान मूल्य चेतना आ नवसुधारवादी दृष्टिक बीच द्वन्द्व सेहो स्त्रीक माध्यमसँ व्यक्त भेल अछि। ई स्थिति बंगलाक बंकिम आ शरदचन्द्र, हिन्दीक प्रेमचन्द आ गुजरातीक गोवर्धनराम त्रिपाठीक उपन्यास सभमे देखाइत अछि। कतेक उपन्यासकार भारतीय परिवारमे स्त्रीक उत्पीड़नक करुण कथा कहलनि अछि। हरि नारायण आप्टेक उपन्यासमे ई करुणा क्रान्तिकारी साबित भेल किएक त' ओहिसँ महाराष्ट्रमे स्त्री-जीवनक परिवर्त्तनक चेतना उत्पन्न भेल। आलोचक मैनेजर पाण्डेय भारतीय उपन्यासक भारतीयता[4] पर विचार करैत कहैत छथि जे उपन्यासमे नारीक प्रति गहींर सहानुभूति अछि। ओत' स्त्री समाजक भ्रामक मूल्य ओ रुढ़िकेँ तोड़ि क' विद्रोह करैत अछि। जाहि पुरुष-प्रधान समाजमे स्त्रीक अस्तित्वक रूप आ ओकर व्यक्तित्वक परिचितिक आधार पुरुषसँ ओकर सम्बन्ध हो, ओहिठाम स्त्रीक वैयक्तिक स्वतंत्रता आ ओकर निजी अनुभवक लेल उपन्यासमे केहेन आ कतेक जगह होयत तकर अनुमान सहजेँ कयल जा सकैत अछि। अधिकांश आरम्भिक उपन्यासमे स्त्री सामाजिक मूल्य, मान्यता आ आकांक्षाक केवल माध्यमे थिक।

भारतीय आरम्भिक उपन्यास सभक अध्ययनक एहि परिप्रेक्ष्यमे जखन मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास सभकेँ देखब आरम्भ करैत छी त' फेर सँ ई बात मोन पड़ि जाइत अछि जे काँचीनाथ झा 'किरण' ओ जयदेव मिश्र कहने रहथि कि भारतक आन भाषा आन्दोलनक तुलनामे मैथिली आन्दोलन सत्तरि वर्ष पाछू चलि रहल अछि। जनार्दन झा 'जनसीदन'क 'निर्दयी सासु'क धारावाहिक प्रकाशन मिथिला-मिहिरक अक्टूबर 1914सँ 28 नवम्बर 1914 धरि भेल।[5] जखन कि समसामयिक सामाजिक घटनाकेँ कथानक बनाय आधुनिक कोटिक कथा-उपन्यासक रचनाक आरम्भ जीवनाथ मिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र द्वारा रचित 'मोहिनी मोहन-उपन्यास'क 1907-08 मे प्रकाशनसँ भेल।[6] निर्दयी

सासुक मिथिला-मिहिरमे धारावाहिक प्रकाशनक बाद 1915 मे जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर' उपन्यास पोथीक रूपमे प्रकाशमे आयल। डॉ० रामदेव झा, डा० जयकान्त मिश्रक' ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' मे भेल उल्लेखक आधार पर रामेश्वर केँ बंगला उपन्यासक अनुवाद कहलनि अछि।[7] ई भ्रम बनले रहि जइतय जँ 'दी राइटर्स कोआपरेटिस सोसाइटी लि०' पटना द्वारा डॉ० बासुकी नाथ झा एकर पुस्तकाकार प्रकाशन 1977 मे नहि करितथि। ओहि पोथीमे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक रायल ऐशियाटिक सोसाइटीक जर्नलमे प्रकाशित रामेश्वर उपन्यासक समीक्षा सेहो छापल गेल अछि। ग्रियर्सन 'रामेश्वर' केँ शौर्ट नॉवेल' कहलनि अछि। डॉ० जयकान्त मिश्र सेहो साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अपन इतिहासमे ओहि अंशकेँ हटाय देलनि अछि जत' 'रामेश्वर' केँ बंगला उपन्याससँ मैथिलीमे अनुवादक रूपमे चर्च कयने छथि। डॉ० अमरेश पाठक अपन मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययनमे, जे 1975 मे प्रकाशित भेल, मैथिली उपन्यासक विकासक्रम देखबैत जे सूची प्रस्तुत केलनि अछि ओहिमे रामेश्वर नहि अछि। कोनो पोथीक सम्बन्धमे ई भ्रम पोथी नहि देखबाक कारणे होइत अछि। जँ बिना पोथी देखने-पढ़ने कोनो पोथीक सम्बन्धमे मन्तव्य देल जायत त' से भ्रमात्मक हेबे करत।

संक्षेपमे एहि बात सभकेँ एत' कहबाक प्रयोजन एतबे अछि जे जँ डॉ० मेघन प्रसाद 'मोहिनी-मोहन' केँ अपन कथा-कोशमे जगह नहि दितथि, डॉ० रमानन्द झा 'रमण' निर्दयी सासु' आ पुनर्विवाहकेँ, सुमतिकेँ, मिथिला दर्पणकेँ, डॉ० बासुकी नाथ झा 'रामेश्वरकेँ' पुनर्प्रकाशित नहि करितथि आ डॉ० रामदेव झाक सौजन्यसँ 'मनुष्यक मोलक सन्धान पत्रिकामे पुनर्प्रकाशन नहि होइतय त' आजुक लोक मैथिलीक ओहि उपन्यास सभकेँ देखबो नहि करितय। वस्तुतः आरम्भिक कालक एहन बहुतो उपन्यास अछि जे तत्कालीन पत्रिकामे प्रकाशनक कारणे वा पोथीए रूपमे प्रकाशित भैयोक' आइ अनुपलब्ध अछि। एहन उपन्यास सभमे जनसीदनजीक शशिकला, द्विरागम रहस्य, लक्ष्मीपति सिंहक चामुण्डा, हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'क माधवी-माधव, चौधरी केदारनाथ ठाकुरक सौन्दर्योपासनाक पुरस्कार, गंगापति सिंहक सुशीला, ब्रजनन्दक असहाय जाया, आदिक चर्च त' भेटैत अछि मुदा हमरा देखल-पढ़ल नहि अछि। एहि सन्दर्भमे ईहो बात मोन पाड़बाक थिक जे उपन्यासक प्रकाशन सामान्यतः एहि कारणे सम्भव भ' सकल जे मैथिलीमे पत्रिकाक उदय ओहिसँ पूर्वे भ' गेल रहय। 1905 मे मैथिल हित साधनसँ आरम्भ भेल पत्रिकाक यात्राकेँ मैथिली उपन्यासक प्रकाशन ओ विवेचनक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण मानल जयबाक चाही।

एकरे संग ईहो बात मानल जयबाक चाही जे उपन्यास ओ उपन्यासक समीक्षा, ओहि पर भेल पाठकलोकनिक प्रतिक्रियाक अध्ययन-अवलोकन आरम्भिक उपन्यासक उदय आ विकासकेँ देखबाक लेल कतेक जरूरी अछि। पाठक समुदाय आ उपन्यासक संग-संग अध्ययन आइ कतेक जरूरी मानल जाइत अछि से आलोचकलोकनि नीक जकाँ जनैत छथि मुदा मैथिलीक दुःस्थिति ई अछि जे आरम्भिक उपन्यासक समकालीन पत्र-पत्रिका आइ कतहु एकठाम उपलब्ध नहि अछि। मैथिल हित साधनसँ ल'क' आइ धरि प्रकाशित मैथिली पत्रिकाक एको-एको प्रति, फोटोओ कॉपी आइ कोनो पुस्तकालयमे ताकब त' नहि भेटत। एहनामे अध्ययन ओ आलोचनाक कठिनताकेँ नीक जकाँ बूझब ककरो लेल सम्भव थिक। तथापि एहि सभ कठिनताक अछैत जँ भारतीय उपन्यासक उदय आ विकाससँ जोड़ि क' मैथिली उपन्यासक उदय आ विकासकेँ देखैत छी त' स्थिति निश्चित रूपसँ छुछुन्न नहि लगैत अछि। अपन तमाम सीमाक संग मैथिली उपन्यास विलम्बसँ आरम्भ भइयो क' भारतक आन क्षेत्रक अपेक्षा संकटक विस्तृत ओ गहींर आयामकेँ अपन पीठ पर लादियोक' एतेक आगू अवश्य बढ़ल अछि जे एकरा नौ दिन चलि क' अढ़ाइ कोस पहुँचब नहिए टा कहल जेतैक। से एहि तथ्यसँ स्पष्ट अछि जे भारतक आन भाषा साहित्यक सामान्य प्रवृत्ति अर्थात् स्त्री जीवनमे सुधारक आकांक्षा मैथिलीयो उपन्यास सभमे अभिव्यक्त भेल अछि। तखन जे सीमा आ संकट अछि सेहो स्पष्ट अछिए। ई सीमा ओ संकट थिक सामाजिक विकासक। समाजमे आधुनिकताक प्रसार, मैथिलीमे पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन आ व्यापक जातीय (देशीय) संस्कृतिक निर्माणक कथा मैथिली उपन्यासक उदय आ विकाससँ जुड़ल रहल अछि। एहि सभक सीमा आ संकट मैथिली उपन्यासक सीमा आ संकट सेहो बनल रहल अछि। ध्यान देबाक थिक जे हम ई बात केवल मैथिलीमे उपन्यासक उदयसँ ल'क' 1948 मे प्रकाशित चतुरानन मिश्रक 'कला' उपन्यास धरिक प्रवृत्ति ओ विकासक यात्राकेँ देखैत कहि रहल छी। एहिमे हम ओहीकाल मे लिखल मुदा बादमे प्रकाशित यात्रीक 'बलचनमा'क संज्ञान सेहो लेल अछि। ओकर बादक उपन्यासक विकास देखब हमर विवेचनक परिधिमे नहि अछि। मुदा सामान्यतः सीमा आ संकट आइयो बनले अछि।

हमरालोकनि जनैत छी जे भारतीय स्वाधीनताक पहिल संघर्षक लगले बाद 1860 मे तिरहुत राज कोर्ट ऑफ वार्डस्क अधीन भ' गेल। ओहि समय महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह दू वर्षक रहथि। वस्तुतः तिरहुत राज दिल्लीक मुगल शासक द्वारा प्रदत्त रहय तैँ तिरहुतक राजा स्वाभाविक रूपसँ अपन निष्ठा मुगलिया

प्रतिनिधिक प्रति रखने रहथि आ अंग्रेजकें घुसपैठिया मानैत रहथि। स्वाधीनताक संघर्ष असफल भ' गेल आ अंग्रेज़ी राज्य मजबूतीसँ संस्थापित भेल। ई राज तिरहुतकें गहींर शंकाक दृष्टिसँ देखैत छल।[8] एहि सन्दर्भमे ईहो ध्यान रखबा योग्य तथ्य थिक जे तिरहुतक सामन्त ओ राजालोकनि ब्रिटिश शासनक तरबा चटैत रहला एवं 1857क स्वतंत्रता संग्रामकें दबेबामे ब्रिटिश सरकारकँ पूर्ण मददि देलथिन।[9] मुदा महाराज महेश्वर सिंहक आकस्मिक निधन सम्पूर्ण परिदृश्यकें बदलि देलक। कोर्ट ऑफ वार्डस्क द्वारा राजकुमारलोकनिकें उदार शिक्षा देल गेलनि। फलस्वरूप जखन महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1879 मे गद्दी पर बैसला त' ओ उत्साहपूर्वक राष्ट्रीय उदारवादी विचारकें लागू कर' लगला। एहि क्रममे ओ राष्ट्रीय एकताक दृष्टिसँ देवनागरी लिपिकें राजमे प्रवेश देलनि आ लोकप्रिय बनेबामे अपन योगदान केलनि। एहिसँ देशी तिरहुता लिपिकें मारक चोट पहुँचलैक। ओ मैथिलीक अपेक्षा हिन्दीकें अपन संरक्षण देलनि। एहिसँ मातृभाषा मैथिलीक विकास पर जरब पड़लैक। लक्ष्मीश्वर सिंहक बाद हुनकर छोट भाय महाराज रमेश्वर सिंह गद्दी पर बैसला। ओ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेससँ सामन्जस्य नहि राखि सकला आ हिन्दू एकता पर जोर दिअ' लगला।[10] देश मे हिन्दू कट्टरवादी आन्दोलन जे शक्ति जुटा रहल छल से दिल्लीमे महाराज दरभंगाक अध्यक्षतामे 1900 मे भेल सम्मेलनसँ जन्मल। महराज रमेश्वर सिंह हिन्दू सत्यधर्मावलम्बीक महापुरुषजकाँ अपन हाथमे 'वेदक प्रति ल'क' खुजल पैरे चलला।' कहल जाइत अछि जे हुनकर पाछू करीब एक लाख लोकक हजूम चलल। एही सम्मेलनमे भारत धर्म महामंडलक स्थापना कयल गेल जे तात्कालिक रूपसँ कट्टरपंथी धार्मिक गतिविधिक अखिल भारतीय केन्द्र बनि गेल।[11] वैह रमेश्वर सिंह मिथिलामे मैथिल महासभाक स्थापना कयलनि जकर माध्यमसँ समाजिक सुधारक बात सेहो कयल गेल। मधुबनीमे 1910 मे महासभाक पहिल अधिवेशनक अध्यक्षता करैत रमेश्वर सिंह जे भाषण देलनि सैह आगू चलिक' सभाक दस सूत्री कार्यक्रमक रूपमे उद्घोषित भेल। हुनके दिशा-निर्देशनमे मैथिल महासभा अपन कार्यक्रममे मैथिलक स्वत्व रक्षा आ मिथिला-मैथिल-मैथिली हित साधनकें त' स्थान देलक मुदा ओहि सभ सूत्र सँ उपर ओकर पहिल सूत्र 'राजभक्ति' कुंडली मारने बैसल रहल। मैथिल महासभाक नीति आ क्रियाकलाप जाहि तरहें आगू बढ़ल, से ने मिथिलाक राजनीति लेल उपयुक्त छल आ ने समाजनीति लेल। ई नीति मैथिलक स्वत्व रक्षाक दृष्टि ओ क्रियाकलापकें अतीतमुखी बनौलक आ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक हित साधनकें सनातनधर्मी ब्राह्मण समुदायक परिधिमे संकुचित क'

देलक। एहिठाम ई ध्यान राखब आवश्यक अछि जे मिथिलामे ब्राह्मणक हाथ मे नहि केवल धर्मक सत्ता छल, राज-शासन आ अर्थक सत्ता सेहो छल। तैं समाज पर ओकर प्रभाव जबर्दस्त रहय। दरभंगा महाराजक अतिरिक्त अनेको छोट-छोट जमीन्दार आ जेठ रैयत रहथि जे उच्च जाति समूह खास क' ब्राह्मण रहथि। ई स्थिति मुदा पुरना दरभंगा जिलाक रहय, सहरसा आ पूर्णियामे स्थिति दोसर छल। ओत' जमीन्दार महाजन तथा जेठ रैयतमे मध्य जाति समूह खासक' गोपक पर्याप्त प्रतिनिधित्व छल। ओ लोकनि आर्थिक दृष्टियें सशक्त भेला पर अपन जातीय स्तरकें सेहो उच्च जातिक समकक्ष अनबाक प्रयास क' रहल छला।[12] एत' ईहो मोन रखबाक थिक जे राज दरभंगाक द्वारा उच्च जातीय रैयतसँ बासडीहक बिठौरी/बेटबारी (एक तरहक लगान) नहि लेल जाइत छल मुदा ताहि सँ अतिरिक्त जाति वर्गक रैयतसँ असूल कयल जाइत छल। उच्च जातीय रैयत खास क' ब्राह्मणकें लगानमे बेसी माफिये छल जे सुविधा अन्य जातीय रैयतकें नहि छलनि। ई सभ विरोध आ तनावक वातावरण तैयार करबा लेल पर्याप्त छल।[13] एहि तरहें शोषणक उद्गम स्थल राज दरभंगाक शीर्ष पुरुष रमेश्वर सिंहक सभापतित्वमे मैथिल महासभा अपन धार्मिक आ जातीय कट्टरताक कारणे स्वाभाविक रूपें मिथिलाक एक जातीय (देशीय) सांस्कृतिक चेतनाक निर्माणमे असफल भ' गेल। सहरसा, मधेपूरा आ पूर्णियाक मध्यजाति समूह खासक' गोप लोकनि मैथिल महासभासँ फराक सामाजिक सुधार लेल गोप जातीय सभाक माध्यमसँ संगठित रहला। मिथिलाक सामाजिक संरचनाकें देखैत एकरा महान राजनीतिक चूक मानल जा सकैत अछि। दोसर महान चूक मिथिलाक मुसलमानलोकनिकें मैथिल जातीयतासँ फराक राखब सेहो छल। जखन कि ब्राह्मण जमीन्दार आ मुसलमान जमीन्दार अर्थात् मिथिलाक अभिजात वर्गमे सांस्कृतिक-सामाजिक स्तर पर बहुतो समानता कालक्रमे स्थापित भ' गेल रहय। हिन्दू आ मुसलमानक बीच सम्बन्ध ब्रिटिशकालसँ पहिनहिसँ रहल छल। फारसी आ उर्दू शब्दक प्रभाव मैथिली पर अछि। आचरण तकमे मुसलमानक प्रभाव ऊँच जातिक हिन्दू पर आ हिन्दूक प्रभाव मुसलमान पर पड़ल देखाइत अछि। निम्न जाति-वर्गक हिन्दू-मुसलमानक सांस्कृतिक सम्मिलन मिथिलाक परिप्रेक्ष्य मे फराकसँ रेखांकित कर' बला तथ्य थिक।

जें कि मिथिला-मैथिल आ मैथिली चेतनासँ प्रेरित भ' मैथिली साहित्यक निर्माणमे आगू आब' बला साहित्यकार ब्राह्मण आ कर्ण-कायस्थ अर्थात् अभिजात वर्गसँ रहथि तैं हुनका पर मैथिल महासभाक नीति आ कार्यक्रमक प्रभाव पड़ब स्वाभाविक रहय। एही कारणें आरम्भिक उपन्यास सभमे

महासभाक सूत्र सभक अनुगूंज सुनाइ दैत अछि। सामाजिक सुधारक रूपमे विवाह सम्बन्धी नाना कुरीति यथा– बहु विवाह, अयोग्य विवाह, अनमेल विवाह इत्यादि केँ शास्त्र ओ लोक मर्यादाक विरुद्ध मानि क' ओहिमे सुधारक आकांक्षा केँ अभिव्यक्ति भेटल। मुदा जँ-जँ आन देश, प्रान्त, क्षेत्र, भाषा-साहित्यमे आयल आधुनिक चेतनाक प्रभाव मैथिली समाज पर पड़ब प्रारम्भ भेल तँ-तँ मैथिली साहित्यमे, समाजमे पसरल जड़ता, आडम्बर, छद्म, चरित्रहीनता आदि पर प्रहार तीक्ख होइत गेल। मैथिल महासभाक नीति आ क्रियाकलाप पर सेहो जमिक' प्रहार हुअ' लागल। एहि सभ तथ्यकेँ तत्कालीन मैथिली पत्रिका मिथिला मोद, विभूति आ मिथिलाक बहुतो अंक सभमे देखल-पढ़ल जा सकैत अछि। मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे एहि बातक अनुगूंज सेहो मौजूद अछि जे मैथिल महासभा कोना कालक्रममे निरर्थक होइत चल गेल। ओहि संस्थामे राजभक्त लोकनिक एक एहन जमाति छल जे केवल राजाक मुहतक्कीमे रहैत छल। व्यापक जन-समुदायक आशा-आकांक्षा, ओकर सामाजिक-सांस्कृतिक विकाससँ ओकरा कोनो मतलब नहि छलैक। उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क उपन्यास 'कुमार'[14]क नायक विमल कहैत अछि, 'मैथिल महासभा एक बेर गेल छलहुँ। ओतए एक कॉलेजक विद्यार्थी कोनो प्रस्ताव पर बाजए लागल, एक गोटा उठि क'–बैसि जाउ, बैसि जाउ, ततेक ने कहलकैक जे बेचाराकेँ बैसहि पड़लैक। हमरा त' ताही दिनसँ महासभासँ घृणा अछि। ओ की करैछ, ई की भगवान जनैत छथिन्ह आ कि ओकर कार्यकर्त्तालोकनि।'

आधुनिकताक प्रसारमे नगर, महानगरक उपस्थिति, औद्योगिक प्रगति आ छापाखानाक सुविधा होयब महत्त्वपूर्ण होइत अछि। मिथिलामे महानगर तहियाक कोना कथा, आइयो नहि अछि। नगरक सेहो अभाव रहल। परम्परागत उद्योग-धन्धा उपनिवेशी सरकार द्वारा नष्ट क' देल गेल छल आ नब-नब उद्योग शुरू नहि भेल। जेहो किछु उद्योग जेना जूट, चीनी आदिक शुरू भेल, से ने व्यापक समुदायकेँ रोजगार देलक आ ने क्षेत्रक विकास कयलक। आइयो सीमित क्षेत्रमे जे किछु उद्योग अछि से घरेलू स्तर पर काज करैत अछि। पैघ उद्योग विभिन्न कारणे रुग्ण भ' चुकल अछि। वांछित संरचना आ पूंजी-सहयोगक अभावमे औद्योगिक विकास एक स्वप्ने बनल अछि।

1915 मे लिखल रास बिहारी लाल दासक पोथी 'मिथिला दर्पण'क अनुसार दरभंगामे छह टा प्रेस (छापाखाना) रहय– (1) यूनियन प्रेस कटहलबाड़ी (2) दरभंगा राज प्रेस, कैदराबाद (3) मिथिला मिहिर प्रेस, नई

बाजार (4) रमेश्वर प्रेस कन्हैया लाल, बड़ा बाजार (5) चित्रगुप्त प्रेस, मिरजापुर तथा (6) मैथिल प्रेस, मधुबनी। ओ कहैत छथि जे ई खेदक विषय थिक जे एतेक छापाखानाक अछैत एकटा साप्ताहिक समाचार पत्र मिथिला मिहिर प्रकाशित भ' रहल अछि। मिथिला मिहिर सेहो हिन्दी आ मैथिली दू भाषामे प्रकाशित होइत छल। दरभंगा राज मैथिली भाषाक विकासमे वांछित सहयोग-संरक्षण नहि देलक। लक्ष्मीश्वर सिंह हिन्दी आ रमेश्वर सिंह संस्कृतक विकासकेँ प्रोत्साहित कयलनि। आलोचक कुलानन्द मिश्र[15] कहैत छथि जे, दरभंगा राजवंशक छत्रछायामे मैथिलीक गरजैत विकास सम्भव रहैक मुदा से आश्रय एहि भाषाकेँ कहियो स्नेहसँ उपलब्ध नहि भेलैक। मिथिला-मिहिरक हिन्दी आ मैथिलीमे एक संग प्रकाशन आ राजकाजक भाषाक रूपमे हिन्दीक प्रयोग एहि राजवंशक भाषा-प्रेमक कथा कहैछ। संस्कृतक टकसाली दबदबासँ सामान्य-जन-मानसकेँ दाबने रहब एहि राजवंशकेँ प्रायः नीतिपरक लगलैक। जनताकेँ अपन भाषाक सुविधा उपलब्ध करयबासँ ई समर्थ संस्थान त्रस्त लगैछ। तैं मैथिली गद्यक विकासक चर्च करैत काल मैथिली शासन-पीठक भूमिका करुण प्रतीत होइछ।'

मैथिल महासभाक रीति-नीतिक समानान्तर मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास समाजमे व्याप्त अतीतमुखी मानसिकताक गछाड़सँ निकलि आधुनिक चेतनासँ अपनाकेँ सम्पृक्त क' सकल त' से समाजमे होइत परिवर्त्तनक द्योतक रहय। मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे यात्रीक पारोकेँ स्त्रीक वैयक्तिक स्वतंत्रताक दृष्टिसँ देखल जा सकैत अछि त' जनार्दन झा 'जनसीदन'क निर्दयी सासुकेँ पुरान मूल्य-चेतना आ नवसुधारवादी दृष्टिक बीच सासु-पुतहुक द्वन्द्वक रूपमे। पारो मोनसँ स्वाधीन अछि। यैह स्वाधीन मोन ओकरा मनुक्ख बनबैत छैक। एकटा व्यक्तित्व प्रदान करैत छैक। मैथिल ललनाक एहन स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व एहिसँ पूर्व मैथिली उपन्यासमे नहि आयल छल।[16]

बन्धनसँ मुक्तिक अकुण्ठ आकांक्षा पारोमे भरि गेल रहैक। तेँ ओ आत्महत्या नहि करैत अछि। पारोक मनोरथ मुदा तत्कालीन मैथिली पाठककेँ जतबा संवेदित करैत अछि ताहिसँ बेसी पाठकक मूल्य-चेतनाकेँ उद्वेलित करैत अछि। तैं पारोकेँ स्त्रीक स्वाधीन चेतनाक लेल नहि, उच्छृंखल आचार-विचार लेल जानल गेल। समाजक कपार फोड़बाक लेल मोन पाड़ल गेल। फूटल कपारक बिसबिसी आइयो कतबा कम भेल अछि से विचारक बिन्दु भ' सकैत अछि।

स्त्री मुदा 'पत्नीक' रूपमे मैथिली उपन्यासक चिन्ताक विषय शुरूऐसँ रहल अछि। ओ कोना पत्नी बनय, केहेन वरसँ ओकर बियाह नीक रहतै, पत्नी कोना शिक्षित हो, पतिक अनुकूल हो, ओकर मति परिवारक सुख-समृद्धि दिस उन्मुख हो, ओ परिवारक रीढ़ बनय, ओकरा पतिक रूपमे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल पुरुष भेटैक, ओकर दुःस्थितिक प्रति समाजमे करुणा उत्पन्न होइ से मनोरथ मैथिली कथा-उपन्यासमे आदिए कालसँ व्यक्त होइत रहल अछि। तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे एहि विषय पर आयल निबन्ध सभकेँ सेहो एहि तथ्यकेँ जनबाक लेल देखल जा सकैत अछि। ई मनोरथ ब्राह्मण समाजमे व्याप्त कुरीतिक आलोचना दिस मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासकारकेँ उन्मुख कयलक। सामाजिक कुरीति सभमे बिकौआ प्रथा, अनमेल विवाह, बाल-विवाह, पुनर्विवाह, पुरुषक वर्चस्वपूर्ण समाजमे स्त्रीक हीनताबोध, पंजीव्यवस्था आदिक आलोचना मैथिली उपन्यासक कथा बनल। एहि सभ बातक पुनर्मूल्यांकन आ पुनर्पाठक प्रयोजन आइ उपस्थित भ' गेल अछि। बहुतो गोटाकेँ लगैत अछि जे ओ समाज आब कहाँ अछि जे आरम्भिक उपन्यास सभमे चित्रित भेल, ओ समाज त' आब बदलि गेल मुदा से सोचब हमरा जनैत यथार्थवादी दृष्टिक परिचायक नहि थिक। वस्तुतः समाज जतेक उपरसँ बदलल लगैत अछि ततेक भीतरसँ बदलल अछि नहि।

एहि सन्दर्भमे ई ध्यान देबाक थिक जे 'स्त्री' पत्नीएक रूपमे, बहुएक रूपमे, माउग-मेहर, जनी-जातिए रूपमे, बहीनि-बेटिएक रूपमे एखन धरि समाज ओ समाजक भाषा-साहित्यमे अंगीकृत अछि। मात्र स्त्रीक रूपमे ओकरा स्वीकृति नहि भेटलैक अछि। स्त्रीक स्वतंत्र व्यक्तित्व नहि बनबाक, स्वतंत्र व्यक्तित्वक मोजर नहि देबाक, बिना कोनो सम्बन्धक स्त्री-पुरुषक मादे सोचिए नहि पयबाक ई सीमा समाज आ भाषाक दुखदायी सीमा थिक। स्त्रीक स्वाधीनताकेँ अभारतीय चिन्तन मानबाक परम्परा एखनो मैथिली समाजमे समाप्त नहि भेल अछि। मैथिल ललना भने आइ हाथी चढ़ि क' गौर नहि पूजैत होथि मुदा एहन परम्परापूजक पुरुषलोकनि अवश्य हाथी पर चढ़ि क' मैथिली साहित्यकेँ रौंदि रहल छथि। एहि सीमाकेँ लाँघब जेना मैथिल स्त्रीक लेल चुनौती बनल अछि तहिना मैथिलीक उपन्यासकारक लेल सेहो। एहि चुनौतीकेँ अहू कारणे स्वीकार कयल जयबाक चाही जे भारतमे जखन उपन्यास आ देशक जन्म संगहि-संगहि भेल तखन किरण विन्दु स्त्रीक स्वाधीनते छल। ध्यान देबाक थिक जे मैथिली कथा ओ उपन्यास विवाहक प्रस्ताव वा तत्सम्बन्धी गप-सपक सीमाकेँ लाँघिक' जीवनक दोसरो क्षेत्रमे हस्तक्षेप कयलक अछि। स्त्री सेहो

समाजमे माउग-मेहरक लक्ष्मण-रेखा टपिक' अपन स्वतंत्र व्यक्तित्वक निर्माण क' रहल अछि मुदा आइयो धरि भाषा-साहित्यमे विवाह आ पत्नीक घेराकेँ तोड़ि पायब कठिन बनले अछि। तकर कारणो छैक। मैथिलीमे कथा ओ उपन्यासक अर्थक व्याप्ति अथवा संकोचकेँ देखबाक लेल आलोचक रामदेव झाक मैथिली आद्यकथा[17] नामक निबन्ध अथवा पं० गोविन्द झाक कल्याणी कोश (शब्द कोश) केँ एक बेर देखि लेब रोचक भ' सकैत अछि। तहिना स्त्रीकेँ सेहो समाजेमे नहि, मैथिली शब्द कोशमे देखब रोचक होयत। कल्याणी कोशमे कथाकेँ कथन, खीसा, उपाख्यान, गल्प, दुर्वचन, अपशब्द, विवाहक प्रस्ताव वा तत्सम्बन्धी गप-सप, सुझाओ, उपदेश, आज्ञा कहल गेल अछि त' स्त्रीकेँ नारी, मादा, पत्नी कहल गेल अछि। स्त्रीक प्रयोग रहरहाँ पत्नीक अर्थमे कयल जाइत अछि। उपन्यासक अर्थ वैवाहिक कथाक प्रस्ताव तथा गद्यमे लिखल दीर्घ कथा कहल गेल अछि।

स्त्रीक स्वाधीनताक संघर्ष आ मैथिली उपन्यासमे ओकर अभिव्यक्तिक मनोरथ मैथिली समाजक विकाससँ जुड़ल अछि। जेना-जेना समाज विकास लेल संघर्ष करैत अछि तेना-तेना उपन्यास सेहो। जेना स्त्री विकासशील अछि तहिना मैथिली उपन्यास सेहो। दुनूक आत्मसंघर्षक छवि-चित्र पारोक बादक उपन्यासमे केहेन आयल अछि से तकबाक बेगरता अनुभव कयल जा सकैत अछि। ओकर विकास बादक उपन्यासमे कोना भेल ताहि तथ्यक अन्वेषण कयल जयबाक चाही। मुदा एहिक्रममे ई ध्यानमे रखबाक होयत जे विद्यापति पुरुष परीक्षामे राजाक बेटी लेल विवाह हेतु पुरुषकेँ तकबाक लेल कहैत छथि। हुनकर सम्पूर्ण पोथी विभिन्न पुरुषक गुण-अवगुणक खिस्सा प्रस्तुत करैत अनुकूल वर (Suitable Boy) केँ तकबाक दृष्टि दैत अछि।मुदा कालान्तरमे अनुकूल वरक बदलामे जातिक नाम पर वृद्ध, धुत्थुर बूढ़ सभकेँ किशोरी कन्या सभक लेल उठाक' आनल जाय लागल। दोसर दिस एक संग एकटा नहि, बीस-तीस-पचासटा कन्याकेँ छागर पाठी जकाँ खुटेसल जाय लागल। जातिमे श्रेष्ठ पुरुष भरि जीवन विभिन्न कन्यासँ वियाहे क' अपन जीवनक निर्वाह कर' लगला। कन्याक बाप अपन कन्या लेल पुरुषकेँ तकबाक बेगरता छोड़ि देलक। 'कन्यादानी' कन्या राखब सामाजिक प्रतिष्ठाक प्रतीक बनि गेल। पतितपनाकेँ भव्यता देबाक, प्रतिष्ठा देबाक ई एक अदभुत् आ विरल उदाहरण थिक। एहेन बहुविवाह बिहारमे मिथिला धरि सीमित छल। बंगालसँ भिन्न बहुविवाह मिथिलामे वंश पर आधारित रहय नहि कि धन पर। ई हरिसिंहदेवक पंजी व्यवस्थासँ उपजल छल आ एकरा बिकौआ प्रथा कहल जाइत छल। वस्तुतः स्त्री

आ शुद्रकेँ सम्पत्ति बुझबाक मानसिकता सामाजिक परम्पराक एक अभिन्न अंग थिक। तैं आन वस्तुक संग कन्यादानो। कन्यादान कयला पर स्वर्ग प्राप्ति होइत छैक आ नीक, जातिए ऊँच ब्राह्मणकेँ कन्यादान कयलासँ त' स्वर्ग एकदम पक्का भ' सकैत अछि। वर्ण व्यवस्था आ पंजी व्यवस्थाक ई परम्परा आइयो मैथिली समाजमे विद्यमान अछि। आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि, 'कुमारि कन्या जेँ पिताक सम्पत्ति होइत अछि तेँ ओ ओकर दान करैत छथि। दानक द्वारा सम्पत्तिक हस्तान्तरण होइत अछि। दान एकटा एहन पुरुषकेँ कयल जाइत अछि जे ओहि कन्यासँ विवाह करबाक लेल इच्छुक होथि। तेँ दान ग्रहण कर' बला पुरुष बादमे ओहि कन्यासँ विवाह करैत अछि। दान, खाहे ओ कोनो वस्तुक हो, एकटा पावन धार्मिक कृत्य थिक, तेँ ओहिमे शुचिता चाही। यैह कारण थिक जे कन्याक दान कर' वला आ दान लेब' वलाकेँ कतौ-कतौ केसो कटाब' पड़ैत छैक। आब ई परिपाटी समाप्त भेल जा रहल अछि मुदा विवाहसँ पूर्व कन्याक दान करबाक अनिवार्यता एखनहुँ अक्षुण्ण अछि।[18] परम्परा पर आधारित एहि मानसिकताकेँ हरिमोहन झाक कन्यादानमे नीक जकाँ देखल जा सकैत अछि। स्त्रीक अधीन, रक्षणीय होयबाक व्यवस्था, दासी बुझबाक भावना आ अन्ततः सम्पत्ति मानबाक मानसिकताकेँ कन्यादान उपन्यासक पुरुष लोकनिक सोच-प्रक्रियासँ बूझल जा सकैत अछि। बुच्चीदाइ पारम्परिक रूपसँ सम्पत्ति आ आधुनिक रूपसँ वस्तु मानल जाइत देखाइ दैत छथि। मुदा बुच्चीदाइ सी.सी. मिश्रक अनुकूल नहि छथि। ओना ई त' आधुनिके कालमे भेल अछि जे पतिक अनुकूल कन्याक खोज कयल जा रहल अछि मुदा ताहूमे कन्या आ वरक मिलानकेँ ध्यानमे नहि राखल जाइत अछि। हरिमोहन झा अपन उपन्यासक माध्यमसँ ई कामना व्यक्त करैत छथि जे शारीरिक ओ मानसिक स्तर पर समान स्थितिक युवक-युवती यदि स्वेच्छापूर्वक विवाह करैत अछि तँ सैह आदर्श विवाह थिक। मुदा, हरिमोहन झा जनैत छला जे मैथिल-समाज एहि आदर्श विवाह-पद्धतिकेँ अपनयबाक हनुमान कूद लगेबाक स्थितिमे नहि अछि। तेँ ओ यथार्थवादी रचनाकारक रूपमे वर्त्तमान विवाह-प्रथामे मात्र संशोधनक अनुशंसा करैत छथि।[19] मुदा आब स्थिति बदलल अछि। मैथिली समाज एतेक विकास कयलक अछि जे आन जातिक कोन कथा ब्राह्मणो समाजमे रहरहां युवक-युवती अपन पसिन्नसँ स्वेच्छापूर्वक विवाह क' रहल छथि।

समाजमे स्त्रीक आत्मसंघर्ष अथवा स्वाधीनताक संघर्ष जतेक आगू बढ़ल अछि तकर अभिव्यक्ति मैथिली उपन्यासमे केहेन भेल अछि से विचारणीय थिक। एहि बातकेँ मानबामे कोनो असौकर्य नहि हेबाक चाही जे ई समस्या

वस्तुतः उपन्यासकार लोकनिक समाज चेतनासँ जुड़ल समस्या थिक। समाज आ भाषा-साहित्यक एहि संकोचक सीमाकेँ तोड़ि यथार्थवादी उपन्यासक लेखन आइ मैथिली समाज ओ साहित्यकेँ अखिल भारतीय मान्यता प्राप्त करेबाक चुनौतीक रूपमे ठाढ़ अछि। से एहू कारणे जे आइ मैथिलीक संवैधानिक मान्यता ओकरा राष्ट्रीय भाषा-समाजमे समधर्माक स्थान द' देलक अछि। तेँ आइ साहित्य-संसार मे चेतन कहयबा लेल सामाजिक स्तर पर चेतना सम्पन्न होयब जरूरी अछि। ततबे नहि, साहित्य आइ समाज-अध्ययनक अनिवार्य विषय मानल जाय लागल अछि। से नहि केवल विचारधाराक रूपमे अपितु भावधाराक रूपमे सेहो। जेँ कि साहित्य अपन कारबार संवेदनाक भूमि पर करैत अछि तैं साहित्यक अध्ययन संवेदना ओ ओहिसँ अनुस्यूत विचारक आधार पर करब आवश्यक अछि।

मैथिली उपन्यासक उदय आ विकासकेँ देखबाक लेल सामाजिक इतिहासक अध्ययन आलोचनात्मक दृष्टियेँ करब समीचीन होयत। समाजशास्त्री हेतुकर झाक मान्यता अछि जे मिथिलाक समाज पंजीव्यवस्थाक बाद ह्रासोन्मुख भ' गेल।[20] हुनकर कहब छनि जे पंजी व्यवस्था चौदहम शताब्दी मे भेल। तकर किछु शताब्दीक बाद मैथिल ब्राह्मणमे जातीय वर्गीकरण जड़ि पकड़ि लेलक। एहिसँ पूर्व समस्त मैथिल ब्राह्मणक एकटा समाज छल। परिचयक आधार मात्र गोत्र छल। आब ओ चारि खण्ड मे बँटि गेल। किछु शताब्दीक बाद श्रोत्रियो सभहक विभिन्न श्रेणी भ' गेल। ब्राह्मण समाजक भीतर प्रत्येक वर्गक अपन रीति-रेवाज बनल, प्रत्येक श्रेणीक अपन-अपन मान्यताक निर्माण भेल। मानमर्यादाक कसौटीओ फराक-फराक बनय लागल। प्राचीनकालसँ मिथिलाक उत्कर्षक आधार छल विद्या ओ व्यक्तित्व। जनक, गौतम, याज्ञवल्क्य ओ वाद मे उदयन, अद्योतकर, गंगेश, वाचस्पति इत्यादि विद्या ओ व्यक्तित्वेक आधार पर संसारमे पूजित रहला अछि। मुदा सोलहम-सत्रहम शताब्दीसँ, जखन जाति-लौकित-श्रेणीक वर्चस्व भेल, विद्याक ओहेन मूल्य नहि रहल जेहेन पहिने छल। पंजी विद्याक मूल्य घटबाक अनुपम साक्षी अछि। मैथिली उपन्यासक उदयकालमे अर्थात् बीसम शताब्दीक दोसर दशकमे समाजक मानसिकता मुदा बदलय लागल छल। पंजी व्यवस्थाक गधकिच्चनि, परदेशक सम्पर्क ओ तत्कालीन परिस्थितिक संग अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक कारणे क्रमशः व्यक्तिगुण तत्व, जाति-वंश-तत्वक स्थान पुनः लिअ लागल रहय। वरेक गुण-तत्व दिस ध्यान नहि गेल रहय कन्याक गुणक विचार सेहो हुअ लागल छल। जनार्दन झा 'जनसीदन'क उपन्यास निर्दयी सासुमे पंजी व्यवस्थाकेँ लाभप्रद नहि मानि

घटकसँ कहबाओल गेल अछि, 'हरिसिंहदेवी कतय लेने फिरैत छी, कन्या जाहिसँ सुखमे रहय से कर्तव्य थिक।' उपन्यासमे ज्योतिषी चिन्तामणि झा अपन कन्या शारदाकेँ एतेक अवश्य पढ़ा दैत छथि जे ओ मिथिलाक्षर ओ देवाक्षर लिखि पढ़ि सकैत अछि। किताबक सन्देश अशिक्षिता धरि पहुँचा सकैत अछि। उपन्यासमे ज्योतिषीक स्त्री कहैत छथि, 'जेहने हमर कन्या अछि तेहने बर चाही। हम जमाय सुन्दर ओ धनिक चाहै छी। तेहेन जौं नहि आनब तँ हम बेटीक बियाह नहि करब।' स्त्रीक इच्छानुसार ज्योतिषी हरिसिंहदेवीक परबाहि नहि करैत सुन्दर, सोलह वर्षक आ अंग्रेजी पढ़ैत बर अनलनि। ओ पंजीबद्ध नहि रहथि। उपन्यास मे ई तथ्य आयल अछि जे पुरान विचारक लोक सभ 'समय देखि जी मसोसि रहि गेलाह।' निर्दयी सासु उपन्यास 1914मे लिखल गेल छल। 1917 मे योगानन्द कुमर द्वारा तैयार कयल गेल मैथिल ब्राह्मण डाइरेक्टरीसँ पता चलैत अछि जे प्रवासी एवं मिथिलामे बसनिहार सभ मिलाकय एम.ए. मात्र 6 व्यक्ति छला। बी.ए. मात्र 39 व्यक्ति, इन्टरमीडिएट मात्र 41 व्यक्ति ओ मैट्रीकुलेट 192 व्यक्ति।[21] मुदा ताहि काल धरि स्त्रीक आधुनिक शिक्षाक जड़ि मजबूत नहि भेल छल। 1914 मे सरकार स्त्री शिक्षाक सभ प्रश्न पर विचारक लेल एकटा कमिटी बनौलक तथा कमिटीक अनुशंसाक आधार पर स्त्री शिक्षाकेँ विस्तार ओ प्रोत्साहन देल गेल। स्वाभाविक रूप सँ 'निर्दयी सासुक' काल धरि पुरुष त' विद्यालय ओ महाविद्यालयमे अंग्रेजी पढ़' लागल रहथि मुदा स्त्री पारम्परिके ढंगसँ पिता वा भाइ अथवा पतिक द्वारा पढ़ौल जाइत रहथि। ई शिक्षा व्यवस्था मनुक ओहि विचार पर आधारित छल जाहिमे स्त्री बालिका रहओ वा युवती अथवा वृद्धा अपन घरोमे स्वतंत्र रूपसँ किछु नहि क' सकैत छल। एहिठाम ई ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे स्त्रीक स्कूली शिक्षाक विकास देशक अन्य भागक अपेक्षा बहुत बादमे बीसम शताब्दीक तेसर-चारिम दशक सँ भ' सकल। ओहिसँ पूर्व जे छिटफुट प्रयास भेल से बंगाली ओ क्रिश्चियन लोकनिक द्वारा भेल। 1929-30 मे हरटोंग कमिटीक अनुशंसा आधार पर प्रसार ओ विस्तारक हरेक योजनामे स्त्री शिक्षाकेँ प्राथमिकता देल गेल। ई वैह काल थिक जखन हरिमोहन झा 'कन्यादान' लिखि रहल छला। मुदा देशक अन्य भागमे स्त्रीक अंग्रेजी शिक्षा दिस ध्यान 1860क बाद देल जाय लागल छल। मुदा लोकक धारणा ई बनले छल जे स्त्रीगणकेँ अशिक्षित तथा स्कूलसँ दूर राखल जेबाक चाही। बंगालक किछु भाग मे त' ई मानल जाइत रहय जे यदि स्त्रीगण शिक्षा ग्रहण क' लैत छथि त' जल्दीए विधवा भ' जाइत छथि। 1882क अवधि मे औसतन भारत मे 800 स्त्रीमे सँ केवल एक स्त्रीकेँ शिक्षा भेटि सकैत छलनि।[22]

1890 मे आयल मलयालम उपन्यास इन्दुलेखाक अन्तमे उपन्यासकार चन्दु मेनन लिखने छथि जे 'भारतक स्त्रीलोकनिकेँ ई बूझि लेबाक चाही कि यदि ओ अज्ञानी तथा अपढ़ रहतीह त' पुरुष नहि केवल हुनकासँ घृणा करता बल्कि अपन व्यवहारमे ओकरा व्यक्तो करता।' ओहि समयक हालात के देखैत स्त्रीलोकनिक शिक्षाक समर्थन कर' बला चन्दु मेननकेँ सेहो एक क्रान्तिकारिए कहल जायत।[23] इन्दुलेखा मलयालमक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास मानल जाइत अछि। स्त्री शिक्षाक समर्थन ओ लोकप्रियताक दृष्टिसँ हरिमोहन झाक 'कन्यादान' चन्दु मेननक इन्दुलेखासँ साम्य राखि सकैत अछि।

आलोचक मीनाक्षी मुखर्जी लिखने छथि जे आरम्भिक भारतीय उपन्यास मे तीन मुख्य रचनात्मक प्रवृत्ति भेटैत अछि। पहिल प्रवृत्ति समाज-सुधार आ उपदेशक अछि। दोसर प्रवृत्तिमे इतिहास आ फैंटेसीक माध्यमसँ एक नैतिक चेतनाक विकासक प्रयास अछि। तेसर प्रवृत्ति समकालीन भारतीय समाजक वास्तविकताक यथार्थपरक चित्रणमे भेटैत अछि। आलोचक मैनेजर पाण्डेय कहैत छथि जे हिन्दीक 'परीक्षा गुरु' सन उपन्यासमे पहिल प्रवृत्ति अछि। दोसर प्रवृत्तिक एक पक्षक महत्वपूर्ण उपन्यासकार बंगलाक बंकिमचन्द छथि त' दोसर पक्ष देवकीनन्दन खत्रीक उपन्यासमे भेटैत अछि। बंकिमक उपन्यासमे इतिहास आ मिथकक रचनात्मक उपयोग अछि त' देवकीनन्दन खत्रीक उपन्यासमे फैंटेसीक प्रयोग। भारतीय उपन्यासक इतिहासमे तेसर प्रवृत्तिक पहिल उपन्यासकार फकीरमोहन सेनापति छथि। आगू जा क' यैह प्रवृत्ति अधिक उन्नत रूपमे प्रेमचन्दक उपन्यास सभमे भेटैत अछि। एहि तरहेँ भारतीय उपन्यास राष्ट्रीय चेतनाक निर्माणक माध्यम बनल। ओ कखनो राष्ट्रीय जागरणक अनुगामी छल त' कखनो राष्ट्रीय जागरणक अग्रदूत।

मीनाक्षी मुखर्जीक कथनक आधार पर जँ मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक रचनात्मक प्रवृत्ति सभक आकलन कयल जाय त' अधिकांश उपन्यासमे समाज-सुधार आ उपदेशक प्रवृत्ति भेटैत अछि। जनार्दन झा जनसीनक निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, जीवछ मिश्रक रामेश्वर, रास बिहारी लाल दासक सुमति, गंगानन्द सिंह मनुष्यक मोल, पुण्यानन्द झाक मिथिला दर्पणकेँ एहि कोटिमे राखल जा सकैत अछि। समकालीन समाजक वास्तविकताक यथार्थपरक चित्रण कांचीनाथ झा 'किरण'क चन्द्रग्रहण, हरिमोहन झाक कन्यादान-द्विरागमन, योगानन्द झाक भलमानुष, उपेन्द्र नाथ झा 'व्यासक कुमार, यात्रीक पारो तथा बलचनमा एवं चतुरानन मिश्रक कलामे भेटैत अछि। इतिहास आ मिथकक

उपयोग क' सामाजिक चेतनाक विकासक प्रयास मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे नहि भेटैत अछि।

एहि क्रममे ई महत्वपूर्ण बात थिक जे पूर्वांचलमे सुधार-युगक सूत्रपात केनिहर विद्यापतिकेँ मानल जाइत अछि। पूर्वांचलमे जे नवजागरणक साहित्यक प्रसार भेल ओकर अग्रदूत विद्यापति रहथि। भारतीय साहित्यक भूमिका नामक अपन पोथीमे आलोचक रामविलास शर्माक कहब छनि जे, जेना एंगेल्स दाँतेकेँ मध्यकालक अंतिम आ आधुनिककालक प्रथम कवि कहलनि तहिना एक हद धरि विद्यापतियोक लेल ई बात कहल जा सकैत अछि। हुनकर ईहो कहब छनि जे जतेक मध्यकालीनता दाँतेक संग अछि तकर शतांशो विद्यापतिक संग नहि। विद्यापतिकेँ ओ दाँते सँ आगूक मानैत छथि। विद्यापति पर लिखल अपन विनिबन्धमे आलोचक रमानाथ झा सेहो विद्यापतिकेँ प्रगतिशील दृष्टिकोणक लोक मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे हुनक समयकेँ देखैत हुनकर दृष्टिकोणकेँ हम सभ आधुनिकप्राय कहि सकैत छी। ओ स्त्री-शिक्षाक दृढ़ प्रवक्ता रहथि। मुदा रमानाथ झा खेदक संग ईहो कहैत छथि जे विद्यापतिक बाद मिथिलाक सांस्कृतिक अध:पतन होइत गेल। परिणाम भेल जे व्यक्तिक रूपमे विद्यापतिकेँ आ हुनका द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तकेँ बिसरि देल गेल आ ओ एक पुराण कथा, एकटा उपाख्यान मात्र बनि क' रहि गेला।

आधुनिक कालमे मुदा विद्यापतिक भाषा-विवादसँ उपजल मैथिली जागरण स्त्रीक दु:स्थिति संग सामाजिक कुरीति सभकेँ मिथिलाक अध:पतनसँ जोड़लक। कविता हो, नाटक हो, लेख-निबन्ध हो, कथा-उपन्यास हो मिथिला आ मैथिल चेतना समाजक भीतर जा क' ओहि कारण सभकेँ तकबाक कोशिश केलक जे मिथिलाकेँ शिथिला बनेबाक लेल उत्तरदायी छल। मुंशी रघुनन्दन दास अपन मिथिला नाटक (1923) मे मिथिलाकेँ एक स्त्रीक रूपमे प्रस्तुत केलनि जे अपन संतान सभक कारणे अदिनताक शोकमे डूबि गेल अछि,

हाय! कहब ककरा दुख जाए ।
कीदहुँ छलहुँ भेलहुँ अछि कीदहुँ, वितइछ दिन पछताए ।।
सुपुत सुयश धन सौं परिपूरित, जग निज नाम-धराए ।
विधिवश ताहि क्षीण भै रहलहुँ, सब किछु गेल नशाए ।।
धर्मधुरन्दर वीर तनय जत, सबहुँ गेला तजि हाय ।
जे छथि से किछु नीति सुनथि नहि, सूतल छथि अलसाए ।।
थिकहुँ हमहि जग के नहि जानै, आदि प्रकृतिहुक माए ।
करुणा-सिन्धु उदार दयानिधि जनिका राम जमाए ।।

आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि[25] जे मैथिल कविकेँ देशक नाम पर बेसीकाल मिथिले मोन पड़ैत छलनि। यात्रीक पूर्वज कवि सीताराम झा सेहो एकर अपवाद नहि छला, मुदा ओ अखिल भारतीय स्तर पर आयल जागरणक मैथिल सार्थवाह सेहो रहथि। हुनका जन्मभूमिक विकासक संग सम्पूर्ण देशक उन्नतिक कल्पना करब अधिक स्वाभाविक लगलनि।' जेना मैथिल स्त्रीमे स्वाधीनताक विचारक जन्म यात्रीक पारो उपन्याससँ भेल तहिना सीताराम झा अपन पूर्वज विद्यापतिक स्मृतिमे कविता लिखैत नारीकेँ समाजक नेतृत्व करबाक लेल कहैत छथि। पुरुषकेँ रस्ता देखाबक लेल कहैत छथि। ओ कहैत छथि जे जाबत धरि बुद्धिजीवी दोसरक बात पर आँखि मूनि विश्वास करैत रहत तावत् धरि निर्दोषो रोज दण्डित होइत रहत,

कालक बश कन्याक प्रति बापक अत्याचार
लखि विद्यापति कयल निज हित उपदेश प्रचार
हित उपदेश प्रचार उमाक विवाहक छलसँ
दुरित हँटाबक हेतु कयल निज जातिक दलसँ
थिक जननिक अधिकार सकल कन्या प्रतिपालक
देल सबहि के ज्ञान, गीत रचि परिछनि-कालक
गौलनि गाइनि संग मीलि अपनहु घर-घर जाय
सिखलनि सभ 'हम नहि करब बूढ़ वलेल जमाय'
'बूढ़ बलेल जमाय करी नहि' सभ जन जनितहुँ
करथि अमेल-विवाह देखि कनियाँके कनितहुँ
की करती? कनियाँक माय अमरूख पति पौलनि
नहि सुधरल छथि पुरुष-यदपि विद्यापति गौलनि
पण्डित ज्ञानी बहुत छथि बनल कूप-मण्डूक
नारि सुधारथु सबहिकेँ लेथु हाथमे ऊक
लेथु हाथमे ऊक पुरुषकेँ पथ दरसाबथु
अपने पढ़थु पुराण शास्त्र आ अर्थ लगाबथु
नहि त' होइत रहत अदण्डयो जन नित दण्डित
पर विश्वासी रहत देशमे जा धरि पण्डित।।

साहित्यमे जागरणक रूपरेखा रेखांकित करबाक लेल जरूरी अछि जे मिथिलामे सामाजिक चेतनाक विकासक अध्ययन कयल जाय। ओहि चेतनाक परम्पराक खोज कयल जाय जे मैथिली समाजमे सामूहिक हितक दृष्टिसँ काज

करबाक आ साहित्यकेँ समृद्ध करबाक परम्परा थिक। ई काज केवल ओहि विद्वानलोकनिक द्वारा सम्भव नहि अछि जे अभिलेखीय शोध करैत छथि आ आँकड़ा जमा करैत छथि। तेँ आवश्यक अछि जे ई काज साहित्यिक समालोचकलोकनि करथि, एहन समालोचकलोकनि जे इतिहास आ सांस्कृतिक उत्पादनकेँ अवधारणात्मक स्पष्टताक संग समक्ष आनि सकथि। जेँ कि उपन्यास समाजक अध्ययन लेल सभसँ उपयुक्त साहित्यिक आधार थिक तैँ पछिला सदीक जागरण संग आरम्भिक उपन्यासक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक अध्ययन आइ सहजेँ आवश्यक भ' गेल अछि।[26]

मैथिलीमे निर्दयी सासु, सुमति, कन्यादान, पारो ओ कला स्त्रीकेँ केन्द्रमे राखि क' लिखल गेल उपन्यास थिक। जखनि कि कृषक के केन्द्रमे राखि क' लिखल गेल उपन्यास बलचनमा थिक। पुनर्विवाह, मनुष्यक मोल, मिथिला दर्पण, चन्द्रग्रहण, कुमार, भलमानुस आदि मे केन्द्रीय चरित्र पुरुष अछि। कन्यादान, पारो, कला आ बलचनमाक संवेदनाक इतिहास पर गौरव-बोध करैत हम कन्यादानक नायिका बुच्ची दाइक चुप्पी[27] सँ अपनेलोकनिक साक्षात्कार कराब' चाहैत छी।

सी.सी. मिश्र चतुर्थीक राति पहिल एकान्त भेंटमे अपन नवविवाहितासँ पूछैत छथि–

मि. मिश्र – क्या तुम्हारा ही नाम बुचिया है?

बुचिया – (मनहिमन) इह देखू ने, उर्दुए छैंटै छथि।

मि. मिश्र – तुम बोलती क्यों नहीं? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सचमुच तुम्हारे ही साथ मेरा विवाह हुआ है?

बुचिया – (मनहिमन)-मनुसा केहेन भारी मुँहफट्ट अछि। एतेक जोरसँ बजैत लाजो नहि होइछै।

मि. मिश्र – देखो, इस तरह का पर्दा मैं पसन्द नहीं करता, अगर तुम सचमुच ही मेरी स्त्री हो तो मेरे नजदीक आकर क्यों नहीं बैठती?

बुच्चीदाइ मनहिमन डरैलीह जे ई कतहु फेरि आबि कए बेपर्द नहि करय। ई सोचि ओ अपन कोंचा और आँचर के सक्कत कए लेलनि।

मि. मिश्र – क्या तुम हारमोनियम बजाना जानती हो?

बुच्चीदाइ चुप्प!

मि. मिश्र – क्या तुम नर्सिंग (परिचर्या) जानती हो?

बुच्चीदाइ मनमे सोचय लगलीह-नरसिंह त' शायद कोतबाल के नाम छैक। देखू त' भला, कोतबाल लगा क' हमरा गारि पढ़ैत अछि?

मि. मिश्र – क्या कुछ निटिंग (जाली बुनना) वगैरह भी सीखा है?

बुच्चीदाइ चुप्प!

मि. मिश्र – तो क्या तुम मेरी किसी बात का जबाब देना नहीं चाहती?

बुच्चीदाइ चुप्प!

मि. मिश्र – अच्छा, तो मैं यहाँ से जाऊँ?

बुच्चीदाइ चुप्प!

हरिमोहन झाक कन्यादानक उपर्युक्त मार्मिक अंशमे बुच्चीदाइक चुप्पी पर विचार कयलासँ हुनकर संस्कार, ज्ञान, शिक्षाक संग समक्ष बैसल पुरुषक प्रति घृणा सेहो स्पष्ट होइत अछि। की ई घृणा तात्कालिक प्रतिक्रिया थिक अथवा परम्परासँ चल अबैत पुरुषक व्यवहार पर एक स्त्रीक सहज क्रिया? पति परमेश्वर होइत छथि। कोनो कन्या नेने सँ वरक कल्पना कर' लगैत अछि। कनिया-पुतरा खेलाए लगैत अछि। बच्चेसँ ओकरा बियाह आ वरक गप्प कहल जाय लगैत छैक। मिथिलामे ई सभ कने बेसिए होइत अछि, होइत रहलैक अछि। आर कोनो काज नहि त' बियाहक गप्प। एहेन मे सी.सी. मिश्र सनक पुरुष आ हुनक एहेन प्रश्न सभक, जे प्रथम मिलनक अवसर पर कोनो हिसाबेँ विचारला पर एकदम यथोचित नहि बुझाइत अछि, की उत्तर दितथि बुच्चीदाइ? ओना सी. सी. मिश्रक एहेन निर्लज्ज भ' जेबाक मूलमे हुनक अपरिपक्व बुद्धिक नवयुवक विद्यार्थी होयब भ' सकैत अछि जेना आलोचक श्रीकृष्ण मिश्र कहैत छथि मुदा, बुच्चीदाइक बाप आ विशेष क' बुच्चीदाइक भाइ रेवतीरमणक ठकैती सेहो अछि। रेवतीरमण त' एकदम अपराध करैत छथि। सी.सी. मिश्रकेँ एकदम ठकि क' बियाह करा दैत छथि अपन बहीनिसँ। असली अपराधी चरित्र त' उघार भेल अछि रेवतीरमणक। स्त्रीक प्रति पुरुषक भावना कतेक अगम्भीर आ संवेदनहीन अछि से तथ्य रेवतीरमणक क्रियासँ देखार होइये। बुच्चीदाइक चुप्पीमे रेवतीरमणक ठकपनीक छाया की नहि विद्यमान अछि? की बुच्ची दाइक संकोचकेँ, चुप्पी के तत्कालीन मिथिलामे स्त्री शिक्षाक अभाव कहि टारल जा सकैत अछि? की अंग्रेजी शिक्षा मात्र प्राप्त क' लेने बुच्ची दाइक नियति बदलि जइतनि अथवा सी.सी. मिश्रक संस्कृत पण्डितक रूपमे चण्डीचरण रहलासँ स्त्रीक प्रति हुनक धारणामे कोनो फर्क पड़ितनि। 'युग युगसँ पाषाणी भेल मैथिल

कन्याक दुर्गति 'कन्यादान' मे सी.सी. मिश्र करैत छथि। बुच्चीदाइ पाथरक मुरुत भेल, बलि पर चढ़ाओल छागरक आँखि जकाँ पथरायल छथि।' कवि-कथाकार जीवकान्तक ई कथन विचारणीय अछि।[28] विचारणीय ईहो अछि जे मैथिल कन्याक ई दुर्गति खाली सी.सी. मिश्रे केलनि? बुच्चीदाइक बाप, भाइ सभ दुर्गति नहि केलनि? बाप, भाइ, पति अर्थात् सभ पुरुष मीलि मैथिल कन्याक दुर्गति करैत छथि। हरिमोहन झा स्वयं कन्यादानमे कहैत छथि, 'जाहि पुरुषकेँ ओ कहियो देखने-सुनने नहि, जनने बुझने नहि, ओकरा एकाएक ऊक जकाँ आबि अपन भाग्य-विधाता बनैत देखि कन्याक मनमे विद्वेष उत्पन्न होयब सर्वथा स्वाभाविक छैक। ओहि अपरिचित 'मालिक'क प्रति ओकरा प्रेम नहि भ' प्रत्युत उपेक्षा ओ घृणाक भाव जागृत भ' जाइत छैक।' ई मलिकाना दम्भ इतर भाषा द्वारा आर नीक जकाँ प्रकट होइत छैक। हिन्दी भाषाकेँ उर्दू बूझब बुच्चीदाइक मात्र भाषाक अज्ञानता नहि, मालिक अथवा शासकक विजातीय भाषाक प्रति घृणा भाव सेहो थिक। बाद मे ओहि भाषाक स्थान अंग्रेजी ल' लेलक अछि।

हमरा लगैत अछि जे मैथिली उपन्यासमे बुच्चीदाइक चुप्पी पारोमे आबि क' टूटि गेल अछि। पारो मुखर होइत अछि। बाज'भुक' लगैत अछि। ओकर अपन व्यक्तित्व एहिसँ बनैत छैक। तकरबाद कला एक डेग आगू बढ़ैत अछि। कला अपन डेग उसाहि लैत अछि। ओ पड़ा क' काशी चल जाइत अछि। ओत' दुष्टा आ कुटनी विधवा सभसँ बाँचि एक प्रगतिशील डाक्टर कलानन्दसँ विवाह क' विधवा सभक उद्धारमे लगैत अछि।

हमरा ईहो लगैत अछि जे मैथिली उपन्यासक उदयक संग नब मिथिलाक शिरोदय भेल अछि। पौराणिक मिथिलाक स्थान पर आधुनिक मिथिला। पुरान घर खसय त' नब घर उठय।

सन्दर्भ संकेत

1. Namwar Singh, Reformulating the Questions, Early Novels in India, Edited by Meenakshi Mukharjee
2. वैह
3. गिओर्गी प्लेखानोव, कला के सामाजिक उद्‌गम
4. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
5. रमानन्द झा रमण, निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, भूमिका

6. रामदेव झा, मनुष्यक मोल, भूमिका, सन्धान-2
7. वैह
8. Ramanatha Jha, Darbhanga Raj and Indian Nationalism
9. विजय कुमार ठाकुर, तिरहुतमे 1857क आन्दोलन एवं एकर वर्गीय आधार : एक विश्लेषण
10. Ramanatha Jha, Darbhanga Raj and Indian Nationalism.
11. कानपुर दंगा इन्क्वायरी कमिटी रिपोर्ट, नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।
12. हेतुकर झा, उपनिवेशकालीन मिथिलाक गाम आ गामक निम्नवर्ग।
13. वैह
14. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास, उपन्यास 'कुमार'
15. कुलानन्द मिश्र, मैथिली गद्य तथा कथाकेँ संग-संग देखैत, हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ।
16. अशोक, पारो विचारसँ बनल व्यक्तित्व, यात्री, चेतना समिति
17. रामदेव झा, मैथिली आद्यकथा, मैथिली आलोचना पत्रिका
18. मोहन भारद्वाज, समाज-अध्ययन अनिवार्य विषय थिक, एकल पाठ
19. वैह
20. हेतुकर झा, पारो : सामाजिक ह्रासक प्रसंग आक्रोश, मैथिली आलोचना पत्रिका
21. हेतुकर झा, खट्टर ककाक तरंग : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, प्रो० हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ।
22. चन्दू मेनन पर लिखित विनिबन्ध, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
23. वैह
24. मैनेजर पाण्डेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका
25. मोहन भारद्वाज, करब स्वराज की जौं तोड़ब समाजबन्ध, एकल पाठ
26. ऑयन बाट, उपन्यास का उदय।
27. अशोक, बुच्चीदाइ चुप्प, प्रवासी पत्रिका
28. जीवकान्त, द्विरागमन, प्रो० हरिमोहन झा अभिनन्दन ग्रन्थ

■

जागरणक छटपटाहटि

मैथिली साहित्यक इतिहास लिखनिहार डा० जयकान्त मिश्र कहैत छथि जे उन्नैसम शताब्दीमे देशमे नवजागरणक जे प्रबल लहरि उठल से बहुतो दिन धरि मिथिला नहि पहुँचि सकल। से एहि कारणे जे अंग्रेजी शिक्षा ओ पाश्चात्य विचारधारा एवं पद्धति मिथिला मे बड़ विलम्बसँ प्रचलित भेल। डा० मिश्र एकर दू कारण मानैत छथि। पहिल ई जे मिथिलावासी प्राचीन परम्पराक कट्टर संरक्षक होयबाक कारणेँ संस्कृत शिक्षामे लागल रहला। भाषा-साहित्यक पठन-पाठनक आधुनिक महत्वकेँ स्वीकार करबामे तैयार नहि भेला।[1] एहेन किए भेल? एकर की कारण छल? आलोचक रामदेव झाक कहब अछि जे मिथिला उन्नैसम शताब्दी धरि सनातनी समाज-व्यवस्था ओ सामन्ती शासन व्यवस्थामे जकड़ल मध्यकालीन जीवन जीबि रहल छल। मिथिला वास्तवमे एहन वायु-निरुद्ध बन्द डिब्बा जकाँ छल जाहिमे ने बाहरक स्वच्छ वायु प्रवेश क' सकैत छल आ ने भीतरक युग-युगसँ सड़ल विकृत वायु बाहर भ' सकैत छल। विभिन्न प्रकारक गर्हित रूढ़ि, अन्धविश्वास, अशिक्षा ओ सभ्य समाजक मानदण्डक अनुसार ग्लानिपूर्ण सामाजिक आचार-परम्परासँ ग्रस्त मिथिलावासीकेँ पाश्चात्य जगतक साक्षात सम्पर्क, नवीन आधुनिक शिक्षा प्रणाली ओ अभिनव उदात्त विचार-धारासँ सम्पर्क-सानिध्यक सुयोग बड़ विलम्बसँ ओ बड़ मन्द गतिएँ प्राप्त भेलैक। हुनक इहो कहब अछि जे तैं भारतक अन्य प्रान्त जकाँ कोनो प्रखर समाज-सुधारकक अथवा समाज-सुधार सम्बन्धी कोनो सुसंघटित, प्रभावी आन्दोलनक अविर्भाव नहि भ' सकल।[2]

मिथिलाक वास्तवमे एहन वायु-निरुद्ध डिब्बा बनि जयबाक अनेक ऐतिहासिक कारण विद्यमान रहल अछि। वस्तुतः कोनो भू-भागक संस्कृति मुख्यतः आर्थिक व्यवस्था पर आधारित रहैत छैक। मिथिलाक विदेश व्यापार छठम शताब्दी तक वेश उन्नत छल। ओकरबाद एहिमे कमी हुअ' लागल आ

नवम-दशम शताब्दी तक अबैत-अबैत ई व्यापार लुप्तप्राय भ' गेल। अन्तर्देशीय एवं विदेश व्यापारमे ह्रासक कारणे मिथिलाक क्षेत्र विश्वक अन्य भू-भागसँ कटि गेलैक। व्यापारिक सम्बन्धक संग-संग सांस्कृतिक सम्बन्ध सेहो खतम भ' गेलैक। एकर फलस्वरूप मिथिलाक संस्कृति क्षेत्रीय संकुचनसँ प्रभावित भ' अपना आप मे विशिष्ट सांस्कृतिक रूपमे उदित भेलैक। स्थानीयताक भावना, जे सामन्तवादी आर्थिक व्यवस्थाक मूल-मन्त्र छल, मिथिलाक सांस्कृतिक मूल पोषकक रूपमे एहि निर्माण कालमे अपन योगदान दैत रहल।[3] स्थानीयताक यैह भावना, जे सामन्तवादी आर्थिक व्यवस्थाक मूल-मंत्र छल से अन्ततः रूढ़िवादी आ बन्द समाजक पोषक भ' गेल। एकर कारण ई रहल जे संकुचित अर्थ-व्यवस्थाक कारणे मिथिलामे नगरक उदय नहि भेल। व्यापार आ नगरक अभावक संग मिथिलामे व्यापारी, वणिक एवं शिल्पीक प्रतिष्ठा घटि गेलनि। प्राचीनकालमे अनेको शिल्प एवं कारखाना विशेष रूपसँ शुद्रक लेल निर्धारित कयल गेल छल। परन्तु मध्यकालमे शिल्पी वर्गकेँ लोक घृणाक दृष्टिसँ देख' लागल। शहरी परिवेशमे धर्म एवं ताहिसँ जुडल अन्धविश्वासक पकड़ समाज पर कम होइत छैक परन्तु ग्रामीण परिवेश मे धार्मिक मान्यता सर्वोपरि भ' जाइत छैक। एहि अवस्थामे सांस्कृतिक विकास धर्म अन्धविश्वास सँ प्रभावित भ' रूढ़िवादी विचार एवं संगठनक जन्म दैत छैक। एहि प्रकारेँ आर्थिक व्यवस्थाक प्रभाव स्वरूप जे स्थानीयता, रूढ़िवादिता एवं सामाजिक निश्चलताक भावनाक उदय भेल तकर सांस्कृतिक परिणाम छल पंजी व्यवस्थाक शुरूआत।[4]

मुदा एहन बात नहि अछि जे मिथिला अदौसँ एना वायु-निरुद्ध डिब्बा जकाँ रहय। मिथिलाक अपन विशिष्ट कलाक विकास सेहो मध्यकालमे भेल। से वास्तु-कलाक रूपमे भेल, मूर्त्तिकलाक रूपमे भेल, चित्रकलाक रूपमे भेल। कसीदाकलाक संग नृत्य एवं गायनक क्षेत्रमे सेहो मिथिलामे दू तरफा प्रगति भेलैक। उच्चवर्गक लोक सभक हेतु परम्परागत नृत्य एवं गायनक विकास होइत रहल त' दोसर दिस लोक नृत्य एवं संगीतक क्षेत्रमे अभिनव प्रयोग भेल। एकर अतिरिक्त मिथिला संस्कृतिक अभिन्न अंग मिथिलाक्षरक उद्भव सेहो ओहिकाल मे भेलैक। सामन्तवादी विचारधारासँ जन्मल स्थानीयताक तत्वसँ ओहि युगमे अक्षर एवं भाषा सेहो प्रभावित भेल। डा. सुनीति कुमार चटर्जी सेहो एहि बातकेँ मानैत छथि जे सातम शताब्दीसँ मिथिलाक्षरक विकास शुरू भ' गेल छल। वस्तुतः आठम-नवमसँ ल'क' चौदहम शताब्दीक बीच सम्पूर्ण भारतमे प्रान्तीय भाषाक क्रमिक विकास भेलैक। एहि अन्तरालक अन्तधरि प्रायः प्रत्येक प्रान्तीय भाषामे साहित्यक रचना हुअ' लागल। मैथिलीक सर्वप्रथम गद्य रचना

ज्योतिरीश्वरक वर्ण रत्नाकर थिक जे चौदहम शताब्दीमे लिखल गेल। वस्तुतः एहिकालसँ मैथिली साहित्य बेस परिष्कृत एवं विकसित रूपमे सामने अबैत अछि। मैथिलीक उदयक आधार क्षेत्रीयता छल एवं उप-क्षेत्रीयताक विचारधाराक कारणे एहि भाषाक रूप एकठामसँ दोसरठाम बदल' लगलैक। मिथिलाक्षर एवं मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास संग-संग मिथिलामे विशिष्ट दार्शनिक परम्पराक आरम्भ ओ विकास सेहो भेल अछि। मिथिला भारतीय दर्शनक एक प्रमुख केन्द्र रहल। पूर्वमध्यकाल तक अबैत-अबैत मिथिला तर्कशास्त्रक विशिष्ट केन्द्र भ' गेलैक। मीमांसा दर्शनक अभिवृद्धिक श्रेय सेहो सभसँ अधिक मिथिले के छैक। नव्य न्यायक विकासक दृष्टिसँ सेहो उत्तर मध्ययुगमे मिथिला विशिष्ट अछि। अन्ततः महाकवि विद्यापतिक रूपमे मिथिलाके एहन मणि भेटलैक जे समस्त पूर्वांचल के आलोकित केलक। मुदा मुगल साम्राज्य एवं ओकर बाद ब्रिटिश साम्राज्यवादक कारणे मिथिलाक राजनीतिक स्वतंत्रता तिरोहित भ' गेल। मैथिललोकनि अपन राजनीतिक प्रगतिक कोनो सम्भावना नहि देखि अपन मानसिक शक्ति एवं ध्यान जाति एवं सांस्कृतिक शुद्धता दिस केन्द्रित केलनि। एहि सन्दर्भमे सामन्तवादी पञ्जी व्यवस्था हुनकालोकनिक बौद्धिक मनोरंजन करबामे खूब मदति केलक। ई सम्पूर्ण व्यवस्था एक सामन्तवादी मानसिक अकर्मण्यताक उत्कृष्ट नमूना थिक। एहिसँ समाजमे अनेको पृथक एवं एकान्तवादी वर्गक उदय भेलैक जे निश्चित रूपसँ मिथिलाक एक समग्र सांस्कृतिक उद्भव एवं विकास मे बाधक भेल।[6]

मिथिलामे जागरणक लहरि नहि पहुँचि पयबाक दोसर कारण डा० जयकान्त मिश्र तत्कालीन मिथिलाक शासक दरभंगा राज के मानैत छथि। दरभंगा राजक शासकलोकनि नवीन व्यवस्थामे मिथिलाक अपन भाषाकेँ कोनोटा स्थान दिअ नहि चाहैत छला। तथापि डा० मिश्र लक्ष्मीश्वर सिंह केँ एतबा श्रेय अवश्य दैत छथि जे ओ मिथिलामे अंग्रेजी शिक्षाक प्रवर्तन केलनि। 1880 मे दरभंगाक महराज दरभंगा शहरमे एक स्कूल खोललनि आ जे वाराणसी वा अन्यत्र जा आगाँ पढ़' चाहथि तिनका यथोचित छात्रवृत्ति देब आरम्भ केलनि। महामहोपाध्याय मुरलीधर झा आ पण्डित खुद्दी झा सन-सन दिग्गज पण्डितलोकनि अंग्रेजी शिक्षाक समर्थन कयलनि। परिणामस्वरूप 1895 मे आबि दरभंगा जिलामे 5 हाइ इंगलिश स्कूल, 4 मिडिल इंगलिश स्कूल, 9 मिडिल भर्नाकुलर स्कूल आ 507 प्राइमरी स्कूल भ' गेल। 1895 मे मुजफ्फरपुर जिलामे 4 हाइस्कूल, 7 मिडिल स्कूल, 8 मिडिल भर्नाकुलर स्कूल आ लगभग 898 प्राइमरी स्कूल भ' गेल। 1907 मे आबि चम्पारन जिलामे 2 हाइस्कूल, 7 मिडिल

इंगलिश स्कूल आ दू मिडिल भर्नाकुलर स्कूल भेल तथा पूर्णिया जिला मे 1 हाइस्कूल, 6 मिडिल इंगलिश स्कूल, 4 मिड़िल भर्नाकुलर स्कूल आ 597 प्राइमरी स्कूल भेल। मैथिल छात्रलोकनि कलकत्ता, वाराणसी आ इलाहाबाद धरि जा क' पढ़' लगला। एहिसँ मिथिलावासीक सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवनमे एक नवचेतना आयल। कतोक विख्यात लेखक जेना चन्दा झा, रघुनन्दन दास, महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झा और हुनक भाइ विन्ध्यनाथ झा एवं गणनाथ झा एहीकालमे साहित्यक क्षेत्रमे अयला। तहियासँ दर्शन, नीतिशास्त्र, इतिहास, भूगोल, यात्रा, गणित, व्याकरण, अलंकार-शास्त्र, छन्दशास्त्र आदि लगभग सभ विषय पर मैथिली भाषामे रचना हुअ लागल। उपन्यास, गल्प ओ नीतिकथा सेहो लिखल जाय लागल।[7] एहि लेखकलोकनि मे सभसँ प्राचीन ओ अग्रगण्य रहथि चन्दा झा।

मुदा चन्दा झासँ पूर्व मुगलकालीन शासनक अवसान ओ ब्रिटिश इस्ट इण्डिया कम्पनीक ओहार तर ब्रिटिश साम्राज्यक प्रारम्भिक वर्षमे मिथिलाक सन्त साहित्य-परम्पराक महान विभूति लक्ष्मीनाथ गोसाईं (1788-1872 ई०)क अविर्भाव भेल। ओहि समयमे दरभंगा-राजक उत्तराधिकारी महराज माधव सिंह छला। लक्ष्मीनाथ गोसाईं अपन समकालीन मिथिलाक सन्त ओ साहित्यक रचयिता मे अग्रणी छला। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, राम सनेही दास आदि सन्त कविक रचना भक्तिक संग लोकमंगलकारी भावसँ अभिभूत अछि। हिनकालोकनिक हृदयमे ब्रिटिश राज्यक प्रति विद्रोह भाव छल। ओहि शासनक प्रतिक्रियामे लक्ष्मीनाथ गोसाईंक कथन अछि-'पामर राज्य करय अहि पुर मे।'[8] तहिना राम सनेही दासक एक पद अछि, 'ब्रिटिश राज करत पाप, जनगण बिच बढ़ल दाप। आबि आब हरहु ताप, सत्व सुखदाई।' लक्ष्मीनाथ गोसाईं वस्तुतः ओहिकालक धार्मिक कट्टरता एवं जाति-पातिक भावनासँ प्रभावित नहि छला। हुनकर शिष्य मे जॉन क्रिश्चयन सेहो रहथि। मुसलमान द्वारा आमंत्रित कयला पर ओ ओकरा सहर्ष स्वीकार क' लैत छला। निम्नवर्गीय लोकक सेहो ओ बहुत शुभचिन्तक छला।[9]

कवीश्वर चन्दाझाक जीवन केवल मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रसंग अनुसंधान करैत, एकरे चर्चा करैत, एकरे भावना करैत बीतय। हुनक जीवनक जेना कोनो दोसर लक्ष्ये नहि रहनि। ओ कविता रचथि। अपन आराध्यदेव शिवजीक वन्दनामे। देशक विकराल दशा पर। शेष समय ओ केवल पुरातत्वक अन्वेषण कार्यमे, एकरे चिन्तनमे, एकरे भावना मे बितबथि।[10] एना किए करथि चन्दा झा? एहन किएक भेला ओ? हुनका भीतर ओ कोन बेचैनी, छटपटाहटि

पैसि गेल छलनि? चन्दा झा कें प्राय: जकर धुन सवार छल ओ छल मिथिलाक प्रति हिनक चिरन्तन प्रेम। लगैत अछि जेना ओ स्वगत कहल करैत होथि, 'हे मिथिला। अहाँक समस्त दोषक अछैतो हम अहाँसँ प्रेम करैत छी।' ओ मिथिलासँ केवल ओकर समृद्ध अतीतक लेल प्रेम नहि करैत छला अपितु ओकर वर्त्तमानकालीन परम्परावाद, सामाजिक विषमता तथा कुरुपता सभक लेल सेहो।'' वस्तुत: चन्दाझाक छटपटाहटि ओ बेचैनीक जड़ि मे ओ वर्त्तमान काले छल जे हुनका अतीत दिस तकबाक लेल, ओकर अनुसन्धान लेल प्रेरित केलक। ई प्रेरणा हुनकामे ओहिना, अलगटट् नहि जनमल, एकर पाछू ओहि समयक सामाजिक ओ आर्थिक वातावरण विद्यमान छल।

ओ समय छल उपनिवेशवादी शासनक। भारतमे ओ मिथिलापर अंग्रेजक शासन रहय। दरभंगा-राज अंग्रेजक अधीन छल। दरभंगा-राजसँ अँग्रेज सरकार कें एकटा निश्चित राशि कर मे देल जाइत छलैक। तैं ओ जमीन्दार सभ पर दबाब बढ़बैत गेल। पूर्वक मुसलमानी शासनक राजस्व व्यवस्थामे परिवर्त्तन आनल जाय लागल। आमलोक संगहि जमीन्दार सभमे सेहो असंतोष बढ़ि रहल रहय। भीतरे-भीतर देशमे आगि सुनगि रहल छल। परिणामस्वरूप 1857 मे अंग्रेजक विरूद्ध प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलनक विस्फोट भेल। एकर लहरि आ असरि मिथिला धरि पहुँचल। ई एक तथ्य थिक जे 1857क आन्दोलन तिरहुतमे बहुत महत्त्वपूर्ण घटनाक रूप नहि ल' सकल परन्तु एहि क्षेत्रमे बहुतो व्यक्तिकें गिरफ्तार क' दंडित कएल गेल जाहिमे एहि क्षेत्रक बाहरक लोक अधिक छल। विद्रोहीलोकनिक आर्थिक स्थिति सम्बन्धी विवरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे सभ विद्रोहीलोकनि समाजक कमजोर आर्थिक वर्गक सदस्य छला।[12] चन्दा झा ओहि समय मे पच्चीस बरखक नवयुवक छला। 1857क बाद अंग्रेज शासन आर सुव्यवस्थित रूपें स्थापित भेल। मिथिलामे त' महराज महेश्वर सिंहक आकस्मिक निधनक कारणे तीनिए वर्षक बाद 1860 मे कोरट लागि गेल। जमीन्दारी सोझे अंग्रेजक हाथ मे आबि गेल। दूनू नाबालिक राजकुमार लक्ष्मीश्वर सिंह ओ रमेश्वर सिंहक शिक्षा-दीक्षा सेहो अंग्रेजक देख-रेखमे हुअ' लागल। मिथिलाक शासन सोझे अंग्रेजक हाथ मे आबि गेलासँ ओहिठामक राजनैतिक-सामाजिक ओ आर्थिक क्रियाकलाप पर व्यापक असरि भेलैक। अंग्रेज अपना हिसाबें शासन-सत्ता चलब' लागल। 1860सँ 1880 धरि यैह स्थिति रहल। बीस वर्ष धरि जे सिंहासन खाली छल तकरा सम्बन्धमे सामान्य लोकक मनमे अन्यथा भाव आयब अस्वाभाविक नहि छलैक। हम सभ जनैत छी जे एहि समयमे मिथिलामे भीषण अकाल पड़ल छल। लोकक आर्थिक

स्थिति अत्यन्त दयनीय भ' गेल छलैक। मुदा तैयो मालगुजारी बढ़ा देल गेल छलैक आ दरभंगा-राजक आय रैयतक शोषणसँ बढ़ि रहल छलैक।[13] एहि तरहें रैयतकें 'चूसिक' लेल गेल राशिक हिसाब कोना होइत छल से कम महत्वपूर्ण नहि अछि। बीम्स अपन 'मेमायर्स' मे लिखने छथि जे ओ जखन एकटा ठीकेदार सँ वसूली भेल लगानक राशि जमा करबाक लेल कहलथिन तँ ओ टाकाक स्थान पर खर्चक व्यौरा जमाक' देलकनि। देखला पर पता चललैक जे आमदनी सँ खर्च बेसी अछि। ततबे नहि, खर्चक विवरण तँ आरो लजास्पद छलैक। अधिकांश खर्च कोर्ट-कचहरीक कर्मचारी कें घूस देबाक मदमे भेल रहैक। .. कहबाक अभिप्राय ई जे ब्रिटिश सरकार आ राज-दरभंगा दूनू मीलिक' जाहि कृषि-व्यवस्थाक संचालन करैत छल से भ्रष्ट तथा शोषणमूलक रहय।[14] आमलोक आ कृषकक स्थिति त' एहि प्रकारें एकदम विपन्नावस्थामे आबि गेल रहय। ब्राह्मण आ कायस्थक जे अभिजात वर्ग छला, हुनको स्थिति नीक नहि छल। सम्पूर्ण समाज जाति-उपजाति मे खण्ड-पखण्ड भेल छल। रूढ़िवादिता तथा धार्मिक कट्टरता पराकाष्ठा पर रहय। जे आर्थिक-सामाजिक दृष्टियें जतेक प्रभुत्वशाली से ततबे कट्टर। एहिठाम ई मोन पाड़' चाहब जे मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे कैकटा संस्तर रहल अछि। से सामाजिक आ आर्थिक दूनू दृष्टियें रहल अछि। जातीय प्रभुता पर आर्थिक सम्पन्नता सान चढ़बैत रहल अछि। एहि ब्राह्मण समाजमे एक सय वर्षमे भेल वैचारिक ओ व्यावहारिक परिवर्त्तनकें, ओकर प्रगतिशीलता ओ प्रतिगामिता कें मैथिली साहित्यमे रचनात्मक अभिव्यक्ति भेटैत रहल अछि। मुदा चन्दा झाक समयमे ओकर स्थिति ओहेन नहि छल जेहेन आइ अछि। निश्चित रूपसँ कूपमण्डूकता आइ घटल अछि।

एहिठामक विशेष भौगोलिक ओ सांस्कृतिक स्थितिक कारणें उपनिवेशवादी शासनक जे किछु प्रगतिशील सुधारात्मक कार्रवाई सभ भेल, तकरो सुगठित प्रभाव रहि ठामक समाज पर तहिया नहियें जकाँ पड़ल। बंगाल ओ महाराष्ट्रक नब सामाजिक जागरण अपन पैर मिथिलामे नहि जमा सकल। मिथिलामे ओहि आन्दोलनक प्रभाव एतबहिटा पड़ल जे समाजक एक सशक्त वर्ग सुधारक प्रति विशेष सचेष्ट भेल। यैह सुधारवादी भावनाक अभिव्यक्ति उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दू दशक सँ ल'क' बीसम शताब्दीक आरम्भिक तीन दशक धरि मैथिली साहित्यमे विशेष स्फुट ओ अविछिन्न रूपें अभिव्यक्त भेल। चन्दा झा एहि प्रवृत्तिकें सर्वप्रथम ग्रहण क' अपना रचनामे सामाजिक दुर्व्यवस्थाक चित्रण आरम्भ केलनि।

1870 ई० ओ तत्पश्चातो अनेक बेर अकाल आबि मैथिल समाजक आर्थिक स्थितिकेँ घोर दयनीय बना देलक। एहना स्थितिमे देश व्याकुल छल एवं समाज़ अव्यवस्थित। चन्दा झा ओहि कठिन समयक यथार्थ चित्र अपन कवितामे उपस्थित केलनि। चन्दा झाक कविताक एहन पाँती सभ समाजक हृदयमे सुनगैत व्यथाक विस्फोट छल, तैं बड़ लोकप्रिय भेल। मुदा चन्दा झा अपन कवितामे समाजक व्यथा त' रखलनि, कोनो प्रतिकार लेल समाजकेँ पुरुषार्थ लेल प्रेरित नहि क' सकला। ललाटक लेखकेँ टारबामे मनुक्खक शक्ति पर हुनका भरोस नहि भेलनि। ओ जनैत छला जे शत्रुकेँ दबेबा लेल दैहिक बलसँ बेसी धनबल जोरगर भ' गेल अछि। मामिला-मोकदमाक मारि मे वैह जीति सकैए जे धनवान अछि। ई धने थिक जे भाइ-भाइमे शत्रुता उत्पन्न क' रहल अछि। लोक ठक भ' रहल अछि। एहेन ठक लोक हक पाबि क' नीक लोक के उजाड़ि रहल अछि। मुदा समाजमे बढ़ैत एहि तरहक विकृति, अनाचार लेल ओ ईश्वरक लिखल भाग्यकेँ दोषी मानैत छला। सामाजिक व्यवस्थाकेँ नहि। हुनक नजरि सुखायल भदइ पर गेलनि। दहाइत धान पर गेलनि। गरीब किसान पर गेलनि। ओकर विपन्न अवस्था पर गेलनि। एहन विपन्न किसानकेँ सपरिवार हाय-हाय करैत देखि हुनकर हृदय फटैत छलनि। किसानक दारुण अवस्था देखि के ओ मर्माहत छला। एहि लेल दोषी उपनिवेशवादी सत्ताकेँ सेहो ओ चीन्हि गेल रहथि। एहि सभसँ ओ निराश भ' गेला। भविष्य प्रति चिन्तित भ' गेला। वर्त्तमानक प्रति आक्रोश भेलनि। मुदा भाग्य ओ कर्मफलक सीमाकेँ ओ अतिक्रमण नहि क' सकला। आक्रोश प्रतिरोध धरि तैं नहि पहुँचि सकलनि। मोहन भारद्वाज कहैत छथि जे ई बात ओ जनैत छला जे हुनक कविता मुखर नहि छनि, हुनक आक्रोश प्रतिरोध धरि नहि पहुँचैत छनि।[15] हुनक एहि आत्मज्ञान लेल ओ चन्दा झाक जाहि कविता के प्रस्तुत करैत हथि ओहि कवितामे चन्दा झा कहैत छथि जे हुनक जीवन आ कविता मन्द अछि, ओहिमे तीव्रता वा प्रखरता नहि छैक, मुदा से हुनका सक मे नहि छनि। तखन एकटा बात अछि। चानन-गांछ शीतल होइत अछि, मुदा ओहि पर रहय बला साँपमे विष रहैत छैक। तहिना व्यावहारिक जीवनक वचन-वाणीमे तथा कवितामे ओ शान्त छथि, किन्तु ओहिमे वेधकता छैक। हुनकर कविता मन्द किएक अछि? ओहि मे प्रखरता किएक नहि छैक? वस्तुतः ई तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक-जीवन, हुनकर सामाजिक अस्तित्व तथा व्यक्तिगत जीवनक दुर्वस्थाक सम्मिलित प्रभाव थिक। यैह प्रभाव हुनका अन्ततः भाग्यवादी बना देलक। सामाजिक ओ व्यक्तिगत जीवनसँ उत्पन्न निराशा भाव चन्दा झाक भाग्यवादी बनि जेबाक मूल

मे अछि। आर्थिक ओ सामाजिक दुर्व्यवस्थासँ उत्पन्न व्यक्तिगत जीवनक दुर्वस्था लोकके भाग्यवादी बनबैत अछि। भाग्यवादक ई स्वर शिष्ट साहित्यमे त' अछिए लोक साहित्योमे भेटैत अछि। वर्त्तमानक निराशा एकरा गति दैत रहल अछि।

वर्त्तमानक प्रति निराशा एकटा आर काज केलक। अतीत वस्तुतः हिन्दू अतीत चन्दाझाकेँ आह्लादकारी लाग' लगलनि। अतीतक प्रति ई आह्लादकारी भाव नवजागरणक पुनरुत्थानवादी अन्तर्धाराक रूपमे सभतरि विद्यमान रहल अछि। मुदा से मिथिलासँ कने फराक रूपेँ। एकरे परिणामस्वरूप आत्मानुसंधानक प्रक्रिया ओहि सभ क्षेत्रमे पहिने शुरु भेल जे क्षेत्र औपनिवेशिक संस्कृतिक सम्पर्क मे पहिने आयल आ औपनिवेशिक संस्कृतिक केन्द्र बनि गेल। ओहिठामक अभिजन बुद्धिजीवी अपन जातीय, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय अस्मिताक जाँच-पड़ताल शुरू केलनि। अपन समाजकेँ सम्बोधन लेल अपन क्षेत्रीय भाषा मे लिख' लगला। मोटा-मोटी ई सभ अपन क्षेत्रीय भाषाकेँ समृद्ध करबामे लगला तथा समाज सुधार लेल युगानुकूल आवश्यकताकेँ चिन्हलनि। बहुतो अपन अतीत तथा वर्त्तमानक दुर्व्यवस्थाक समाधान लेल अंग्रेज सरकारक आधुनिकता पर आधारित कानून ओ व्यवस्थाक प्रति आस्था व्यक्त केलनि। ओहिमे समाजक हिसाबेँ जे संशोधन, परिवर्द्धन आवश्यक बुझलनि ताहि लेल अंग्रेज सरकार लग विभिन्न तरहेँ, विभिन्न मंच पर अर्जी लगौलनि, आवाज उठौलनि। मुदा मिथिलामे एहन लोक कियो नहि भेला। महराज लक्ष्मीश्वर सिंह प्रभावशाली रहथि मुदा हुनक बहुतो सीमा छल। ओ अंग्रेजी पढ़लनि। अंग्रेजक सम्पर्को मे अयला मुदा हुनकामे ओ दूरदृष्टि नहि उत्पन्न भेल जे मैथिली ओ मिथिलाकेँ आधुनिक रूपमे विकसित करबाक ओरिआओन करितय। फल ई भेल जे मिथिलामे नवजागरण अपन लक्ष्य पर नहि पहुँचि सकल। एत' बुद्धिसंगत आ उदार विचारधाराक व्यापकतासँ धार्मिक ओ सामाजिक सुधारक प्रक्रिया प्रारम्भ करबाक लेल कियो बुद्धिजीवी ओ सामाजिक सुधारक उत्पन्ने नहि भेला। आनठामक विचार अथवा आनठामक सुधारक अनुगूंज मिथिलामे पहुँचल अवश्य मुदा अपन छिटफुट प्रभाव छोड़ि कोनो व्यापक आन्दोलन नहि ठाढ़ क' सकल। तैयो जे किछु भेल से साहित्येक माध्यमसँ अभिव्यक्त भेल। मुदा मैथिलीमे साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक सुधारक ई प्रतिध्वनि ओ आकांक्षा अभिजने समाज धरि सीमित रहल। व्यापक समाज धरि मैथिली साहित्य नहि जा सकल। फलस्वरूप मैथिलीक ई सीमा अन्ततः राष्ट्रीयताक विचारसँ ओतप्रोत राजनैतिक चेतनाक प्रसार ओ विकासमे सहायक नहि बनि सकल।

चन्दाझाकेँ जत' एक संरक्षक महराज लक्ष्मीश्वर सिंह किछु उदार भेटलथिन ओतहि दोसर संरक्षक महराज रमेश्वर सिंह सनातन धर्मक संरक्षक भ' गेला। सनातन धर्मक प्रचार मे ओ देश भरि घुमला। चन्दाझाक मृत्युक बाद 1910 मे रमेश्वर सिंह जे मैथिल महासभा बनौलनि, से पुनरुत्थानवादी अन्तर्धारा के आर जोरगरे बनौलक। से हिन्दू अतीतक व्यापकतामे नहि ब्राह्मण अतीतक वर्चस्वक रूपमे। ओना नवजागरण ओ सुधारक देशव्यापी प्रवाहमे जेना सभठाम मध्यवर्ग अपन विवाह, धर्म ओ पारिवारिक संरचनाक पुनर्गठन करैत अछि तेना किछु प्रयास मिथिलोमे भेल। जे मैथिली साहित्यमे कविता, कथा, लेख, उपन्यास आदिक माध्यमसँ आधुनिक आरम्भिक साहित्यमे अनुगुंजितो अछि।

वस्तुत: एहि प्रकारक पुनरुत्थानवादी ध्वनि सभ नवजागरणकालीन आनो भाषा-साहित्यमे सुनाइ दैत अछि। से वंकिमचन्द्र चटर्जी सँ ल'क' भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक साहित्यमे सेहो भेटैत अछि। ई त' साहित्यमे ब्रिटिश साम्राज्यवादक खिलाफ गांधीजीक नेतृत्वमे चलैत आन्दोलनक अवधि धरि चलैत रहल अछि। कहल जाइत अछि जे एहन साहित्यक केन्द्रमे देश त' छल, मनुक्ख नहि छल। जखनि कि यैह ओ अवधि छल जखन सम्पूर्ण विश्वमे नब मनुक्खक खोज भ' रहल रहय। भारतीय साहित्यमे सेहो एहि अनुगुंजक अभिव्यक्ति भ' रहल छल। रवीन्द्रनाथ टैगोर आ प्रेमचन्द एहि रूपमे विचित्र रहथि जे ओ तथाकथित राष्ट्रवादक प्रवाहमे नहि अयला। राष्ट्रवाद हुनकालोकनिक नजरिमे मनुक्खक विकास लेल नकारात्मक ओ अवरोधक बनल रहल। वस्तुत: राष्ट्रवादमे अतीतक चिंताकुल स्मृति सभ जुड़ल रहैत अछि।

चन्दा झा वर्त्तमानक निराशासँ अतीतक स्मृति मे गेला। चिन्ताकुलो भेला। हुनक राष्ट्रवाद मुदा मिथिलावाद धरि सीमित छल। अपन सोचक सीमाक अछैतो ओ मैथिली ओ मिथिलाक परिप्रेक्ष्य मे चिन्तन, साहित्य ओ अनुसन्धानक दिस उन्मुख भेला। अपन जे किछु धरोहर अछि तकरा जोगाक' रखबाक, संरक्षित करबाक प्रवृत्तिक प्रारम्भ हमरालोकनि चन्दा झामे देखि सकैत छी। विद्यापति, गोविन्द दास, साहेब रामदास आदिक मैथिली रचना सभक संग्रह आ ओकर प्रकाशनक श्रेय चन्दा झाकेँ छनि। विद्यापतिक लिखनावली ओ कीर्त्तिलताक खोज केलनि चन्दा झा। तेजनाथ झा लिखित 'भक्ति प्रकाश' नामक कृतिक सम्पादन आ प्रकाशन केलनि। शारदा चरण मित्रक संग चन्दा झा घूमि-घूमि विद्यापतिक पद एकत्र कयने छला। विद्यापतिक अपना हाथे लिखल भागवतक पोथी मित्र महाशयकेँ देखाक' हुनक सन्देह दूरक' देने छला जे विद्यापति मैथिल

छला अथवा बंगाली। एहि भागवत पोथीक पता चन्दा झा लगौने छला, ओकरा ताकि क' बहार केलनि, जे दरभंगा राजकीय पुस्तकालयमे आ तकरबाद संस्कृत विश्वविद्यालयमे सुरक्षित राखल गेल।[16] एम्हर आबि क' ई अमूल्य पोथी चोरि भ' गेल। ज्योतिरिश्वर ठाकुर (1280 ई.-1340 ई.)क बाद चन्दा झा (1831-1907) पहिल व्यक्ति भेला जे पोथीक रूपमे मैथिलीक गद्य लिखलनि। विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाक गद्यपद्यमय अनुवाद केलनि। हुनके सामग्री-संकलनक आधार पर परमेश्वर झा 'मिथिला तत्व विमर्श' लिखलनि। हुनका समयमे सम्पूर्ण भारतक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ साहित्यिक स्थिति बदलि रहल छल। पुरान आ नब जीवन स्थितिक टकराहटि भारतीय रचनामे व्यक्त भ' रहल छल। चन्दा झा सेहो अपन मैथिली ओ हिन्दी कवितामे नब स्वर भरलनि। आलोचक मोहन भारद्वाजक कहब अछि जे जमीन्दारी प्रथाक परवित्त-विहारी अमलासँ अंग्रेजशासनक न्याय-व्यवस्थाक भ्रष्टाचार धरि पर ओ लिखलनि। गोविन्द दाससँ हर्षनाथ झा धरिक विद्यापतिक परवर्त्ती काव्यधाराकेँ लोकमार्ग पर अनबाक श्रेय चन्दा झाकेँ छनि।[17]

मुदा हमरा सभ चन्दा झाक जोगा क' रखबाक प्रवृत्तिकेँ कायम नहि राखि सकलहुँ। ओकरा आगू बढ़ेबाक प्रति सेहो साकांक्ष नहि भेल छी। हुनको कयल काज सभकेँ एकत्रित क' एखन धरि रचनावलीक रूपमे प्रकाशित नहि क' सकलहुँ अछि। हुनका द्वारा ताकि क' देल गेल विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत पोथियो के सम्हारि क' नहि राखि सकलहुँ। अपन परम्परा के जानब, अपन सामूहिक परिचितिक धरोहर सभ के जोगा क' राखब, ओकरा संरक्षित करब एक सामाजिक दायित्व थिक। जे संस्था आ व्यक्ति ई काज केलनि अछि से चन्दा झाक प्रवृत्ति आ अवदान के आगू बढ़ौलनि अछि। भारत आ विश्व स्तर पर नव जागरणक ई एक महत्वपूर्ण अवदान रहल अछि जे अपन समाजक सम्पूर्ण रूपेँ जागरणक लेल सामूहिक धरोहर सभकेँ संरक्षित कयल गेल, ओकर अध्ययन-मनन ओ विश्लेषण कयल गेल आ तखन युगानुकूल, आवश्यकता, प्रयोजन केँ देखैत ओकर उपयोग कयल गेल। समाजकेँ एना प्रेरित ओ प्रोत्साहित कयल गेल जाहिसँ मनुक्खक विकास, समाजक विकास सम्भव हो। समाज सभ तरहेँ समृद्ध हो। गतिशील हो।

ओना चन्दा झाक कार्यसँ मुग्ध भ' हुनकासँ प्रोत्साहन पाबि एहि शताब्दीक आरम्भमे दरभंगामे एक मिथिलानुसन्धान समितिक स्थापना भेल छल। जकर प्राण छला चेतनाथ झा ओ मंत्री रहथि केशी मिश्र। एकर प्रमुख सदस्य रहथि

मुकुन्द झा वक्शी, गणनाथ झा, मुंशी रघुनन्दन दास ओ तुलापति सिंह। इहो लोकनि थोड़ काज नहि कयलनि परन्तु ओ युगे तेहेन छल जे शिक्षितो समाज सँ हिनका लोकनिकेँ प्रोत्साहन नहि भेटलनि। जकर फलस्वरूप ई समिति बादमे भग्न भ' गेल। पाछू तँ ई लोकनि अपनहुँ एकरा 'मुर्दा क्लब' कह' लगला।[18] मुदा बीसम शताब्दीमे जागरण अननिहार एहि प्रकारक आनो सामाजिक ओ सांस्कृतिक संगठन बनल, जाहिमे मैथिल शिक्षित समाज (कलकत्ता, 1919), मैथिल सम्मेलन (कलकत्ता 1923, पटना 1924), सुबोधिनी सभा (पूर्णिया), मैथिल छात्र-सम्मेलन (भागलपुर 1910, वाराणसी 1920, मुजफ्फरपुर 1924, पटना 1934, इत्यादि) मैथिल युवक संघ (पूर्णिया 1930, अरगएंडा (जिला-दिनाजपुर) आर वाराणसी, मैथिल तरुण सभा खास क' प्रवासी लोकनिक अन्यान्य मैथिल संस्था सभ। एहि संगठन सभक कार्य नाना प्रकारक रहैत छल, खास क' ई सभ भारतक विभिन्न भागमे सम्मेलन करैत छल जकर अध्यक्षता डा. सर् गंगानाथ झा, कुमार गंगानन्द सिंह, रामभद्र झा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' आदि विशिष्ट व्यक्ति लोकनि करैत छला। एहि सम्मेलन सभमे विमर्श होइत छल जे मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकास कोना हो, मैथिलत्वक उदय कोना हो।[19] एहि संगठन सभक अतिरिक्त, मिथिलाक भीतर ओ बाहर कतोक रिसर्च सोसाईटी सेहो स्थापित भेल जे मिथिलामे जागरणक गति मे तेजी अनलक। एहिमे उल्लेखनीय अछि मिथिला पब्लिशिंग कम्पनी, मैथिली साहित्य सभा, मैथिल विद्वत्समिति (वाराणसी आ दरभंगा), मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स (मधुबनी), मिथिला ग्रन्थमाला (दरभंगा आ वाराणसी) मैथिली साहित्य परिषद् (दरभंगा) मैथिली साहित्य भवन (पूर्णिया) मिथिला रिसर्च सोसाईटी वा मुर्दा क्लब इत्यादि। एहि सभ प्रयासक सामूहिक परिणाम ई भेल जे मिथिलावासी अपन एकता आ अपन अतीतक गौरवक प्रति साकांक्ष भेला। हुनका ई सद्बुद्धि भेलनि जे नब मिथिलाक उत्थान एकमात्र हुनक मातृभाषाक उत्थान पर निर्भर अछि।[20]

शैलेन्द्र मोहन झा 'मैथिली साहित्य : प्रमुख कवि' नामक पोथीक सम्पादन करैत ओकर भूमिकामे लिखलनि जे अठारह सौ सतावनक पश्चात मैथिली साहित्यमे नवयुगक संचार भेल जकर नेतृत्व, नवीन शिक्षित, बुद्धिजीवी वर्गक हाथमे रहल। एहन वर्ग भारतक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैत अपन प्राचीन संस्कृतिक सुरक्षार्थ उत्सुकता देखौलनि तथा ओकर समुचित विकासार्थ सचेष्टता प्रदर्शित कयलनि। साहित्यकारक दृष्टि खाली स्वर्णिम अतीतक चकाचौंध मे नहि रहल, प्रत्युत भविष्यक नब आलोक दिस सेहो आकर्षित भेल।[21]

आनन्द मिश्र 'चन्द्रग्रहण' (1932) उपन्यासक प्रसंग गप करैत कहैत छथि जे ओ नवजागरणक युग छल। सामाजिक पतन के रोकब साहित्यकारक प्रथम दायित्व मानल जाइत छल।[22] गोविन्द झा मिथिला दर्पण (1925)क प्रसंग गप करैत ओहि कालक सामाजिक स्थिति के समक्ष रखैत छथि। ओ कहैत छथि जे ओहिकालक मैथिल समाज विशेष कए ब्राह्मण समाज, नाना प्रकारक कुरीति, दुर्धारणा, दुष्प्रवृत्ति, अशिक्षा, कुशिक्षा तथा अन्यान्य मानवीय दोष आ दुर्बलता सँ ग्रस्त छल जे ओकरा निरन्तर पतनक गर्त्तमे खसओने जाए रहल छल। एहन विकट कालमे मैथिल महासभाक स्थापना मैथिल ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ समाजक हेतु वा कहू समस्त मिथिलाक हेतु एक विशेष घटना छल। एहि मंच सँ जतेक समस्या उठाओल गेल ओ तकर समाधनार्थ जतेक जे परामर्श देल गेल से सभटा 'मिथिला दर्पण' उपन्यासमे प्रतिफलित अछि।[23]

कन्यादानसँ पूर्वक उपन्यास सभकेँ ताकि-हेरि क' प्रकाशित करबामे डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क योगदान अत्यन्त प्रशंसनीय अछि। ओ निर्दयी सासु, पुनर्विवाह आ सुमतिक पुनर्प्रकाशनक उपरान्त मैथिल समाजकेँ 'मिथिला दर्पण' उपन्यास पोथीक रूपमे उपलब्ध करौलनि। चन्द्रग्रहण के मिथिला-मिहिर मे पुनः प्रकाशित करौलनि। एहि उपन्यासक प्रकाशनसँ कन्यादानसँ पूर्वक किछु उपन्यास पाठककेँ सुलभ भ' गेल छैक। एहि सभ उपन्यासमे मिथिलामे आयल नवजागरणक प्रभावकेँ स्पष्ट रूपेँ अकानल जा सकैत अछि। एहि नवजागरणक प्रभाव एतेक धरि अवश्य पड़ल जे लोक मिथिलाक अवनतिक कारण सभकेँ तकबाक दिस उन्मुख भेल आ तकर निदानक मादे सोच' लागल। से ओहिकाल मे प्रकाशित मैथिली, पत्रिकामे आयल विभिन्न लेख, निबन्ध ओ चर्चा-विमर्शसँ सेहो सम्पुष्ट होइत अछि।

जागरणक ई छटपटाहटि आधुनिक मिथिलाक निर्माणक छटपटाहटि थिक।

सन्दर्भ संकेत

1. डा. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास, साहित्य अकादेमी
2. डा. रामदेव झा, जनार्दन झा 'जनसीदन' विनिबन्ध, साहित्य अकादेमी
3. डा. विजय कुमार ठाकुर, मैथिल सभ्यताक उद्भव एवं विकासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चेतना समिति स्मारिका, 1983
4. वैह

5. डा. सुनीति कुमार चटर्जी, ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट ऑफ दी बंगाली लेंगुएज, भाग-1
6. डा. विजय कुमार ठाकुर, मैथिल सभ्यताक उद्‌भव एवं विकासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, चेतना समिति स्मारिका, 1983
7. डा. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास
8. डा. खुशी लाल झा, लक्ष्मीनाथ गोसाईं, विनिबन्ध, साहित्य अकादेमी
9. डा. फुलेश्वर मिश्र, सन्त कवि लक्ष्मीनाथ गोसाईं, मैथिली अकादेमी
10. रमानाथ झा, कवीश्वर चन्दा झा, आचार्य रमानाथ झा रचनावली, वाणी प्रकाशन
11. जयदेव मिश्र, चन्दा झा (विनिबन्ध) साहित्य अकादेमी
12. डा. विजय कुमार ठाकुर, तिरहुत मे 1857क आन्दोलन एवं एकर वर्गीय आधार : एक विश्लेषण, मैथिली अकादमी पत्रिका, जनवरी-दिसम्बर 2007
13. मोहन भारद्वाज, रामकथाक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि आ चन्द्र रामायण, अनवरत पोथी।
14. मोहन भारद्वाज, बलचनमा : पृष्ठभूमि आ प्रस्थान (पोथी)
15. मोहन भारद्वाज, युग-प्रवर्तक कवि चन्दा झा
16. रमानाथ झा, कवीश्वर चन्दा झा, आचार्य रमानाथ झा रचनावली
17. मोहन भारद्वाज, युग-प्रवर्त्तक कवि चन्दा झा
18. रमानाथ झा, कवीश्वर चन्दा झा रचनावली
19. जयकान्त मिश्र, मैथिली साहित्यक इतिहास
20. वैह
21. शैलेन्द्र मोहन झा, विनिबन्ध, महेन्द्र झा, साहित्य अकादमी
22. आनन्द मिश्र, चन्द्रग्रहणक प्रसंग रमानन्द झा 'रमण'सँ भेंटवार्त्ता (भेंट घाँट पोथी)
23. गोविन्द झा, दर्पणक प्रतिबिम्ब, मिथिला दर्पणक भूमिका

■

ग्रहणसँ उग्रास धरि

कांचीनाथ झा 'किरण'क 1932 मे प्रकाशित उपन्यास 'चन्द्रग्रहण'क अभिप्राय बुझबाक लेल हमरा अन्ततः चन्द्रग्रहणेक शरणमे जाय पड़ल। ओना बहुतो आलोचक ओहि पर विचार केलनि अछि। किरणजी, स्वयं सेहो चन्द्रग्रहण लिखवाक उद्देश्य बुझौलनि अछि। मुदा ई सभ कथन किछुए दूर धरि संग चलि सकल। चन्द्रग्रहणक पाठ वस्तुतः एहि सभ कथनसँ आगू निकलि गेल अछि।

इतिहासकार जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे चन्द्रग्रहणक नाम नहि लेलनि अछि।[1] अमरेश पाठक 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन' मे ई मानलनि अछि जे छोट रहितहुँ 'चन्द्रग्रहण' मैथिली उपन्यास साहित्यमे नब अध्यायक श्रीगणेश करैत अछि। मुदा, अपन एहि मान्यताक पुष्टि लेल अमरेश पाठक किछु लिखब आवश्यक नहि बुझलनि अछि।[2] तहिना दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन इतिहासमे चन्द्रग्रहण के आरंभिक उपन्यासक विकसित रूप मानियो क' तकरा सम्पुष्ट नहि करैत छथि। आनन्द मिश्र, आ कांचीनाथ झा 'किरण' सेहो प्रकाशनक पचास वर्षक बाद रमानन्द झा 'रमण'क संग भेंटवार्ता मे चन्द्रग्रहणक प्रसंग अपन विचार रखैत छथि। कुलानन्द मिश्र किरणजी पर 1998 मे, 'विनिबंध' प्रस्तुत करैत अपन मन्तव्य किछु विस्तारसँ प्रकट करैत छथि। किरणजी कहैत छथि जे उपन्यास अथवा साहित्यक अन्य विधा लेल कोन-कोन साहित्यिक मानदण्ड आवश्यक छैक से ओहि समय हुनका ज्ञात नहि छलनि। मुदा एतबा धरि अवश्य बूझल छलनि जे एहन काज करी जाहिसँ मैथिल समाजमे जागरण अबैक आ साहित्य समृद्ध होइक। ओ कहैत छथि जे 'चन्द्रग्रहण' मे सामाजिक कुरीतिक समाधान अछि, राष्ट्रीय चेतनाक अनुगूंज सेहो अछि। हुनक कहब छनि जे ओहि मे नवजागरणक लहरिक पर्याप्त प्रभाव अछि। आनन्द मिश्र चन्द्रग्रहणक रचनाक तात्कालिक कारण सामाजिक सुधार आ मैथिलीमे उपन्यासक अभावक पूर्तिक प्रयास के मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे ओ नवजागरणक युग छल। सामाजिक पतन के रोकब साहित्यकारक प्रथम

दायित्व मानल जाइत छल। ओ मानलनि अछि जे मेलामे युवतीक अपहरण सनक घटना होयब बहुत स्वाभाविक रहैत छैक। किरणजी सिमरियाघाटक सन्दर्भ मे ओहि घटनाक वर्णन क' मैथिलक नैतिक अध:पतन के रोकबाक लेल ओकर उपयोग केलनि। सामाजिक सुधार लेल डेग उठौलनि। कुलानन्द मिश्र हिंदू-मुसलमानक सन्दर्भ मे तत्कालीन राष्ट्रीय चेतनाक अनुगूंज के स्वीकार नहि करैत छथि। तें ओ मानैत छथि जे ब्रिटिश शासनक 'डिवाइड एण्ड रूल' के नीतिसँ उत्पन्न मुसलमानक आक्रामकताक परिचिति आ प्रतिकारक दिशामे 'चन्द्रग्रहण' सँ लोकक उद्बोधन प्राय: सम्भव नहि भेलैक। एकर कारण मे ओ समकालीन आ बादक रचनाकारमे एहि सम्बन्धमे देखार सजगताक कोनो उन्मेष नहि होयब के रखैत छथि।[6] कुलानन्द मिश्रक एहि कथनक निरीक्षण परीक्षणक क्रममे हमर ध्यान हस्तलिखित पत्रिका 'मैथिली सुधाकर'मे चन्द्रग्रहणक प्रथम प्रकाशन पर भेल पाठकीय प्रतिक्रिया दिस जाइत अछि। एहि प्रसंग किरणजी कहैत छथि, 'प्रतिक्रिया त' तेहन भेलैक जे एक व्यक्ति, आब मैथिलीक प्रतिष्ठित ओ साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत साहित्यकार कहलथिन, ई घटना किरणजीक संग घटल अछि। एहि प्रतिक्रिया के निर्मूल करबाक लेल चन्द्रग्रहण के हम जेना तेना छपबा देल। प्रकाशनक बाद तँ पण्डितलोकनि नाराज भए गेलाह। हमरा धर्म विरोधी घोषित कए, जाति बहिष्कारक धमकी देल गेल। अन्त मे हमरा सफाइ देबय पड़ल जे 'चन्द्रग्रहण' धर्म विरोधी नहि, विधर्मी द्वारा हिन्दू नारीक कएल जाइत अपहरण के रोकबाक प्रयास थिक।'

जहाँ धरि हिन्दू-मुसलमानक साम्प्रदायिक समस्या पर मैथिली रचनाकार लोकनिक सजगताक प्रश्न अछि त' से एम्हर आबि क' बढ़ल अछि। तकर रचनात्मक अभिव्यक्तियो भेल अछि। मुदा जातीय कट्टरता पर त' मैथिलीमे शुरुहेसँ कथा-उपन्यास लिखल जाइत रहल अछि। तकर कुपरिणामक भीषण चित्रण कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' मे भेल अछि। एहि प्रसंग ई ध्यातव्य जे जातीय कट्टरता, साम्प्रदायिकता अर्थात् धार्मिक कट्टरताक दोसर रूप थिक। ई दूनू एक दोसराक सहायतासँ फड़ैत-फुलाइत अछि। आइ जँ मैथिल ब्राह्मणोमे अंतर्जातीय वा अन्तधार्मिक विवाह भ' रहल अछि त' से ओहि कट्टरताक कम होयबाक सूचक थिक। मैथिली उपन्यास मे मुसलमानक उपस्थिति सेहो बढ़ि रहल अछि। चन्द्रग्रहणसँ पूर्व प्रकाशित जीवछ मिश्रक 'रामेश्वर' मे पहिले-पहिल मुसलमान पात्रक पदार्पण भेल। लेखक उपन्यासमे मुसलमान के वेश्याक प्रेमी रूपमे उपस्थित केलनि अछि। 'वेश्या गुलाबी साड़ी पहिरने फूलक माला माथ मे जूड़ा पर लपेटने हुक्का पीबैत एक मुसलमान प्रेमी

सँ हँसी-ठट्ठा करैत छलि।' ओहि मे वर्णन अछि जे 'रामेश्वर ओहि वेश्याक छाती मे जोर सँ एक लात मारि सड़क दिस विदा भेलाह। ओ वेश्या वा ओकर प्रेमी मुसलमान टकटक रामेश्वर दिस तकितहि रहल केओ किछु बाजत तकर साहसो नहि भय सकलैक।' चन्द्रग्रहणमे मुसलमान गुण्डाक रूपमे आयल। दुनू गुण्डा मे सँ एक गोटाक नाम अफजल छैक। ओहिसँ पूर्व प्रकाशित रासबिहारी लाल दासक उपन्यास सुमतिमे खोदावक्स खाँ लेखनदारक संग जालू जोलहा, जलील जमादार, मिट्ठ मियाँ आदि नाम अबैत अछि। मुदा केवल नामेटा। 'रामेश्वर' मे जत' मुसलमान समूहवाचक रूपमे आयल, 'सुमति' मे तकरा व्यक्तिवाचक संज्ञा सेहो देल गेलैक। यात्रीक 'बलचनमा' धूमकेतुक 'मोड़ पर', साकेतानन्दक 'सर्वस्वांत' आ उपाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' से मुसलमान मैथिली समाजक अंग बनि गेल। उषाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' त' मिथिलाक अदौकालक वासिन्दा (डीही) लहेरी परिवारक कथा कहैत अछि।

चन्द्रग्रहणक प्रसंग विचार करैत कुलानन्द मिश्र मानैत छथि जे 'चन्द्रग्रहण' एक तरहेँ लोकक मेला-ठेलामे घुमबाक दुष्प्रवृत्तिये पर चोट करबाक हेतु लिखल गेल छल, जाहि दुष्प्रवृत्तिक विरुद्ध ओहि मे बहुतो बात कहल गेल अछि। 'चन्द्रग्रहण'क अभिप्राय बुझबाक क्रम मे मैथिली आलोचकलोकनिक, खास क' आनन्द मिश्र ओ कुलानन्द मिश्रक कथनसँ स्पष्ट अछि जे 'चन्द्रग्रहण'क जे किछु अभिप्राय अछि से मिथिलाक क्षेत्रीय परिधिए धरि सीमित अछि। क्षेत्रियो परिधि मे आर बहुत सीमित क्षेत्र मे अपन कारबार करैत अछि। कुलानन्द मिश्रक बदला आनन्द मिश्र ओकर परिधि के कने पैघ मानैत छथि। ओ मेला-ठेला मे घुमबाक दुष्प्रवृत्ति पर चोट करबसँ आगू जा क' मैथिलक नैतिक अध:पतन के रोकबाक सन्दर्भ मे ओकरा सामाजिक सुधार लेल उठाओल गेल डेग मानैत छथि, मुदा दूनू गोटे राष्ट्रीय चेतनाक अनुगूँज ओहिमे नहि पबैत छथि।

चन्द्रग्रहणक अध्ययनसँ स्पष्ट अछि जे ई जतबे घटना-प्रधान अछि ततबे चरित्र-प्रधान सेहो। घटनाक संयोजन सुगठित नहि अछि, किन्तु चरित्रक निर्माण अत्यन्त कुशलतासँ कयल गेल अछि। चन्द्रग्रहण किरणजीक प्रारंभिक कृति थिक आ ओ एकर भूमिकामे अपन लेखन-पटुताक सीमाक उल्लेख स्वयं कयने छथि। तेँ शिल्प आ भाषाक उत्कर्ष एहिमे नहि भेटैत अछि त' से स्वाभाविके अछि। मुदा, एहिठाम एकटा तथ्य पर ध्यान देब जरूरी अछि। किरणजी रचनाकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि अपन वैचारिकताक लेल। शिल्प ओ भाषा हुनक

आकर्षणक बिन्दु कहियो नहि रहल अछि। चन्द्रग्रहण सेहो शिल्प आ भाषाक लेल नहि, अपन वैचारिकताक हेतु महत्त्वपूर्ण अछि। एहि कृतिमे हुनक वैचारिकता चरित्रक निर्माणमे निहित अछि। एहिमे मानव-चरित्रक जे चित्र प्रस्तुत भेल अछि से द्वन्द्वात्मक अछि। से तरुण ओ नवीन ओ सुषमा ओ रजनीक संग विभिन्न युवक-लोकनिक आ स्त्रीगणक तुलनात्मक सोच ओ कार्य व्यापारसँ प्रकट भेल अछि। एहिमे सुषमा ओ रजनीक पिता सेहो छथि। दूटा गुण्डा जे मुसलमान थिक सेहो अछि। किरणजी विभिन्न घटना ओ कार्य व्यापार बीच तरुण ओ सुषमाक जे चरित्र प्रस्तुत केलनि अछि से सकारात्मक अछि। ओकर सभक आचार ओ विचार ओना पारंपरिक अछि मुदा ओहिमे परम्पराक जड़ तत्व विद्यमान नहि अछि। धर्म-कर्मक नाम पर विलासिता ओ अनैतिकताक पसरैत वातावरणक बीच ओकर सभक चरित्रक नैतिक आयाम एकदम स्पष्ट अछि। मनुक्ख लेल जत' शौर्य महत्त्वपूर्ण थिक ओतहि विवेक सेहो जरूरी अछि। संवेदनशीलता ओकर आवश्यक तत्व अछि। तरुण विवेकी, वीर आ संवेदनशील अछि। ओकरामे धैर्य ओ करुणा सेहो छैक। सुषमा सुन्दर, सरल, चपल ओ गंभीर अछि। मुदा बापक दुलारू हेबाक कारणे जिद्दी आ रूसनी अछि। तरुण अपन नवविवाहिता सुषमा के अपन मान्यताक प्रतिकूल रजनी संग मेला घुमबाक लेल जाइत देखि क्रोधित नहि होइत अछि। ओकर विवेक नष्ट नहि होइत छैक। ओ उत्पन्न स्थितिसँ साक्षात्कार कर' चाहैत अछि। कोनो आसन्न घटना-दुर्घटनाक प्रतिकार लेल सन्नद्ध होइत अछि। ओकर धैर्य देखबा जोकर अछि। तरुणक धैर्यक परीक्षा ओत' सँ प्रारम्भ होइत अछि जत' ओकर मित्र नवीन ओकरा कहैत अछि, 'तरुण! एम्हर आब' त'। एक वस्तु देख' माल अछि। कमाल अछि।' तरुण ओकरा झिड़की दैत कहि उठैत अछि, 'छिः तों' आब प्रचण्ड भेल जाइत छह।' एहि क्रममे तरुणक नजरि अपन नवविवाहिताक नाम सुनि शब्दक उत्पत्ति दिस दौड़ैत अछि। किरणजी तरुणक ओहिकालक मनोभाव उपस्थित करैत छथि, 'आगू दिशि नजरि उठबितहि टिसन पर गगनक चन्द्रभूता एक किशोरीक हाथ धयने एक युवती कुटिल गतिसँ जाइत देखि पड़लन्हि। किशोरीक अधर पर मृदुल मुसकानक सूक्ष्म रेखा, युवतीक अधर पर निर्लज्ज हँसी स्पष्ट छल। तरुणक माथ खसि पड़ल। बूझि पड़लन्हि जेना पैर तर पृथ्वी नहि। ऊपर आकाश नहि। किन्तु बहुत शीघ्र ई भाव बदलि लेल। नवीन लोकनि सिकार देखबा मे एहन मस्त छलाह जे तरुणक ई भाव विपर्यय नहि देखि सकलथिन्ह।' एही क्षण तरुण सिमरिया जेबाक निर्णय लैत अछि। नवीनसँ कहैत अछि, 'नवीन

हमहूँ चलू?' एहि पर नवीन अपन मनोभावक अनुकूल कहि उठैत अछि, 'एकाएक बाबाजीक चित्त डोलल! माले तेहेन छै।'

लगभग समान वएसक दू नवयुवक ओ नवयुवतीक माध्यमसँ मनोभावक अन्तर देखा किरणजी ओहि क्षण सुन्दर ओ कुरुप मानव चित्त के सुस्थापित क' दैत छथि। नवयुवक लोकनिक मामिला मे त' ओ वार्तालापक सहारा लेलनि अछि मुदा नवयुवतीक मामिला मे केवल दुनूक 'मृदुल मुसकान' ओ 'निर्ल्लज हंसी' देखा क' काज चला लैत छथि। एहिठाम कने विलमि क' तरुणक सिमरिया जेबाक निर्णयक सेहो जाँच-पड़ताल क' ली। आगूक आसन्न घटना-दुर्घटना के कात क' की युवती जे रजनी छलि ओकर कुटिल गति ओ निर्लज्ज हँसी आ नवीनक कुरूप चित्तक परिचय की तरुण के सिमरिया यात्रा लेल प्रेरित नहि क' सकैत अछि? ई जानि क' जे एहन चरित्र सभक बीच ओकर निर्दोष किशोरी नवविवाहिता सेहो यात्रा पर अछि, की ई सभ देखि-बूझि क' जँ ओ तैयो अपन गन्तव्य सीतेमढ़ी चल जइतय त' की ओ विवेकी कहा सकैत छल? तरुणक विवेकपूर्ण निर्णयक औचित्य स्थापित करैत एहि प्रसंग के राखि ओ एकटा काज आर करैत छथि। सुन्नर (नीक मनुक्ख) आ अधलाह मनुक्खक भेद के सेहो सहज भावसँ उपस्थित क' दैत छथि। की तरुणक स्थान पर नवीन अपन आचरण द्वारा ओ कृत्य क' सकैत छल जे आगू जा क' तरुण केलक? निश्चित रूपसँ एकर जबाब नकारात्मक होयत। जे पुरुष आनक स्त्री के भोगवादी दृष्टिसँ देखैत ओकरा 'माल' बुझैत अछि से आनक कोन कथा अपनहुँ स्त्री के बेर पड़ला पर अपहरणकर्त्तासँ रक्षा नहि क' सकैत अछि। प्रसिद्ध आलोचक रमानाथ झा विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' सँ उदाहरण द' कहैत छथि, 'पुरुष पौरुष धारण कइये क' पुरुष बनैत अछि मात्र पुरुष रूपमे जन्म लेलासँ नहि। हम सभ मेघ के जलद (पानि देबयवला) तखने कहैत छी जखन ओ जलक वर्षा करैत छथि; नहि त' ओ धूम-राशि मात्र होइछ। हुनक (विद्यापतिक) प्रेमगीत सभ मे वनितागण 'सत्य पुरुषे' सँ अनुराग करैत छथि, जिनका विद्यापति सुपुरुष कहैत छथि।'

आगू जा क' अपस्याँत तरुण अपन स्त्री के रातिमे तकैत देखैत अछि जे दू टा मुसलमान दू युवती के अपहरण क' ल' जा रहल अछि त' ओ ओकरा सभ के ललकारैत अछि। ओ देखने रहय जे दूनू मे सँ एक के हाथ मे छूरा छैक तैयो ओ भयभीत नहि होइत अछि। दूनू गुण्डा के जान ल' भगबाक लेल कहैत अछि। तखनहिं बिजली जकां छूरा चमकैत अछि। तरुण सहमि जाइत अछि।

नारीक रक्षा लेल आवाज लगबैत घायल भ' भूमि पर खसि पड़ैत अछि मुदा एसगर होइतो आ छूरा देखियो क' प्राणक मोहमे नहि पड़ि दू व्यक्तिसँ भीड़ि जायब तरुणक पौरुषक प्रमाण थिक। ओहि क्षण जखन ओ दूनू गुण्डा तरुण के सांघातिक रूपसँ घायल क' भयभीत युवती सभ के पकड़ि ल' जाय लागल त' दस-बारह व्यक्ति वन्देमातरम् कहैत ओहिठाम पहुँचि जाइत अछि। दूनू गुण्डा पड़ाइत अछि। बाद मे पता चलैत अछि जे ओ व्यक्ति सभ कांग्रेसक स्वयंसेवक रहय। ओ सभ दुनू युवती के अपना संग ल' लैत अछि आ तरुणक इलाज लेल ओकरा अस्पताल ल' जाइत अछि। अस्पतालसँ आवश्यक इलाजक बाद दू गुट मे बँटि ओ सभ तरुण के आ सुषमा-रजनी के सिमरिया अनैत अछि। ओकरा सभ के बूझल छैक जे दूनू युवतीक माय-बाप ओ तरुणक सासु-ससुर सिमरिये मे भेटता। ओकरा सभ के इहो बूझल छैक जे सुषमा तरुणक स्त्री थिकैक। ओ सभ फराक-फराक सुषमा-रजनी आ तरुण के सिमरिया टीशन पर उतारैत अछि। टीशन पर ओ सभ ओकर माय-बाप के ताकि सुषमा-रजनी के सुनझाब' चाहैत अछि। सुषमा-रजनीक हाल जानि स्त्रीगण सभ व्यंग्य करैत अछि, 'बाप माय चढ़बे ने कयल ता अहाँ सभ की अल्लग-अल्लग क' चढ़' गेलहुँ?.... मेला मे ठेला करै ले।' युवक सभ सेहो आपस मे गप करैत अछि। अपन कुरूप चित्त के आर विकृत रूपसँ देखार करैत अछि। ओ स्वयंसेवक सभ घायल तरुण के सिमरिया ल' जा ओकर जयजयकार करैत अछि। ओकर शौर्यक गाथा सुनेबा मे ओकर सभक उद्देश्य तरुणक चरित्रक व्यापकता आ समाज-सापेक्ष विचार ओ आचरण के प्रकट करब छल। सम्बोधनमे भाव करुणासँ परिपूर्ण आ तटस्थ अछि। कतहुसँ ओहिमे हिन्दू गौरवक भावना व्यक्त नहि भेल अछि।

दू टा मुसलमान गुण्डाक द्वारा हिन्दू युवतीक अपहरणक प्रयास, कांग्रेसी स्वयंसेवक सभक युवतीलोकनिक रक्षा मे योजनाबद्ध रूप मे तत्पर होयब, वंदे मातरम्क ध्वनि, तरुणक जयजयकार करब ओहि कालक राष्ट्रीय वातावरण के प्रस्तुत करैत अछि। ई ओ समय छल जखन हिन्दू-मुस्लिम सौहार्दक दुहाइ दिअ वला कांग्रेसक प्रस्ताव ओ प्रेस वक्तव्यक बावजूद साम्प्रदायिक जहर अबाध रूपे पसरि रहल छल। प्रसिद्ध इतिहासकार विपिन चन्द्र अपन पोथी 'आधुनिक भारत मे साम्प्रदायिकता' मे कहैत छथि जे साम्प्रदायिकताक मतलब एहि बात पर विश्वास करब थिक जे कोनो खास धर्म के मानैबलाक सामाजिक, आर्थिक ओ राजनीतिक हित सेहो समान होइत अछि। एहि धारणा के अनुसार कोनो धर्मक सभ अनुयायीक नहि केवल धार्मिक हित साझी होइत अछि अपितु धर्मनिरपेक्ष हित अर्थात् ओकर आर्थिक, राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक हित सेहो

साझी होइत अछि। इतिहास कहैत अछि जे मुस्लिम साम्प्रदायिक भावना हिन्दू साम्प्रदायिक भावनाक प्रतिक्रिया मे उत्पेन्न भेल। दूनू साम्प्रदायिकता मे क्रमशः खतरनाक रूपसँ वृद्धि होइत गेल। 1925 मे हेडगेवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघक स्थापना क' चुकल छला। 1930क बाद मुस्लिम लीग एक फराक मुस्लिम राज्यक लक्ष्य दिस अग्रसर भेल। 1931 मे कानपुर रॉयट्स इन्क्वायरी कमेटीक रिपोर्ट आयल जे साम्प्रदायिक समस्या पर एक अत्यन्त प्रामाणिक अभिलेख थिक। ओहि अभिलेखमे ब्रिटिश नीतिक भूमिका पर चर्चा अछि। 1932 मे सरकार 'कम्यूनल अवार्ड'क घोषणा केलक जाहिमे मुसलमान सभ के केन्द्रीय विधायिकामे तैंतीस प्रतिशत ओ एक तिहाइ सीटक आश्वासन देल गेल। एहि सँ पूर्वे सँ सरकार साम्प्रदायिक एवं ब्रिटिश स्वामित्ववला समाचारपत्र सभ के बलात्कार, अपहरण और हत्या सहित सभ तथाकथित साम्प्रदायिक घटना सभक सनसनीखेज रिपोर्ट छपबाक खूजल छूट देने रहय।

एहन साम्प्रदायिक विद्वेष ओ धार्मिक आधार पर लोकक साम्प्रदायिक भावना के भड़कबैबला वातावरणमे पच्चीस वर्षक नवयुवक किरणजी अपन उपन्यासमे ओहि स्थिति-परिस्थितिक वस्तुपरक उपस्थापन केलनि। चन्द्रग्रहण मे एहन कोनो स्थल नहि अछि जत' ओ कथावाचक रूपमे अथवा अपन पात्रक माध्यमसँ हिन्दू साम्प्रदायिक भावना ओ मुसलमानक प्रति विद्वेष के प्रकट केने होथि। जत' कतहु एहन कोनो स्थल आयलो अछि ओत' अद्भुत संयम ओ संतुलन कायम रखने छथि। स्वयंसेवक मे सँ एक देवेन्द्र मेलामे लोककेँ संबोधित करैत बाजि रहल अछि, 'हमर मिथिला मे पर्व आदिक अवसर पर जे मेला लगैत अछि से प्रायः सभ के ज्ञात होयत। किन्तु ज्ञात भेनहु एहि पर विशेष ध्यान नहि देने होयब। मेलाक अवसर पर चोर गुण्डा उठि बैसैछ। बाबाजी महात्माक रूप धय बहुतो स्त्रीक सत्यानाश करैत अछि। भद्र ललना सभ पर पाप दृष्टि दय तन मन धन सौं हुनका सभ के कलुषित करबाक सतत् चेष्टामे रहैछ। प्रतिवर्ष कतेको युवती बालिका धर्म करय विदा होइत छथि। किन्तु बाटहिंमे मुसलमानिनी बनि नारकीय जीवन बितवैत छथि, अथवा शहरक चानिनी महल्ला के सुशोभित करैत छथि। दुर्भाग्यसँ प्रतिष्ठित सज्जनक ध्यान एहि दिशि नहि आकर्षित होइछ। हमर प्रिय बन्धुवर तरुण बाबूक ध्यान एहि दिशि पड़ल। किन्तु दीन छात्रक ओकाइते कतेक। तथापि हिनक ध्यान सर्वदा एहि दिशि रहैत छल।'

हम सभ जनैत छी जे किरणजी स्वतंत्रता आंदोलनसँ जुड़ल छला। चन्द्रग्रहणक रचना काशीमे ओ तखन कयलनि जखन एहि आन्दोलनमे हुनक सक्रियता बढ़ि गेल छल। मदनमोहन मालवीयसँ हुनका निकट सम्पर्क रहनि। स्वतंत्रता-आंदोलनक हिंदूवादी धाराक गतिविधिसँ ओ नीक जकाँ परिचित रहथि। चन्द्रग्रहणमे सेहो एकर स्वर प्रतिध्वनित भेल अछि। मुदा, एहि उपन्यास मे जे घटना वर्णित अछि तकरा ओ अत्यंत कुशलताक संग धार्मिक मानसिकताक कोलासँ निकालि लेलनि अछि। अफजल आ ओकर संगी मुस्लिम अपहरणकर्त्ता अछि। अल्पसंख्यक होयबाक कारणे ओकरा संख्या बलक आवश्यकता छैक, आ तेँ ओ युवती सभक अपहरण करैत अछि। ओकर एहि सांप्रदायिक दृष्टिकोण के अंग्रेजी शासनक समर्थन प्राप्त छैक तकर ज्ञान होइत अछि दुनू अपहरणकर्त्ताक गपशपमे आयल बड़ाबाबूक सन्दर्भसँ। तात्पर्य ई जे अपहरण के साम्प्रदायिक सोचक परिधिमे देखबाक तत्कालीन हिंदू दृष्टिक यथार्थवादी उपस्थापन उपन्यास मे भेल अछि। किन्तु, किरणजी एकरा साम्प्रदायिक सोचक परिणामसँ बेसी युवामनक विपथगामी आचरण के मानैत छथि। यैह कारण थिक जे ओ मुस्लिम युवकक किरदानी के उजागर करबाक संगहि हिंदू युवा-मनक दुर्गन्धि के सेहो देखार करैत छथि, 'दोस्त! ई सभ बड़का फन्ना लगौलक अछि। अपने सभ क्यो छौड़ी सभ के ठकि क' ल' जाइत हैत। दोसर दल छोड़ा लैत हेतैक। छौड़ी सभ के की पता! बुझैत हेतीह जे ई सभ नीक लोक अछि। रक्षा केलक। बाद मे अपन लोक लग पहुँचा दैत हेतैक। मजो लुटलक। और नामो भेलैक। आ कि नहि!' दोसर युवक ताहि पर बजैत अछि, 'आर की! सैह करिते हैत की?' एहि पर पहिल बाजल, 'आब हमहूँ सभ सैह करब। की नहि! एहि पर दोसर कहैत अछि, 'जरूर! एना त' केवल नयन सुखेटा।'

एहि प्रकारे किरणजी चन्द्रग्रहणमे स्वतंत्रता आंदोलनक संग पनपैत-फुलाइत साम्प्रदायिक आचार-विचार के युवा-मनक विकृति मानैत छथि। आशय ई जे धार्मिक कट्टरताक नियमन सामाजिक चेतनाक विकाससँ करय चाहैत छथि। अफजल सनक युवकक दिशा भ्रष्ट आचरण के विचार-विवेकक नैतिक मूल्यबोधसँ जोड़ि क' सही रस्ता देखबैत छथि। किरणजी जनैत रहथि जे स्वतंत्रता आन्दोलन लेल युवक सभमे चारित्रिक दृढ़ताक कतेक प्रयोजन छैक। ओ ईहो जनैत छला जे चारित्रिक दृढ़ता मनुष्यताक आवश्यक लक्षण थिक। कुलानन्द मिश्र, आ अन्य आलोचकलोकनि सेहो, चन्द्रग्रहणक गठन के संयोग-प्रधान मानैत मुसलमान अपहरणकर्त्ताक उपस्थिति के औपन्यासिक

शिल्पक कमजोरी मानैत छथि, मुदा ओ ई बिसरि जाइत छथि जे यथार्थवादी उपन्यासकार किरणजी तत्कालीन यथार्थक अवहेलना नहि क' सकैत छला। तेँ उपन्यासमे साम्प्रदायिक रंगक कालिमा अछि, किन्तु ओकर पर्यवसान चारित्रिक उदात्तताक श्वेत-धवल प्रकाशमे भेल अछि। चन्द्रग्रहण ब्रिटिश शासनक विभाजन आ शासन करबाक नीतिसँ उत्पन्न मुसलमान वर्गक आक्रामक सोच पर आधारित नहि अछि। यदि किरणजी ओहि सोचक चित्रण करितथि त' हुनका ओकर सामानान्तर हिन्दू आक्रामकता के सेहो चित्रित कर' पड़ितनि। से हुनक अभीष्ट नहि रहनि। हुनक अभीष्ट त' राष्ट्रीय चेतनासँ अनुप्राणित भ' मानवीय चरित्रनिर्माण पर बल देब छल। स्वाभाविक अछि जे तेँ मुसलमान गुण्डा द्वारा अपहरणक प्रतिकार लेल ओ हिन्दू साम्प्रदायिक सोचसँ लैस नायक के प्रस्तुत नहि केलनि। साम्प्रदायिक सोच एक संकीर्ण सोच थिक तेँ एहन नायक मुसलमानसँ छुआ गेला पर अपन स्त्री के अपैत बूझि फेर ओकरा स्वीकार करबामे तारतम्य करितय। तिरस्कारो क' सकैत छल। तिरस्कारक' बहुतो कारण ओ ढ़ंग भ' सकैत अछि। घरमे राखियो क' घरवाली बनाइयो क' मुसलमान लगसँ छूटि, घर-घूरल पत्नीक तिरस्कारक ढ़ंग देखबैबला बहुतो कथा भारतीय साहित्यमे बादमे लिखायल। उदाहरणस्वरूप राजेन्द्र सिंह वेदीक 'लाजवन्ती' कथा के देखल जा सकैत अछि। ओहिमे एहन स्त्री सभ के 'घरमे बसाउ', 'हृदयमे बसाउ' आन्दोलनक कार्यकर्त्ता सेहो अपहृता पत्नीक घर-घुरला पर ओकरा सहज भावसँ स्वीकार नहि क' पबैत अछि। 'देवी' बना क' ओकर स्पर्शो सँ परहेज कर' लगैत अछि। 'चन्द्रग्रहण'क समकालीन मैथिली उपन्यास 'कन्यादान' मे नवविवाहिता स्त्रीक अशिक्षिता होयबाक कारणे पति ओकर परित्यागक' दैत छैक। अपन स्त्रीक संग अतिवादी व्यवहारक बदला सम्मत्त व्यवहार कर' बला नायकक सृजन किरणजीक प्रगतिशील सोच के प्रमाणित करैत अछि। तेँ कुलानन्द मिश्र गुण्डाक मुसलमान होयब के संयोग पर आधारित मानि जेना ग्रेस मार्क द' किरणजीक प्रगतिशीलताक रक्षा करैत छथि तकर आवश्यकता हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि।

एहन बात नहि अछि जे खाली तरुणे अपन नवविवाहिताक प्रति विवेकपूर्ण मानवीय व्यवहार देखैलक। सुषमा सेहो अपन गलती, अपहरण आ पतिक जान जोखिममे पड़ि गेलासँ पश्चातापक विकराल ज्वालामे जरैत असह्य यंत्रणा भोगलक। अपन पतिक एहन अवस्थाक कारण अपना के मानि सुषमाक हृदय चूर-चूर भ' गेलैक। जीवन-मृत्युक बीच झुलैत तरुणक सद्व्यवहार, गलती लेल

क्षमा करब आ सुषमाक संग किछुओ दिनक मिलनक आकांक्षाक अभिव्यक्ति सुषमाक धैर्यक बान्ह के तोड़ि देलकैक। शोकक बेग आँखिसँ उमड़ि पड़लैक। पति-पत्नीक एहने भावपूर्ण क्षणमे किरणजी काव्यात्मक गद्यक माध्यमसँ चन्द्रग्रहणक मर्म के उद्घाटित करैत छथि, 'प्रकृति जनु कानि उठल। पक्षी चित्कार कय उठल। क्रूर दिवाकरो एहि दृश्य के नहि देखि सकलाह। दिग्वार विलासिनीक मुंख श्याम भै गेलैक। चन्द्रमा शोक शान्त करबा लेल उदय लेल। किन्तु सुषमाक हृदयसँ बहरायल शोक-राशिमे पड़ितहिं अपनै नष्ट होबय लगलाह। शरीर श्याम भए गेलन्हि। मेलामे गर्द भै गेल। 'गहन लागल' 'गहन लागल'। किरणजी कहैत छथि जे चन्द्रमा सन किशोरी सुषमाक शोकमे जखन गगनक चन्द्रमाक शरीर श्याम भ' गेलनि वस्तुत: गहन तखने लागल। सुषमा के गहन शोकसँ उग्रास अपन पतिक एकनिष्ठ सेवासँ प्राप्त भेलनि। ओ अपन पतिक प्राण घुराय अनलनि मुदा सुषमाक गंगाजली रजनी गंगा स्नान कइयो क' अपन चित्त-वृत्तिक कारण पतिक द्वारा अबडेरल गेली। किरणजी देखबैत छथि जे अन्तत: स्वस्थ भेला पर दू वर्षक बाद तरुण सुषमाक मधुर मिलन भेल। सुषमा एहि मिलन के अविस्मरणीय बनेबाक लेल तरुणक आग्रह पर गीत गौलनि, 'आजु सफल दिन मोर।'

स्पष्ट अछि जे 'चन्द्रग्रहण' अपन लेखनक पचहत्तरि वर्षक बादो ओहिना प्रासंगिक अछि। कहबाक त' ई चाही जे रचनाकालसँ बेसी प्रासंगिक आइये अछि। भारतमे क्षेत्रीय आ राष्ट्रीय दृष्टिकोणक समभावक समस्या आइ अधिक दारुण भ' गेल अछि। संविधानक अनुसार भारत एकटा संघ अछि, मुदा से केवल कहबाक लेल। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, औद्योगिक विकासक स्तर पर सभ क्षेत्रक समान स्थिति नहि अछि। समान स्थिति हो से ने दृष्टिकोण अछि आ ने ताहि लेल उपयुक्त प्रभावकारी प्रयास भ' रहल अछि। भारतीय विकासधारामे मिथिलाक पछुआयल रहब आइयो चिन्ताक विषय अछि। तहिना चिन्ताक विषय भारत कि मिथिलामे आइ हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिकताक प्रसार सेहो अछि। किरणजी एहि मादे बेसी चिन्ताकुल छला। यैह कारण थिक जे 'चन्द्रग्रहण'क प्रारम्भ मिथिलाक पछुआएल रहबाक बिन्दु पर भावप्रवणताक परिवेशमे भेल अछि। किन्तु जेना-जेना उपन्यास बढ़ैत गेल अछि किरणजीक भावुकता वैचारिकताक ठोस धरातल पर अबैत गेलनि अछि आ अन्तत: मानवीय चरित्रक दृढ़ता आ उदात्ततामे उपन्यासक समाप्ति होइत अछि। जकरा धार्मिक कट्टरता अथवा साम्प्रदायिकता कहल जाइत छैक से वस्तुतत: स्वार्थपरक राजनीतिसँ अथवा अज्ञानतामूलक उछाहसँ प्रेरित रहैत अछि। गुण्डा जहिना

मिथिला मे अछि तहिना मिथिलाक बाहरो। गुण्डा अथवा सोचक विभ्रम के जहिना मिथिलामे दूर करबाक आवश्यकता छैक तहिना सौसे भारतमे अथवा सौंसे विश्वमे। एहि प्रकारे चारित्रिक विकासक आवश्यकता व्यापक रूपमे छैक। आइ जे भारतक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति अछि ताहिमे मनुष्यक उदात्त भावना विलुप्त अछि। यैह विन्दु थिक जाहिठाम 'चन्द्रग्रहण' मोन पड़ैत अछि। ओहिमे क्षेत्रीय समस्याक समाधान राष्ट्रीय स्तर पर सेहो प्रकारान्तरसँ कहल गेल अछि। वस्तुत: 'चन्द्रग्रहण' अपन कालक स्थिति आ समस्याक साक्षात्कारक देन थिक किन्तु ओ अपन प्रभावमे कालजंयी भ' गेल अछि। आइ ओकरा पढ़बाक आवश्यकता बहुत बेसी अछि।

सहयोगी पोथी/निबन्ध/वार्त्ता आदिक विवरण :

1. Dr. Jaykant Mishra, A History of Maithili Literature,
2. डॉ. अमरेश पाठक, मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन
3. डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', मैथिली साहित्यक इतिहास
4. डॉ. रमानन्द झा 'रमण' भेंट घाँट, चन्द्रग्रहणक प्रसंग किरणजीसँ भेंट
5. डॉ. रमानन्द झा 'रमण' भेंट घाँट, चन्द्रग्रहणक प्रसंग आनन्द मिश्रसँ वार्त्ता
6. कुलानन्द मिश्र, विनिबन्ध, कांची नाथ झा 'किरण'
7. रमानाथ झा, विनिबन्ध, विद्यापति
8. विपिनचन्द्र, आधुनिक भारत मे साम्प्रदायिकता

■

बुच्चीदाइक पराभव

हरिमोहन झा जहिया अपन प्रसिद्ध उपन्यास 'कन्यादान' लिखब प्रारम्भ कयलनि तहिया महज एक्कैस बरखक नवयुवक छला। हुनकर जन्म 1908 मे भेलनि आ कन्यादान धारावाहिक रूपमे 'मिथिला' पत्रिकामे 1929 मे छपब प्रारम्भ भेल। ओही वर्ष ओ बी.ए. ऑनर्स सेहो केलनि अंग्रेजीमे। हिनकर पहिल कविता 'सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक' सेहो 1929 मे छपल। ई मिथिला पत्रिकाक प्रथम अंकमे छपल छल। पत्रिकाक दोसर अंकमे हरिमोहन बाबूक दोसर कविता आयल 'कन्याक नीलामी डाक'। मिथिलाक पहिल अंकमे एक लेख सेहो छपल छल 'स्त्री शिक्षाक वर्तमान दशा'। 'सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक' कवितामे हरिमोहन बाबू कहैत छथि,

बाहर बाजथि 'तिलक-प्रथा के बिष सन जानू'।
घरमे बाजथि, दुइ हजार सौं कम नहि आनू।।
बाहर बाजथि छुआछूत कैं शीघ्र हटाउ।
घरमे बाजथि ई चमैनि थिक, दूर भगाउ।।

ई कविता सभ, निबन्ध आ 'कन्यादान'क प्रारम्भ आ हरिमोहन बाबूकेँ अंग्रेजी ऑनर्स ल' कए बी.ए. पास करब संयोगे मात्र नहि छल। आलोचक मोहन भारद्वाज कहैत छथि 'एहिसँ हिनक अध्ययन एवं विचारक दिशाक ज्ञान होइत अछि, दूनूक एकसूत्रताक पता चलैत अछि। प्रो. हरिमोहन झाक लेल पद्य ओ गद्य महत्वपूर्ण नहि अछि, कथा ओ कविता महत्वपूर्ण नहि अछि महत्वपूर्ण अछि सामाजिक स्थिति।'

हरिमोहन झाक बियाह सुभद्रा देवीसँ सोलहे वर्षक अवस्थामे 1924मे भ' गेल छलनि। ओ 1932 मे दर्शनशास्त्र मे एम.ए. क' लेलनि आ 1933मे बी. एन. कॉलेजमे दर्शनशास्त्रक व्याख्याता भ' गेला। 1948 मे ओ पटना कॉलेज आबि गेला। कन्यादान पुस्तकाकार छपल 1933 मे आ द्विरागमन 1943 मे। एहि

सभ वृत्तांतमे एकटा बात जे हमरा ध्यान देबा योग्य बुझा रहल अछि–ओ थिक, हरिमोहन बाबू जखन अंग्रेजी पढ़ैत छला तखन कन्यादान लिखब प्रारम्भ केलनि आ जखन दर्शन शास्त्रक व्याख्याता भ' गेला त' द्विरागमन लिखलनि। एतबे नहि कन्यादानक प्रारम्भिक तीन परिच्छेद तथा शेष नौ परिच्छेदक बीच सेहो तीन वर्षक अन्तराल अछि। हमरा जनैत हरिमोहन बाबूक दूनू उपन्यासक रचनामे हुनकर बएस आ तत्कालीन अध्ययनक भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। एकटा तत्त्व आर महत्त्वपूर्ण अछि ओ थिक–पिता जनार्दन झा 'जनसीदन'सँ पाओल विषय ओ विचार, जकरा ओ विस्तार देलनि आ आगू बढ़ौलनि।

हरिमोहन झा 'कन्यादान' किएक लिखलनि? ओकर पाछाँ कोन [illegible]क तत्त्व छलनि? 'कन्यादान'क प्राक्कथनमे लेखक स्वयं कहैत छथि, 'आईसँ तीन वर्ष पहिने 'मिथिला' नामक एक मासिक पत्रिका बहराएल छलि। ओकर प्रकाशक छला श्रीयुत बाबू रामलोचन शरण और सम्पादक-मंडलमे छला श्रीयुत बाबू भोलालाल दास बी.ए., एल.बी। एक दिन सन्ध्या समय भोला बाबू आबि ठोंठ पर सवार भ' गेलाह जे 'मिथिला'क अन्तिम फर्मा अहाँक लेख वेत्रेक रुकल अछि, झट द' किछु लिखि दियौक जे काल्हि छपि जाय। हमरा रातिमे जे किछु फुरल से लिखि लाखि कए हुनका दए देलिऐन्हि। वैह भेल 'कन्यादान'क श्रीगणेश। तकरा बाद जहिया-जहिया भोला बाबूक तगादा भेल गेल, थोड़ेक लिखि पिण्ड छोड़बैत गेलहुँ। चारि-पाँच अंक धरि यैह सिलसिला चलल।' राजमोहन झा सेहो एहि प्रसंग कहैत छथि, 'कन्यादान'क आरम्भिक तीन परिच्छेद तँ मइ आ सितम्बर 1929क बीच लिखल गेल, शेष नौ परिच्छेद जुलाइ 32सँ मइ 33क मध्य लिखल गेल।' प्रथम अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक कथा-विभागक अध्यक्षीय भाषणमे लेखक 'कन्यादान'क जन्मक प्रसंग कहने छथि–'ओहि समय हमर छोट बहीन (दिवंगता सोन दाइ)क कन्यादानक हेतु बाबूजी चिन्तित रहथि। कतहु जोगारे नहि लगैन्ह। एक दिन गामपर हमर माय अड़ोसिन-पड़ोसिनसँ ओहि विषयमे गप्प करैत रहथि। आवेशरानी, ढुनमुनकाकी, दुलारमनि पिउसी-सभ ओहीमे भेटि गेलीह। हमरा ओ गप्प तेहेन प्रियगर लागल जे हम चुपचाप सभटा नोट क' लेलहु आओर वैह गप्प रंग-पालिश चढ़ा 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' शीर्षकसँ 'मिथिला'मे छपक हेतु द' देलियैक। यैह भेल 'कन्यादान'क श्रीगणेश। ताहि समय हमरा ई भान नहि रहय जे ई गप्प आगाँ जाक' कोन आकार-प्रकार ग्रहण करत। केवल पेनी टा छानि देने रहियैक।'' ओही सम्मेलनमे हरिमोहन बाबू इहो कहने छला जे 'कन्यादान' लिखबाक प्रेरणा ओ अपन पिता जनसीदनजीसँ ग्रहण कयलनि।

डा. रमानन्द झा 'रमण' कहैत छथि जे, 'जनसीदन जीक 'निर्दयी सासु'क धारावाहिक प्रकाशन 'मिथिला-मिहिर'मे 17 अक्टूबर 1914 सँ 28 नवम्बर 1914 ई. धरि भेल तथा 'पुनर्विवाह'क प्रकाशन मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनीसँ 1926 ई. भेल। निर्दयी सासु तथा पुनर्विवाहक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे उपन्यासकार सामाजिक समस्याकेँ स्वर देल अछि। समाजमे पसरल विकृति दिस लोकके ँ ध्यान आकृष्ट कयल अछि। वर्तमान शतीक आरम्भमे नारी जागरणक हेतु आन्दोलन चलि गेल छल। बहुतो पण्डित स्त्री-शिक्षाक विरोधी छलाह किन्तु जनसीदनजी समाजक अभ्युदय हेतु नारी शिक्षाक प्रचार-प्रसार आवश्यक मानैत छला। 'निर्दयी सासु'क ज्योतिषी चिन्तामणि झा अपन कन्या शारदाकेँ एतेक अवश्य पढ़ा दैत छथि जे ओ मिथिलाक्षर ओ देवाक्षर लिखि-पढ़ि सकैछ। किताबक सन्देश अशिक्षिता धरि पहुँचा सकैछ। एहिना हरिसिंहदेवी व्यवस्थाकेँ वर्तमान कालक लेल लाभप्रद नहि मानि घटकसँ कहबाओल अछि-'हरिसिंहदेवी कतय लेने फिरैत छी, कन्या जाहिसँ सुखमे रहय से कर्तव्य थिक।' तहिना पुनर्विवाहमे ज्योतिषीक आँखिक पुतरी दयानाथक दशा देखि कलाधर ज्योतिषीकेँ कहैत छथि-'भाइ दोसर विवाह नहि करितहुँ सएह नीक।'

निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह उपन्यासक अध्ययनसँ स्पष्ट होइत अछि जे तत्कालीन मिथिलाक ब्राह्मण समाजमे हरिसिंहदेवीक पूछ कम हुअ' लागल छल। हरिसिंहदेवी अर्थात् कुल-मूल, वंशक बदलामे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल आ धनिक वरक कद्र बढ़ि रहल छल। निर्दयी सासुमे ज्योतिषीक स्त्री कहैत छथि, 'जेहने हमर कन्या अछि तेहने वर चाही। हम जमाय सुन्दर ओ धनिक चाहै छी। तेहेन जौं नहि आनब तँ हम बेटीक विवाह नहि करब।' ज्योतिषी रजधानीमे रहि कमाइत छला आ आब गाम रह' लागल रहथि। कन्याकेँ पढ़ब-लिखब सिखौलनि। दू वर्षक भीतर यशोदाकेँ तिरहुता, हिन्दी ओ मामूली देशी गणितक बोध उत्तम रूपेँ भ' गेलैक। एहेन कन्या यशोदा लेल स्त्रीक इच्छानुसार ज्योतिषी हरिसिंहदेबीक परबाहि नहि करैत सुन्दर, सोलह वर्षक आ अंग्रेजी पढ़ैत वर अनलनि। ओ पंजीबद्ध नहि रहथि। पुरान विचारक लोक सभ 'समय देखि जी मसोसि रहि गेला।' धन ओ वरगुण सैह सभसँ उपर मानल जाय लागल रहय। अयोध्यानाथ मिश्र जे जातिसँ न्यून रहथि, पुतहुकेँ देखितहि तृप्त भ' गेल रहथि। बजलाह 'देब-लेब किछु छैक। बेटा-बेटी बेचने ककरो सम्पत्ति भेलैक अछि। मनुष्य नीक होयबाक चाही।' ओहिकालसँ पूर्व 'बिकौआ'क अनघोल छल।

कुल-मूलबला अपन 'हरिसिंहदेवी'केँ भजा रहल रहथि। बिकौआकेँ ओहीसँ आमद होइन। ओही ल'क' लहक-चहक। मुदा पंजी व्यवस्थाक गधकिच्चनि, परदेशक सम्पर्क ओ तत्कालीन परिस्थितिक संग अंग्रेजी शिक्षाक प्रसारक कारणें क्रमशः व्यक्ति-गुण तत्त्व, जाति-वंश-तत्त्वक स्थान लेबाक ओरिआओन प्रारम्भ क' देने रहय। वरेक गुण-तत्त्व दिस ध्यान नहि गेल रहय कन्याक गुणक विचार सेहो हुअ' लागल छल। पुनर्विवाह उपन्यासक आरम्भे अही विमर्शसँ होइत अछि। रूप पैघ की गुण? और अन्ततः गुणक महत्ता उपन्यासमे सिद्ध कयल गेल अछि। स्त्रीक रूप ओ पुरुषक वंशकेँ गुण मानबाक परम्परा पर आघात करैत जनसीदनजी स्त्री-पुरुषक शील-स्वभावकेँ मान्यता दैत छथि। मुदा 'रूपक संग गुण होयब, सोनमे सुगन्धि होयबाक बराबरिए बुझबाक थिक' सेहो अन्ततः कहैत छथि। एवं प्रकारें ओहिकालमे जँ व्यक्ति-गुण आ व्यक्तिगुणोमे शील-स्वभाव, आचार-व्यवहारकेँ मान्यता भेटब प्रारम्भ भेल छल तँ वंश आ रूपकेँ एकदम्मे त्याज्य बुझबाक संस्कृति नहि विकसित भेल रहय। मात्र ओकरा विकृति बुझबाक दिस जनसीदनजी संकेत अवश्य करैत छथि। गुणकेँ प्रधानता देबाक बात मिथिलाक संस्कृति ओ परम्पराक प्रमुख तत्त्वक रूपमे समाहित रहल अछि, अस्मितासँ जुड़ल रहल अछि। विद्यापतिक 'पुरुष परीक्षा' ओ विभिन्न लोक-व्यवहार गीतमे व्यक्तिक गुण तत्त्वक बेश प्रशंसा ओ महत्त्व बखानल गेलय। मुदा पंजी ओ वर्ण व्यवस्थाक कुप्रभावजन्य ई मूल्य झँपा गेल। कुरीतिक एहेन विहाड़ि आयल जे विकृतिक रूप ध' लेलक। सांस्कृतिक रूपसँ पतनक एक कारण बनि गेल।

दूनू उपन्यासकेँ पढ़ि स्त्री-शिक्षाक सम्बन्धमे सेहो जनसीदनजीक धारणा स्पष्ट होइत अछि। संगहि स्त्री शिक्षाक विरोध स्त्रीगणे द्वारा होयब सेहो उपन्यासमे देखाओल गेल अछि। निर्दयी सासुमे यशोदाक सासुरमे पराभव एना व्यक्त भेल अछि, 'विद्या-बुद्धि किछु ओहिठाम काज देनिहार नहि। जेना कौआक मण्डलीमे हंस दुर्दशा पबै अछि, तहिना एहि मूर्ख मण्डलीमे आबि यशोदा कष्ट काटय लागलि। भरि-भरि दिन घरमे बन्द, ककरासँ की कथा करी से नहि फुरैक।' सासुक निर्दय होयबाक सेहो प्रमुख कारण यशोदाक पढ़ब-लिखब सैह रहय। दोसर चिरन्तन कारण स्त्रीक पुरुषकेँ अपन वशमे रखबाक इच्छा आ ओहि इच्छापर कुठाराघात होयबाक सम्भावना छल। 'पुतहु अयलैन्हि और बेटा पुतहुकेँ एकत्र देखलन्हि तखनि पुतहुँसँ इर्ष्या होमय लगलैन्हि जे ई हमरा बेटाकेँ वशमे कय लेलक।' जनसीदनजी मुदा शिक्षेकेँ

सर्वोपरि नहि मानैत छथि। हुनका नजरिमे गुण ओ मूल्य सर्वोपरि अछि। शिक्षासँ जँ संस्कार नहि बदलल, व्यक्तित्व विकास नहि भेल, मानवोचित गुणक समावेश नहि भेल तँ शिक्षा व्यर्थ। से चाहे पुरुषक शिक्षा हो वा स्त्री शिक्षा।' पुनर्विवाहमे पार्वतीकेँ पढ़बा-लिखबाक दम्भ रहनि। ओ ज्योतिषीकेँ 'अपन रूप यौवनसँ मोहित कए, जे-जे नाच नचबैन्हि; से नाचथि।' ज्योतिषीजी अपन नीक शील-स्वभावक पहिल स्त्रीकेँ जे वेश गुणी छली, माइक कारणे गाममे छोड़ि परदेश रहैत छला। स्त्री दुःखीत भेलथिन त' देओर जयनाथ जे गाममे रहैत छला नीक जकाँ हुनकर ताकूती नहि कयलथिन। ओ कंजूस रहथि, संगहि मानवोचित गुण हुनकामे नहि रहनि। ओ स्त्रीक प्रति, निम्नवर्गक प्रति मानवोचित व्यवहार नहि करैत छला। अपन भाउजक ठीकसँ इलाजो नहि करौलनि। स्त्रीक अंतिम अवस्थाक समाचार सुनि ज्योतिषी जखन गाम अयला तँ चिकित्साक प्रबन्धो क' अपन स्त्रीकेँ बचा नहि सकला। ओ एक तीन वर्षक बालक दयानाथकेँ छोड़ि मरि गेली आ ज्योतिषीकेँ बियाह नहि करबाक शपथ द' गेली। मुदा ज्योतिषी स्वर्गीया पत्नीक शपथ नहि माननलनि। पुनर्विवाह कयलनि। उपन्यासक अन्तमे हुनकर पराभवक वर्णन अछि 'पार्वती कोना प्रसन्न रहतीह तकरे चिन्ता दिनराति मनमे लागल रहन्हि। पार्वती यद्यपि पढ़लि-लिखलि छलीह परंच सतौत कदाचित मुद्दई भै ठाढ़ ने हो, तैं कथी लय ओकरा एको अक्षर सिखौथिन्हि। जे दयानाथ ज्योतिषीक आँखिक पुतरी छलैन्हि, से आब आँखिमे काँट जकाँ गड़य लगलैन्हि। पुनर्विवाह जे ने चाहय।'

पं. जनार्दन झा 'जनसीदन' मैथिलीक प्रारम्भिक दूनू उपन्यास निर्दयी सासु आ पुनर्विवाहमे एवं प्रकारें हमरा जनैत नहि केवल तत्कालीन मैथिली समाजक वास्तविक चित्र उपस्थित करैत छथि, सामाजिक समस्या ओ कुरीति पर आंगुर रखैत छथि अपितु जीवन-मूल्य दिस सेहो हमरालोकनिक ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ब्राह्मण समाजमे मूल्यक पतनसँ ओ चिन्तित लगैत छथि। पाँजि ओ वंशक महत्ताकेँ न्यून मानैत ओ व्यक्ति ओ व्यक्ति गुणक बखान करैत छथि। ई गुण उदात्त मानवीय गुण थिक आ एही गुणकेँ ओ जीवनमूल्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहि तरहें जनसीदनजीक दूनू उपन्यासक एक नैतिक आयाम अछि। आरम्भहिंसँ नैतिक आधारपर उपन्यासक विरोध होइत रहल अछि। मैथिली साहित्यमे सेहो ई प्रवृत्ति प्रारंभेसँ रहल अछि। अहूठाम विरोध भेल अछि। रूढ़िवादी नैतिकताक समर्थक ओकर विरोध करैत रहल अछि। मुदा विरोध केहेन भेल अछि से स्पष्ट नहि होइत अछि। हमरा लगैये कदाचित जनसीदनजक दूनू

उपन्यासक विरोधक लेखा नहि भेटबाक कारण ओहिकालक पत्र-पत्रिका नहि उपलब्ध होयबाक अतिरिक्त मैथिल बुद्धिजीवी वर्गक मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यसँ उदासीनता सेहो अछि। मैथिली साहित्य की सम्पूर्ण साहित्येक प्रति उदासीनता अछि। साहित्यकेँ मात्र मनोरंजनक साधन मानब एकर जड़िमे लगैत अछि। डा. आनन्द मिश्र 'निर्दयी सासु'क पृष्ठभूमि प्रस्तुत करैत कहैत छथि, 'जाहि समयमे एकर प्रकाशन भेल ताहि समयमे 'मिहिर'क पाठकक संख्या थोड़ छल तथा जेहो छला से मात्र मनोरंजनक उद्देश्यसँ ओकरा पढ़ैत छला। ताहि हेतु ओकर विश्लेषण नहि भ' सकल।' ओना एकटा ईहो तथ्य लगैत अछि जे जीवन-मूल्यसँ जोड़ि क' साहित्यकेँ देखबाक बेगरता ताहूमे मैथिली साहित्यकेँ देखबाक आवश्यकताक अनुभव मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्ग ताहि काल धरि नहि कने छला। मात्र रस लेल ओ साहित्य पढ़ैत छला। मिथिलामे तँ न्याय वेदान्त, मीमांसा, ज्योतिष, तंत्र आदि पण्डितवर्गक विचारक ओ अध्ययनक मुख्य विषय छल। एही विषय सभमे पाण्डित्यक समाजमे मान्यता छल। साहित्य लिखैत विद्यापतियोकेँ ओकर न्यूनताक बोध पण्डित वर्गसँ कराओल गेल छलनि। मुदा पण्डित होइतो विद्यापति देसिल बयना ओ समाजकेँ, सामाजिक जीवनकेँ अपन दृष्टिमे अनलनि आ जनसामान्यकेँ सोझे-सोझ सम्बोधित करबाक आवश्यकताक अनुभव करैत गीत रचलनि। से बहुत महत्त्वक बात भेल। एहि प्रकारें इहो कहि सकैत छी जे जहिना देसिल बयना अर्थात मैथिली, संस्कृतक विरुद्ध जनसामान्यक भाषा-साहित्य बनि क' ठाढ़ भेल तहिना प्रारम्भेसँ जनसामान्यक जीवन सेहो ओहिमे प्रतिबिम्बित हुअ लागल। सामाजिक स्थिति ओ रीति-कुरीति, विकृतिक दिग्दर्शन सेहो कराब' लागल। ओना साहित्यसँ समाज ओ जीवन कटल रहल तकर सेहो मध्यकालमे पर्याप्त साक्ष्य भेटैत अछि। इहो सत्य अछि जे सम्पूर्ण मध्यकालमे विद्यापतिक बाद मैथिली मात्र पद्यक भाषा बनि क' रहि गेल सेहो संस्कृत गद्यक संग कोनटामे ठाम-ठीम लतरल। मुदा आधुनिक काल अबितहिं (बीसम शतीमे) जखन पुनः मैथिलीक भाषायी पुनर्जागरण प्रारम्भ भेल तँ शुरुएमे गद्य-पद्य दूनूमे समाज ओ ओकर दुख-दर्द स्थान पाब' लागल। भनहि ओ केवल ब्राह्मण समाज धरि सीमित हुअय मुदा ब्राह्मण ओ कायस्थ समाजमे जे प्रबुद्ध वर्ग छला हुनकामे मैथिली साहित्यक प्रति आ तेँ समाजक प्रति उदासीनता बनले रहलनि। ब्राह्मण जँ संस्कृतिक मोह नहि छोड़ि पाबि रहल छला त' कायस्थ अरबी-फारसीकेँ जे राजकाजक भाषा छल जीविकाक कारणे गहने रहला। मैथिली ने राजकाजक भाषा छल ने जीविका

द' सकैत छल आ ने पण्डित होयबाक अभिमान तेँ ओ मात्र मनोरंजनक ओ गप्पक माध्यम टा मानल गेल। ओहि साहित्यमे अभिव्यक्त विचारकेँ गम्भीरतासँ लेबाक बात पण्डित ओ बुद्धिजीवी वर्गमे नहि आयल। कमोवेश लगभग एक सए बरख बीति गेलाक बादो आइयो हमरालोकनि मिथिलाक बुद्धिजीवी वर्गक एहि मानसिकतासँ त्राण नहि पाओल अछि। संस्कृत आ अरबी-फारसीक स्थान आब भनहि अंग्रेजी ल' लेने हो मुदा मैथिलीक प्रति मानसकिता वैह अछि। ओहिमे कोनो परिवर्तन नहि आयल अछि। एहना स्थितिमे जनसीदनजी द्वारा अपन मैथिली उपन्यासमे समाजक वास्तविकताकेँ उपस्थित करब आ जीवन मूल्यक संकेत करब बहुत महत्वपूर्ण ओ साहसक काज छल। एहि उल्लेखनीय काज लेल मैथिली समाज हुनका सभ दिन मोन रखतनि। से आब' बला दिनमे आर उजागर भ' जायत।

हरिमोहन बाबू अपन पितासँ पैतृक उत्तराधिकारे टा नहि पौलनि, साहित्यिक आ वैचारिक संस्कार सेहो ग्रहण कयलनि। जनसीदनजीक रचना ओ हरिमोहन बाबूक प्रारम्भिक रचनामे अद्‌भुत साम्य देखबामे अबैत अछि। हरिमोहन बाबू जत' खट्टरककाक तरंग ओ अपन कथा सभमे हुनकासँ फराक लगैत छथि ओत' कन्यादान ओ द्विरागमन उपन्यासमे बहुत किछु जनसीदनसँ ग्रहण करैत देखाइत छथि। मुदा औपनिवेशिक मानसिकताक प्रभावे समाजमे बढ़ैत अन्तर्विरोध, दू मूल्यक अन्तर्द्वन्द्व जेँ कि हरिमोहन बाबूक कालमे आर तेज भ' गेल छल तेँ ओ अपना रचनामे वैचारिक स्तरपर सेहो परिवर्तन अनैत छथि। अपन बाना बदलि लैत छथि। हमरा लगैत अछि जे बाना बदलबाक एक कारण इहो रहल होयत जे ओ अपन पिताक पराभव देखि चुकल छला। मैथिली समाजक मैथिली साहित्य ओ ओहिमे अभिव्यक्त विचारक प्रति उदासीनता लक्ष्य क' गेल छला। ओ ई बात जानि गेल छला जे खुशफैलसँ जीव'बला एवं हँसी-ठहक्का लगब' वला गप्पी लोक लेल हुनका साहित्य सृजित करबाक छनि। समाज द्वारा साहित्यकेँ गम्भीरतासँ नहि लेबाक परम्पराकेँ देखैत ओ सामाजिक स्थिति चित्रित कर'बला साहित्यमे पाठकक स्वभावें कथा रससँ बेसी हास्य रसकेँ महत्ता देलनि। पाठक हुनका लगमे प्रमुख छलथिन। पाठकसँ ओ अपन रचना पढ़बाब' चाहैत छला। ओ साहित्यक माध्यमे समाज सुधारक सेहो आकांक्षा रखैत छला जे ओहिकालक मुख्य प्रवृत्ति छल। मुदा साहित्यक माध्यमे समाज सुधारक आकांक्षा पोसनिहार रचनाकारक दुर्गति अपना आँखिसँ अपन

पिताकेँ देखि अनुभव कयने छला तेँ कुनैनक गोलीकेँ रंग-बिरंगी कागजमे संगहि मिसरीमे लपेटि क' परसलनि। हँसी-ठहक्कामे जीब' बला समाजकेँ हँसी लगबैत बिठुआ कटबाक चालि अपनौलनि। कदाचित मखौलिया स्वभाव सेहो हुनका संग द' रहल छलनि। एवं प्रकारेँ उपन्यासकार पितासँ प्राप्त मरौउसी सम्पत्तिकेँ अपन अर्जित दृष्टि ओ स्वभावक अनुसारे विशाल पाठक वर्ग दिस ल' गेला। ई तथ्य आरो महत्त्वपूर्ण भ' जाइत अछि जखन हमरालोकनि देखैत छी जे ओहिकालमे मैथिली भाषाक उन्नति ओ विकासक संकल्प रखनिहार चेतना सम्पन्न युवकलोकनि मैथिलीक संस्थापन ओ शिक्षा जगतमे प्रवेश सुनिश्चित करा रहल छला। मैथिलीक भाषिक चेतनाक आरम्भ ओ विस्तारक कथा कोनो प्रकारेँ 'कन्यादान'क बिना अपूर्ण रहैत अछि से बात दृष्टिमे राखब आवश्यक अछि। ओना ई बात भिन्न अछि जे हँसी-ठहक्का लगब'वला समाज जेना 'कन्यादान'केँ हँसीएमे उड़ा देलक तहिना मैथिलीकेँ सेहो कहियो गम्भीरतासँ नहि लेलक।

'कन्यादान'सँ पूर्व जनसीदनजीक दूनू उपन्यासक अतिरिक्त पुलकित मिश्र 'काव्यतीर्थ'क मोहिनी मोहन' (1908), रासबिहारी लाल दासक सुमति (1918) तथा कुमार गंगानन्द सिंहक 'मनुष्यक मोल' (1924) सेहो विवाहक ब्याजें मैथिली समाजक दुर्दशा ओ कुरीति-विकृतिकेँ विषय बनाय आबि चुकल छल। मैथिलीक प्रारम्भिक कथा-उपन्यासमे वैवाहिक समस्या मात्र बहाना रहय। ओहि लाथें पंजी व्यवस्था जन्य समाजक दुर्दशाक चित्रणक संग धनक सदुपयोग सिखायब, पारम्परिक जीवन्त जीवन-मूल्यकेँ प्रतिस्थापित करब ओ मानवीयताक भावना जगायब मुख्य उद्देश्य रहल करय। मिथिलामे विवाह ओ कथा-उपन्यासक प्रसंग एक अद्‌भुत बात अछि। डा. रामदेव झा मैथिलीक आद्यकथा नामक लेखमे कहैत छथि, 'कथा ओ उपन्यास शब्द साहित्यक विधासँ अधिक वैवाहिक सम्बन्धक अर्थद्योतनमे समर्थ छल। कथाक अर्थ छल विवाह योग्य वर ओ कन्याक सम्बन्धमे विचार-विमर्श। कन्यापक्ष दिससँ बर-पक्षक समक्ष वा वरपक्ष दिससँ कन्या-पक्षक समक्ष विवाह सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रस्ताव 'उपन्यास' कहल जाइत छल। 'कथा वार्त्ता' वा 'कथाक उपन्यास' इत्यादिक अर्थ छल वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करबाक विषयमे विचार-विमर्श, जकरा अंग्रेजीमे 'मैरेज निगोशिएसन' कहब उपयुक्त होयत। कथा-उपन्यासक साहित्यिक विधामे सेहो जेना ई अर्थ कतहु ने कतहु अवश्य निहित रहैत छल। यैह कारण अछि जे मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास ओ कथामे

विवाह प्रकरण कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य समाविष्ट रहैत छल।' वैवाहिक अवसर पर मिथ्याडम्बरक कारणे दुख भोगैत एक कर्ण कायस्थ परिवारक कथा थिक 'सुमति' तँ कुलीनताक प्रति विनाशक सीमा धरि व्यामोह, कुलीन कन्याकेँ धनक रूपमे विक्रय, नैहर-सासुर ओ समाजमे नारीक प्रताड़ना, नारीक अशिक्षा संग विकृत आचार-व्यवहारक कथा 'मनुष्यक मोल' मे कहल गेल अछि। 'मोहिनी-मोहन' मे जेना डा. रामदेव झा कहैत छथि, 'वैवाहिक सम्बन्धमे जाति-पातिक अनावश्यक महत्त्व, घटक लोकनिक कौटिल्य, विवाहमे फड़्क निर्धारण ओ तदर्थ टाका गनायब सन दोषकेँ लेखक प्रकारान्तरें देखयबाक प्रयास कयने छथि। तथापि स्पष्ट आलोचना करबाक साहस नहि देखौलनि अछि।' एहि सभ मैथिली उपन्यास ओ कथाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सेहो छल। डा. जटाशंकर झा अपन एक निबन्धमे कहैत छथि जे बहुविवाह बिहारमे मिथिला धरि सीमित छल। प्रत्येक खण्डवला राजा एकसँ अधिक वियाह कयने छला।' ओ इहो कहैत छथि जे 'बंगालसँ भिन्न बहुविवाह मिथिलामे वंशपर आधारित छल नहि कि धनपर।' ई हरिसिंहदेवी पंजी व्यवस्थासँ उपजल छल आ एकरा 'बिकौआ प्रथा' कहल जाइत छल। किएक तँ उँच श्रेणीक ब्राह्मण रुपैयाक कारणे निम्न श्रेणीक कन्यासँ विवाह करैत छला। पत्नीक पालन-पोषण एहिमे पतिक जिम्मेदारी नहि रहैत छल। ओ लोकनि नैहरेमे रहैत छली। एक-एकटा ब्राह्मण चालीस-पचासटा विवाह करैत छला, आ मात्र रुपैया वसूलीक लेल सासुर जाइत छला। बिकौआ जमायसँ प्राप्त दुर्दशाक वर्णन मुंशी रघुनन्दन दास एना करैत छथि, 'जे जन कएल जमाए बिकौआ, तनिक मान धन नाश। दुर्बचनहिं आदर हो तनिका, सब खन चित्तमे त्रास।।' राजा माधव सिंह (1775-1807) पहिल व्यक्ति छला जे अंग्रेजी अधिकारीलोकनिक ध्यान एहि कुप्रथा दिस आकृष्ट कयने रहथि। सरकार हुनकर बात सुनलक आ दिवानी अदालत तिरहुतक जज जौन निफ 1795मे एकटा नोटिस निर्गत क' कय सभ ब्राह्मण ओ पंजियारकेँ चारिटासँ बेसी विवाह करब ओ करायब पर प्रतिबन्ध लगा देलनि।

शाहाबाद जिलाक मुंशी प्यारेलाल सेहो अंजुमन-ए-हिन्द संस्था बना विवाह आदि अवसरपर बहुखर्ची ओ मिथ्याडम्बरक विरोध क' रहल छला। दरभंगा शहरमे सेहो ई संस्था बनल छल जकर अध्यक्ष महराज दरभंगा छला। मुंशी प्यारेलाल 1876मे सौएठ सभामे सेहो उपस्थित भेल रहथि आ आषाढ़ आ अगहनक सभामे कमिटीक बनाओल नियमक अनुसार 2289टा बियाह कराओल

गेल रहय। अनुमण्डल अधिकारी, मधुबनी आ महराज लक्ष्मीश्वर सिंह व्यक्तिगत रूपेँ एहि कार्रवाईक पर्यवेक्षण कयने रहथि। रासबिहारी लाल दासक 'सुमति' मे एहि कमिटी ओ कमिटीक नियमक उल्लेख अछि। वस्तुत: एही सुधार आन्दोलनसँ प्रेरणा पाबि 'सुमति'क रचना भेल अछि से लगैये। एही प्रकारें बाल विवाह, अनमेल विवाह आदि सेहो मिथिलामे प्रचलित रहय मुदा तकर विरोध ओ ओहिमे सुधारक चेतना समाजमे जगयवाक प्रयास सेहो चलि रहल छल। ताहि दिनक अखबार सभमे सेहो एहि कुप्रथा सभक विरुद्ध लिखल जाइत छल। परन्तु सरकारक मत एहि सामाजिक समस्याक प्रति सोझे-सोझ हस्तक्षेपक नहि रहय। पटना प्रमण्डलक आयुक्त एफ.एम. हॉलीडेक एहि सम्बन्धमे कथन छल जे 'सुधार भीतरसँ होयबाक चाही नहि कि बाहरी दबाबसँ।' मुदा अन्तत: सरकार एक बिलक द्वारा बाल विवाहकेँ रोकबाक प्रयास कелक। ओहि बिलमे मुख्य प्रस्तावक रूपमे बारह वर्षसँ कम वयसक कन्यासँ सम्भोग लेल दण्डित करबाक प्रावधान राखल गेल छल। अन्तत: समयक प्रभावें तथा शिक्षाक प्रसारसँ उच्चवर्गमे बाल विवाह समस्या नहि रहि गेल। मुदा निम्न वर्गमे ई कुप्रथा एखनो पूरा-पूरी नहि हटल अछि। बादमे शारदा बिल सेहो बनल। आर्यसमाज ओ ब्रह्मोसमाजक सेहो एहि सुधार सभक दिशामे छिटफुट योगदानक लेखा मिथिलामे भेटैत अछि।

एही ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे अपन पितासँ प्राप्त विषय ओ विचार संगहि पारिवारिक परिस्थितिजन्य अर्जित सामाजिक दृष्टि संग जखन हरिमोहन बाबूकेँ अनुकूल विषय भेटलनि तँ ओ ओहिमे "रंग पालिश" चढ़ाए 'कनेयाँ माइक ओरिआओन' शीर्षकसँ कन्यादान उपन्यासक श्रीगणेश कयलनि। हुनका लग पाठक समूह स्पष्ट छलनि। ओ पाठक समूह छल भोजन ओ गप्पक प्रेमी पाठक समूह। संस्कारसँ तार्किक ओ तर्कक लाठीसँ केहनो सिद्धान्तकेँ ध्वस्त कर'बला पाठक समूह। अनका लेल सभटा सिद्धान्त ओ व्यवहार मान'बला आ अपना लेल सुविधाक अनुसार तर्क गढ़'वला पाठक समूह। दारुण सामाजिक स्थितिकेँ कतियाबय वला आ' अतिवादमे जीब'वला छद्म ओ मिथ्याडम्बरक मानसिकतासँ ग्रस्त, बात-बात पर हँस'-हँसाब'बला पाठक समूह। एक दिस अंग्रेज बनबाक सेहन्ता पोस'वला, अंग्रेस दिस विस्फारित आँखिसँ देख'बला, नतमस्तक आ अपन परम्परासँ विक्षुब्ध ओ हीनताबोधसँ ग्रस्त पाठकक समूह तँ दोसर दिस अपन रीति-रेवाज, समाज-संस्कृतिक प्रति कट्टर आदर रखनिहार ओ अंग्रेजक प्रभावेँ ओकरा पददलित ओ नष्ट होयबाक

आशंकासँ ग्रस्त पाठक समूह। एहि पाठक समूहमेसँ अधिकांश 'कन्यादान'क स्वागत कयलक तँ किछु ओकर तिरस्कारो कयलक। स्वाभाविक रूपसँ प्रशंसा ओ निन्दा चल' लागल। ई बात स्पष्ट अछि जे यैह स्वागत ओ तिरस्कार 'कन्यादान'क लोकप्रियताक मूलमे अछि। कतेक लोककेँ आइ ई बात आश्चर्यजनक लगैत छनि जे अपन समाजक एहन दारुण सामाजिक स्थिति, अशिक्षाक घोर अन्धकार, कोंढ़ तोड़य बला अर्थचक्र, पुरुषक अहंकार ओ वैवाहिक संस्थाक घोर दुव्यर्वस्था, छद्म ओ मिथ्याडम्बर, ठकपनीकेँ देखि कोना लोक हँसैत छल आ आइयो हँसैत अछि? हमरा जनैत एहिमे हरिमोहन बाबूक उच्चस्तरीय कलाकारीक अतिरिक्त लोकक कोनो बातपर हँसबाक, गप्प मारबाक हिस्सक, अपनाकेँ सदैव शेष समाजसँ उपर बुझबाक मानसिकता, अंग्रेजी पढ़बाक उच्चग्रन्थि संगहि सामाजिक समस्या अथवा समाजक बेगरताकेँ न्यून क' बूझब, ओहिपर ध्याने नहि देब रहल अछि। अंग्रेजी शिक्षाक एकटा ईहो प्रभाव पड़ल अथवा कहू जे औपनिवेशिक मानसिकताक इहो एक लक्षण रहल जे पढ़ल-लिखल लोक जे 'कन्यादान'क पाठक छल ओकरा कन्यादानमे चित्रित ग्रामीण समाज अपन तँ लगलैक मुदा 'पछुआयल' लगलैक। हमर कहबाक अर्थ अछि जे 'कन्यादान'क पाठक ओहि वर्गक नहि छल जे वर्ग 'कन्यादान'मे चित्रित भेल अछि। एहि प्रसंग प्रभास कुमार चौधरी 'प्रवासी' पत्रिकाक 'हरिमोहन झा विशेषांक'क सम्पादकीयमे लिखैत छथि, 'अपन सहज हास्य-विनोद दिस प्रवृत्त मनोवृत्तिक कारणे ओहू दिनमे आ आइयो बेसी मैथिली पाठक आ लेखको एकरा मनोरंजक साहित्य रूपमे लैत अछि, गम्भीर साहित्यक रूपमे नहि! तकर कारण छैक जे जाहि बुच्चीदाइ सभक लेल ओ भविष्यक कथा लिखलनि, ओ ताहि दिनमे ओतेक पढ़लि-लिखलि आ बौद्धिक रूपसँ विकसित नहि रहथि जे ओकर मर्मकेँ बुझितथि आ आइ ततेक पढ़ि लिखि गेल छथि जे द्विरागमननोक बुच्चीदाइसँ बहुत बेसी निकलि गेल छथि आ आधुनिकताक नामपर अपन मैथिल संस्कृति आ परम्परेकेँ बिसरि त्यागि देने छथि। तेँ ओहू दिनमे ओ हरिमोहन बाबूकेँ क'ट'क' मनोरंजन लेल पढ़ैत छलीह आ आइयो क'ट'क' (शिक्षिता होइतो मैथिली पढ़बामे असुविधा होइत छनि) पढ़ि जाइत हेती।' त' बुच्ची दाइ त' स्वयं ताहि दिन कन्यादान नहि पढ़लनि अथवा क' ट' के पढ़लनि। तखन रहली बड़का गामवाली। ओ पढ़ि सकैत छथि। आ रेवतीरमण पढ़ि सकैत छथि। त' सम्पूर्ण कन्यादानमे मात्र रेवतीरमण आ हुनक स्त्री बड़का गामवाली छथि जे स्वयं कन्यादान पढ़ि सकैत

छथि। पढ़ि क' हँसियो सकैत छथि। एकर अतिरिक्त कियो एक-आध गोटे होथि त' होथि। एहि प्रकारें हमरा जनैत कन्यादानक लोकप्रियताक एकटा ईहो कारण रहल जे ओहि 'पछुआयल' लोक'क दुखदर्दकेँ बुझनिहार, ओकर पीड़ाकेँ अपन माननिहार कन्यादानक पाठक ताहि दिनमे नहि रहथि। यदि रहबो करथि त' संख्यामे एकदम थोड़। ई तथ्य सम्पुष्ट करैत अछि जे मैथिल ब्राह्मणोमे कैकटा वर्ग अछि, कैकटा स्तर अछि। संगहि एक वर्ग, दोसरसँ एकदम पृथक ओ निर्विकार अछि। क्रमशः जखन ओहि 'पछुआयल' लोकक संतति सभ पढ़' लिख' लगला आ अपन समाजक पीड़ासँ जुड़बाक कोशिश कर' लगला त' 'कन्यादान' पढ़ैत हुनकर ठोरपरसँ हँसी विलाय लगलनि। जँ गद्य आ वर्णनक चमत्कारसँ हँसितो छला तँ समाजक वास्तविकता एवं यथार्थकेँ बुझैत-गमैत करेज चालनि भ' जाइत छलनि।

कन्यादान ओ द्विरागमनक माध्यमे मिथिलाक कोन यथार्थ उभरि क' सोझा अबैत अछि, से देखब हमरालोकनिक लेल अन्ततः आवश्यक भ' जाइत अछि। रहरहाँ ई बात आलोचक ओ विद्वानलोकनिक कहैत रहला अछि जे कन्यादान ओ द्विरागमनक माध्यमसँ मिथिलामे स्त्री शिक्षाक क्षेत्रमे क्रान्ति आयल। लोक बुच्चीदाइक पराभवसँ अभिभूत भेल आ बुच्चीदाइ सभ के आधुनिक शिक्षा दिस प्रवृत्त कराओल गेल। कन्यादान' पोथीकेँ विवाहक समयमे भारमे पठेबाक चर्चसँ जत' पोथीक लोकप्रियता सिद्ध कयल जाइत अछि ओतहि 'कनियाँ'क लेल शिक्षाक अनिवार्यता ओ ओहिसँ 'कन्यादानकेँ जोड़बाक मानसिकता सेहो स्पष्ट होइत अछि।

हमरा जनैत जे यथार्थ सोझाँ आयल अछि से थिक अंग्रेजिया चालि आ पाश्चात्य भोग दृष्टिबला मैथिलक अन्ततः प्राच्य संस्कारक समक्ष नतमस्तक होयब। दूनू दिस नतमस्तक। अंग्रेजो बनब आ महात्मा सेहो बनब। पश्चिमक बुद्धिवाद आ उपयोगितावादक प्रखर ओ खूजल समर्थनक उपरान्त वैचारिक महायात्रामे अन्ततः आध्यात्मवादमे शांति ताकब। छद्म ओ मिथ्याडम्बरक अन्तहीन यात्रा। संगहि पाश्चात्य पद्धतिसँ शिक्षाक प्रभावें अपन समाज ओ लोकवेदकेँ हेय दृष्टिसँ देखब। ओकरा 'बैकवार्ड' मानब। ई यथार्थ एकदम चौकबैत अछि। अपनासँ निम्न जातिक लोककेँ तँ 'बैकवार्ड' मानबे करब, अपनो जातिक लोककेँ 'बैकवार्ड' मानब। ई यथार्थ मिथिलाक कोनो एक जातिक नहि थिक, सम्पूर्ण समाजक थिक। सभ जातिक थिक। मिथिला

समाजक एहि दूनू यथार्थकेँ हरिमोहन बाबू कन्यादान ओ द्विरागमनक माध्यमसँ हमरालोकनिक समक्ष रखलनि अछि। एहि दूनू यथार्थक प्रस्तुतिमे किंचित निर्वैयक्तिताक अभावक अछैतो लेखक एहि कारणे सफल भेल छथि जे हुनका समाज आ जीवनकेँ देखबाक अनुभव विस्तार ओ गँहीरसँ सुलभ भ' गेलनि। मरौउसी ओ अर्जित ज्ञानसँ ओ चेतनासम्पन्न भ' गेल छला, जे हुनकर दृष्टिकेँ चोख बनयबामे सहायक भेल। तेँ कने टेढ़-टूढ़ आ भ्रमाह रहितो मूर्ति (यथार्थ) एकदम उभरि क' समझ आबि जाइत अछि। जाहि दुनू बिन्दुक हम चर्चा कयल अछि से यथार्थ अहू कारणे थिक जे ओ आइयो यथार्थे अछि। आइयो मैथिली समाजमे ई यथार्थ एकदम प्रशस्त रूपसँ विद्यमान अछि। एहि यथार्थक तेज कने आर बेसिये भेल अछि। ओहिमे नजायज पाइ आ भ्रष्टाचार दुनू जुटि गेल अछि। कोनो प्रकारेँ रुपैया होयबाक चाही। तखन खर्च लेल चालि-चलनमे परिवर्तन जरूरी। यैह यथार्थ विद्यापतिक सुपुरुषकेँ मिथिलामे कुपुरुष बनबाक यथार्थ थिक। मिथिलाक लोकक आधुनिक नहि बनि सकबाक जड़िमे सेहो यैह अछि। एहि यथार्थकेँ ओहि कालमे पकडि पयबाक लेल आ ओकर कलात्मक प्रस्तुतिक लेल हरिमोहन बाबूक जतेक प्रशंसा कयल जाय से कमे होयत।

निर्दयी सासु आ पुनर्विवाहक चर्चक क्रममे हमरालोकनि देखि चुकल छी जे अंग्रेजी पढ़ल-लिखल ओ धनिक वरक प्रति झुकाव मैथिली समाजमे प्रारम्भ भ' गेल छल। एहि बात के जनसीदनजी गमि लेने छला मुदा अंग्रेजी पढ़ला-लिखलाक प्रभावक कारणें अंग्रेजियत आबि जयबाक आ अपन समाजकेँ हीन बुझबाक वास्तविकतासँ जनसीदनजी परिचित नहि भेल रहथि। मुदा जाहिसँ ओ परिचित नहि भ' सकला ताहिसँ हुनकर योग्य पुत्र परिचित भ' गेला। हुनकर नजरि सी.सी. मिश्र सनक अपन जड़िसँ कटल ओ पाश्चात्य भोगवादक अन्धभक्त दिस गेलनि, जे अपन पाश्चात्य शिक्षाक अहंकार पसारैत, स्त्रीक मानसिकता विकसित करबाक ओ अपन समकक्ष अनबाक बुद्धिवाद प्रदर्शित करैत, किंचित समाज सुधारकक बाना धयने अन्ततः स्त्री विलासक नव-नव विन्यास तकैत रहैत अछि। जहिना जीह के नव-नव स्वाद ओ विन्यास चाही जाहिसँ संतुष्टि भेटैक तहिना शिश्न के सेहो नव-नव रूप, नव-नव ढंग चाही जाहिसँ विलासक सुख बढ़ि जाय। सी.सी. मिश्र एही सुखक लोभी छथि जे मिस बिजली संग हुनकर एकान्त वार्त्तालापमे प्रकट भ' जाइत अछि। एहि बातकेँ चीन्हि मिस बिजली अपन अचूक तर्कशक्तिसँ हुनकर दुर्दशा क' दैत छथि। हरिमोहन बाबू लिखैत छथि, 'चंचला युवतीक संग हवाखोरीक मजा आब

बहराय लगलैन्ह। जहिना आनन्दसँ आयल छला तहिना घिसिऔर कटैत फिरय लगलाह। हुनक सरस छायावाद रौद देखैत बिला गेलैन्ह और रसिकता सिकतामे मिलि गेलैन्ह।' अन्ततः बिजलीक निष्ठुर बज्राघातसँ सी.सी. मिश्रक कल्पना महल चूर-चूर भ' गेलनि। ओत'सँ निराश भेलाक बादे ओ थाकि-हारि क' बुच्चीदाइ दिस घुमला। ओना एहि प्रत्यावर्त्तनकेँ तर्कसंगत सिद्ध करबाक लेल 'अपना घरमे शिक्षाक ज्योति जगयबाक' छद्म पसारैत छथि। सी.सी. मिश्रक छद्म कतेक ठाम आर उघार भेल अछि। खास क' क' जखन हुनका भोगक आकांक्षा पर आघात लगैत छनि। पहिल अछि चतुर्थी रातिक घटना। स्त्री-सुख तथा भोग ओ विलासक कल्पनामे मग्न सी.सी. मिश्र जखन बुच्चीदाइमे कोनो पर्सनालिटी (व्यक्तित्व) नहि पबैत छथि आ अन्ततः बुच्चीदाइक चोख हीराकाटक कंगना मिसरजीक नाकमे एतेक झोंकसँ लगैत छनि जे टप्-टप् शोनित खस' लगैत अछि त' ओ रेवतीरमणकेँ चिट्ठ लिख' लगैत छथि आ ओहिमे आजन्म ब्रह्मचारी रहबाक शपथ लैत घूमि-घूमि कन्या सभक जीवन सुधारबाक चेष्टा करबाक आ स्वार्थक बेदीपर कन्यालोकनिक हत्याक विरुद्ध आन्दोलन करबाक निर्णय लैत छथि। मुदा ई निर्णय ओ शपथ मिस बिजलीक मोहक व्यक्तित्वमे हेरा जाइत अछि। बिजलीक प्रति मोह दोसर स्थलपर जखन मिस बिजलीक तर्कक समक्ष पानि भर' लगैत अछि आ मिसरजीक छद्म उघार भ' जाइत अछि तखन फेर ओ अगत्या बुच्चीदाइ दिस घुमैत छथि। अपन घरमे स्त्री शिक्षाक तर्कसँ अपनाकेँ आश्वस्त करैत बुच्चीदाइक शिक्षाक बृहत, आडम्बरपूर्ण ओरिआओन करैत छथि। लगभग छबे मासमे 'रैपिड एक्शन कोर्स' जकाँ शिक्षाक व्यवस्था समाप्त भ' जाइत अछि। बुच्चीदाइ योग्य भ' जाइत छथि। सी.सी. मिश्रसँ जुत्तामे पालिस करबाब' लगैत छथि। मिसरजी एहि सभसँ प्रसन्न होइत छथि। अपना स्त्रीकेँ आधुनिक बनाक' सी.सी. मिश्रक आधुनिक बनबाक छद्म फेर महात्माजी लग ठेहुनियाँ द' दैत अछि। ओ 'मनहिमन मिस बिजली तथा महात्माजीक व्यक्तित्वक तुलना करय लगलाह। एक चञ्चल निर्झरिणी, दोसर शान्त महासागर। एक रजोगुणक मूर्त्ति, दोसर सत्त्वगुणक अवतार। एक दोहाभिमानी सुखाराधिका, दोसर देह ओ सुखकेँ तुच्छ बूझि तपस्यामे निरत। मिश्रजी जतेक अधिक चिन्तन करए लगलाह, ततेक अधिक महात्माजीक प्रति हुनक श्रद्धा बढ़य लगलैन्ह।' सी.सी. मिश्रक एहि अतिवादकेँ हरिमोहन बाबू विलक्षण ढंगे प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि अतिवादसँ जनमल सी.सी. मिश्रक वैचारिक छद्म सेहो अन्तमे उघार भ' गेल अछि। ई छद्म तखन आर देखार होइत

अछि जखन ओ 'आर्य सभ्यता' नामक अंग्रेजी पत्रिकाक एडीटर नियुक्त होइत छथि। हरिमोहन बाबूक तात्पर्य एकदम स्पष्ट अछि। जँ सी.सी. मिश्र सनक लोक 'आर्य सभ्यता'क संपादक होयता तँ पत्रिकाक केहेन दुर्गति हैत? समाजकेँ ओकरासँ की भेटतैक? ओ सम्पादक अंग्रेजी पढल-लिखल मुट्ठी भरि लोकक बीच केवल छद्म ओ भ्रम पसारत। 'सभ्यता'क नाम पर 'एलिट' वर्गक निर्माण करत जकरा शेष समाजसँ दूर-दूर धरि कोनो सम्बन्ध नहि रहि जेतैक। संगहि एहन मानसिकतावला लोकक स्त्री शिक्षाक व्यवस्था ओ पद्धतिसँ शिक्षित स्त्रीमे सेहो अतिवादेक जन्म होइत अछि। गुण-दोष विवेचनक विवेक नहि विकसित भ' पबैये। अपनाकेँ उच्च ओ शेष समाज एत' तक जे माय-बहीन, बाप-भायकेँ सेहो देहाती भुच्चर बूझ' लगैत अछि से बुच्चीदाइक माध्यमे हरिमोहन बाबू कह' चाहैत छथि। आ से बात स्पष्टत: कहि सेहो दैत छथि। जेँ कि ई दूनू अतिवाद ओ छद्म आइयो बनले अछि तेँ ई मैथिली समाजक एक दारुण यथार्थक रूपमे प्रस्तुत होइत लगैत अछि। एहि दारुण यथार्थक जड़िमे मूल्यहीनता अछि। मूल्यक पतन अछि। समाजक जड़ता अछि। एहि छद्म ओ अतिवादी मानसिकताक कारणे मनोबल ओ आत्मसम्मानक ह्राससँ आत्महीनता उपजल अछि जे कोनो सबल पक्षक समक्ष अथवा सत्ताक समक्ष नतमस्तक भ' जाइत अछि।

उनैसम शताबदीक अन्तमे जखन बंगालमे अभिजात समाजक लोक अंग्रेज जकाँ रह' लागल छल, अंग्रेजी चालि-ढालिक नकल कर' लागल रहय, अंग्रेजक जीवन-पद्धति अपनाब' लागल छल आ अपन समाज आ अपन जड़िसँ एकदम कटि गेल छल तँ तकर विरोध ताहिकालहिमे नाटक ओ नाचक माध्यमसँ कयल जाय लागल। पुरुषक एहि पतनकेँ रोकबाक लेल स्त्रीलोकनि आगू अयली। मुदा हमरा लग की तहिया एक्कोटा बुच्चीदाइ रहथि अथवा आइयो कतेक बुच्चीदाइ छथि जे आगू आबि सांस्कृतिक पतनक लेल विरोधक स्वर उठौती? कविवर सीताराम झा त' विद्यापतिक स्मृतिमे कविता लिखैत नारीकेँ समाजक नेतृत्व करबाक लेल कहने छथि। एहेन सांस्कृतिक जागरण मिथिलामे सम्भव होयत? हरिमोहन बाबूकेँ सी.सी. मिश्रक दर्पकेँ चूर करबाक लेल आ छद्मके उघार करबाक लेल मिस बिजलीक आवश्यकता बुझयलनि जे बंगाली छली। मुदा अन्ततः एहिमे दोष हमरा जनैत ने बुच्चीदाइक अछि ने सी. सी. मिश्रक अछि, दोष मैथिली समाजक जीवन पद्धति ओ जीवन दृष्टिक बीच उत्पन्न पैघ दूरीक अछि जकर मूल कारण सभ्यता ओ संस्कृतिक आधुनिक

अंतर्विरोधमे निहित रहल अछि। कर्मपर आधारित जीवनक अपेक्षा भोग पर आधारित जीवन लालसा आ ताहिसँ उपजल जीवन पद्धति मैथिली समाजक सोच ओ क्रियामे बड़का फाँक उत्पन्न कयलक अछि। सांस्कृतिक मूल्य अथवा कहू जे जीवन मूल्यकेँ क्षतविक्षत क' देलक अछि। सौन्दर्य-बोध नष्ट भ' रहल अछि। आ एकर कारण येह भोगवाद सँ उपजल अतिवादिता अछि जे हरिमोहन बाबूक दूनू उपन्यासक माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि। विलासी लोकक मिस बिजली ओ महात्माजीक बीच बौआयब आ नतमस्तक होयब, दुविधाग्रस्त होयब एखन धरि समाप्त नहि भेल अछि, तैं कन्यादानक यथार्थ आइ धरि कायम अछिये। एही कारण हरिमोहन बाबू अपन दुनू उपन्यासक संग प्रासंगिक बनले छथि। एहेन दारुण यथार्थक ओहिकालमे अर्थात् आइसँ साठि-सत्तरि वर्ष पूर्व उजागर होयब सेहो मैथिलीक पहिल लोकप्रिय उपन्यासक माध्यमे कम महत्त्वपूर्ण नहि अछि। एहन यथार्थ कन्यादान ओ द्विरागमनकेँ भविष्योमे लोकप्रिय बनौने रहत से कहल जा सकैत अछि- भनहि दुनू उपन्यासक ताहि दिनुका लोकप्रियता, आजुक लोकप्रियता आर भविष्यक लोकप्रियतामे मूलभूत तात्त्विक अन्तर रहय।

■

मनोरथक पारो

कहल जाइत अछि जे कोनो क्रान्तिकारी अपन विचारक तीक्ष्ण ढंगसँ हमरालोकनिक ध्यान आशा आ मनोरथक ओहि विफलता दिस आकृष्ट करैत छथि जे बचाओल जा सकैत छल। संगहि ओ ओहि अन्यायपूर्ण व्यवस्थाक संकेत सेहो करैत छथि जे ओहि कष्ट तथा विफलताक मूल कारण थिक। मैथिली उपन्यासमे यात्रीक पारो एहि बातकेँ जेना फड़िछा क' रखलक से ओहिसँ पूर्व सम्भव नहि भेल छल। कदाचित मैथिल ब्राह्मण-समाजमे अनमेल विवाहकेँ विषय बना लिखल गेल बादोक उपन्यासमे से सम्भव नहि भ' सकल अछि। एकर मूलमे हमरा जे कारण देखाइत अछि से ई थिक जे समस्त सदिच्छा, क्षोभ, सुधारक आकांक्षा रहितहुँ मैथिल उपन्यासकार ब्राह्मण मानसिकताक परिधिसँ बहराय नहि सकला अछि। व्यवस्थामे रहि व्यवस्थाक भीतर सुधारक आकांक्षा सभक दृष्टिमे झलकैत अछि। एहिमे जँ कोनो अन्तर आयल अछि त' से केवल चतुरानन मिश्रक कलामे।

मुदा पारो पहिल उपन्यास थिक जाहिमे अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर सांघातिक चोट कयल गेल। एक व्यक्तिक मनोरथ ओ आशाक विफलताक बात तीक्ष्ण ढंगे कहल गेल। ओ व्यक्ति छल पार्वती। हमरा जनैत कोनो मैथिली उपन्यासमे स्त्रीक व्यक्तित्वक संस्थापन सेहो पारोसँ प्रारम्भ भेल। जे विचार ओ अपना दिमागमे बनौने अछि से अन्तधरि नहि बदलैत छैक। भनहि ओकर सभसँ प्रिय बिरजू भैया बदलबाक लेल प्रेरित करैत होउक। एकर कारण ई अछि जे ओ विचार पारोक दिमागमे पोथी-पतरासँ नहि जनमल छैक। जीवन ओ जीवनक आशा ओ मनोरथ एकर मूलमे छैक। मैथिली उपन्यासमे एहिसँ पूर्व सामाजिक स्थितिक जे चित्रण भेल हो, मुदा एक सामाजिक प्राणी, ताहूमे एक स्त्रीक वैचारिक सघनता पारोमे प्रकट भेल अछि। वास्तवमे ताहीसँ पारोकेँ एक व्यक्तित्व भेटलैक अछि।

हमरालोकनि ई जनैत छी जे मैथिल स्त्रीक सुख, मनोरथ, ओ विचारक कोनो मोजर कहियो नहि रहलैक अछि। संगहि व्यक्ति रूपमे सेहो स्त्रीक कोनो गणना नहि। दू चारिटा स्त्री यथा-गार्गी, मैत्रेयी, भारती, लखिमा आ विश्वासदेवीकेँ चिन्तनक कोटिमे राखब हमर अभीष्ट नहि अछि। वर्ण-व्यवस्था, पुरुषक वर्चस्व आ हरिसिंहदेवी सभ मिलि नारीकेँ व्यक्तिक दर्जा देब स्वीकार नहि क' सकल। तेँ स्वाभाविक रूपेँ मैथिल नारीकेँ व्यवस्थाक स्वीकारसँ नहि, बल्कि अस्वीकारसँ कोनो व्यक्तित्व भेटि सकैत अछि। मुदा, एहन केओ उपन्यासकार आगू नहि आबि सकला जे पारम्परिक रूपेँ जमल मानसिकताकेँ आंच देखा सकथि। तंत्रकेँ मानवीय उष्माक धाहसँ छहोछित "' कोनो समानान्तर चरित्र, व्यक्तित्वक सृजन क' सकथि। तेँ, पारोसँ पूर्व एहि तरहक मैथिल नारीक जन्म नहिये भ' सकल।

हरिमोहन झाक बुच्चीदाइ सेहो एकदम चुप्पे रहली आ बिना कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त कयने पुरुषक इशारा पर नाचय लगली। पारोसँ पूर्व नारी विवशता पर मार्च 1925मे प्रकाशित पुण्यानन्द झाक मिथिला-दर्पण उपन्यासक नायिका योगमाया अपन सखी-बहिनपाक संग प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि :

परन्तु छौंड़ीकें बुढ़बा वर होयतैक, ई कोन न्याय थिक। हमरालोकनिक कोनो वश नहि चलैत अछि, तें ने?

हमरालोकनि के छी? बजार लगबे करतैक, मेढ़बा टेढ़सिंगा औताह। हमरा लोकनिक हाथ पकड़ि लेताह। बस भेल विवाह।

वास्तवमे मिथिला दर्पण उपन्यासमे आर कतेक बात अछि जे ओहि उपन्यासकेँ ओहिकालक उपन्यासमे विशिष्ट बनबैत अछि। मिथिला दर्पणमे स्त्री ओ शूद्रक प्रति ब्राह्मण-पुरुषक अत्याचार ओ शोषणक प्रखर चित्रण भेल अछि। संगहि विभिन्न चरित्र ओ व्यक्तित्वक मैथिल ब्राह्मण यथा-चण्डाल, उद्यमी ओ पण्डित रूपक सेहो चित्रण भेल अछि। विश्वाससँ बेसी तर्क पर आधारित चित्रण-वर्णनक कारणे मिथिला-दर्पण समाजक यथार्थकेँ नब कोणसँ देखैत बुझाइत अछि। कन्यादान द्विरागमनक सी. सी. मिश्रसँ फराक एहि उपन्यासक नायक योगानन्द झा अपन विवाहक प्रसंग सोचैत छथि :

'आइ कालिह भारतक दशा हीन भए गेल अछि। जाति व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था, रीति मानि सभ बिगड़ल अछि। एहि समय थोड़ेक-थोड़ेक नहि सहने हो कोना के? सर्वांग उन्नति एक दिनक कार्य नहि थिक। एखन तेँ

क्रम-क्रम उद्योग कैने, तखन उन्नति होयत। विदुषी कन्या की कतहुसँ खसै छैक। बनौनहि बनै छैक। स्त्री-शिक्षाक प्रणाली एखन भारतमे आरम्भे भेल अछि। उचित थिक जे विवाह करी। एखन पढ़ैबहुक समय अछि।'

एहि प्रसंग ओना तथ्य ई थिक जे पारम्परिक होइतो योगानन्द झाक पैर मिथिलामे जमल छनि आ सी.सी. मिश्रक जड़ि मिथिलासँ कटि चुकल छलनि।

यात्रीक पारो प्रकाशित भेल स्वतन्त्रतासँ पूर्व 1946मे। एहिसँ पूर्व मैथिलीमे जे उपन्यास सभ आयल अछि से थिक जन.र्दन झा 'जनसीदन'क निर्दयी सासु आ पुनर्विवाह, जीवछ मिश्रक रामेश्वर, कुमार गंगानन्द सिंहक मनुष्यक मोल, रास बिहारीलाल दासक सुमति, पुण्यानन्द झाक मिथिला-दर्पण, कांचीनाथ झा 'किरण'क चन्द्रग्रहण आ हरिमोहन झाक कन्यादान-द्विरागमन, योगानन्द झाक भलमानुस आदि। पारोक संग वर्ष 1946मे दूटा उपन्यास आर आयल छल उपेन्द्र नाथ झा 'व्यासक' कुमार ओ शारदानन्द झाक जयवार। एहिमे मैथिल ब्राह्मण आ कायस्थक वैवाहिक समस्या पर लिखल उपन्यासमे निर्दयी सासु, पुनर्विवाह, सुमति, मनुष्यक मोल, मिथिला दर्पण आ कन्यादान प्रमुख अछि। पारोक पहिने आयल सुशीला आ पारोक बाद आयल चतुरानन मिश्रक कला सेहो एही विषय पर अछि। एहि सभ उपन्यासमे वर्ण-व्यवस्थाक संग हरिसिंहदेवी प्रथाक कारणे उत्पन्न बहु-विवाह, बिकौआप्रथा, अनमेल विवाह, स्त्रीकेँ छागर-पाठी बुझबाक बात, स्त्री-शिक्षाक अभाव, स्त्रीक दु:स्थिति लेल स्त्रियोक उत्तरदायित्व आदि बात आधुनिक आँखि-पाँखिक संग प्रस्तुत कयल गेल। जाति-पाँजिक कारणे पहिने वरे नहि कन्यो बिकाइत छल। कन्याक बाप टाका गनबैत छला। तकर कुपरिणामक भीषण चित्रण कुमार गंगानन्द सिंहक मनुष्यक मोलमे भेल अछि। तँ स्त्री-शिक्षाक अभावक संग अंगरेजिया वरकेँ ठकि क' विवाहक दुष्परिणाम कन्यादानक बुच्चीदाइकेँ भोगय पड़ल। बृद्धक संग अल्पवयस्क कन्याक विवाहक कारणे वैधव्यक दुख आ कुलक्षणी, अलच्छीक उपाधिक संग नैहर-सासुरक अत्याचारसँ जतय सुशीला अपन देहमे आगि लगा क' मरि गेल ओतहि कला पड़ा कं' काशी चलि गेल। ओतए दुष्टा आ कुटनी विधवासभसँ बाँचि एक प्रगतिशील डॉक्टर कलानन्दसँ विवाह क' विधवा सभक उद्धारमे लागल।

मुदा एहि सभ उपन्यासमे सामाजिक समस्यासँ उत्पन्न लेखकक सदिच्छा, सुधारक आकांक्षा उपरे-उपर स्थितिक चित्रण धरि सीमित रहि गेल अछि अथवा जोशमे भाषणबाजी भ' गेल अछि। लगैत अछि जेना कुप्रथा पर केवल चोट

करबे लेखकक अभिष्ट होनि। पात्र सभकेँ तँ जेना चाहलनि तेना उठ-बैस करओलनि अछि। घटनाक प्रधानताक कारणेँ चरित्र ने पुष्ट भ' सकल आ ने ओकर कोनो व्यक्तित्वे ठाढ़ भ' सकल। स्त्रीक प्रति संवेदना-सहानुभूतिक अछैतो स्त्रीक अपन कोनो व्यक्तित्व नहि बनि सकल अछि। सभ परिस्थितिक दास बनि क' रहि गेल अछि। व्यक्तित्वक अभाव स्त्रीएटामे नहि, बहुधा पुरुषोमे देखबामे अबैत अछि। कुमार सन अपन कालक प्रसिद्ध उपन्यासमे सेहो व्यासजी कुमारक कोनो औचित्य, सार्थकता नहि सिद्ध क' सकला अछि। क्षण-प्रतिक्षण भावनावश बदलैत विचारक कारणें कुमारक नायक कोनो परिचिति नहि बना पबैत अछि।

तत्कालीन उपन्यास सभमे परिचितिक इएह अभाव पारोमे आबि क' खतम भ' जाइत अछि। पार्वती अर्थात् पारोक वैचारिक दृढ़ताक चरित्रांकनक संग बिरजूक माध्यमसँ कथा कहबाक शिल्पक नव प्रयोग सेहो ई सम्भव कयलक अछि, से सहजे कहल जा सकैत अछि। ई स्वाभाविक जे बिना आन्तरिक वैचारिक दृढ़ताक यदि ढाँचा तैयार कयल जायत तँ 'व्यक्ति' मूर्तिमान नहि भ' सकत। बिना हड्डीक मनुक्ख केहन होयत? एकरे संग पारोमे यात्री जेँ कि समाज-व्यवस्था आ अन्यायी कुप्रथाक प्रबल घेराबन्दीसँ आगू बढ़ि मानवीय चेतनाक संग चरित्र आ कथाक ढाँचा तैयार करैत छथि तेँ ओ पारोकेँ ओकर व्यक्तित्व देबामे सफल भ' सकला अछि।

पात्रकेँ पहिने मनुक्ख होयब आवश्यक अछि। हाड़-मांसक मनुक्ख। जकरा अपन सख-सेहन्ता, मनोरथ होइ। प्रेम-घृणा होइ। विचार होइ। जीवनक प्रति आकर्षण होइ। सौन्दर्य-बोध होइ। एहने मनुक्ख रूढ़ि-भंजक भ' सकैत अछि। अहितकर परम्परा आ विश्वासकेँ नकारि सकैत अछि। अपन नैतिकताक परिभाषा स्वयं गढ़ि सकैत अछि। स्वाभाविक अछि जे एहन मनुक्खक क्रिया-कलाप नैतिकताक बनल-बनाओल लीक पर नहि चलत तेँ ओकर विरोध सेहो स्वाभाविक। उपन्यासमे आयल एहने आधुनिक मनुक्ख सभ भाषा-साहित्यमे हड़बिरड़ो मचौलक। रूढ़िवादीलोकनिक कोपभाजन बनल। मैथिलीमे सेहो पारोक विरोधक मूलमे इएह कारण छल, जकरा ममिऔत-पिसिऔत भाय-बहिनिक यौन आकर्षणक नाम पर चर्चित-चर्वित कयल गेल। ई ओहिकालक पोंगापंथी मानसिकताक द्योतक रहय। आइ जखन पारो पढ़ल जाइत अछि तँ ककरो ओहन प्रतिक्रिया नहि होइत छैक, जे तहिया भेल रहैक। एकरा मैथिल पाठकक मानसिक परिवर्तन सेहो मानल जा सकैत अछि।

प्रकृति अथवा देहक प्रति आकर्षण मनुक्खक स्वभावमे छैक। प्राकृतिक दृश्य ओ पुरुष-स्त्रीक देह मनुक्खकेँ आकर्षित करैत छैक। यदि से स्वाभाविक रूपेँ नहि करैत छैक तँ से कोनो विकृति भ' सकैये। विकृत मानसिकताक तँ गप्पे नहि हो। बिरजू अपन समस्त आचार-व्यवहार ओ संस्कारक संग जेँ कि मनुक्ख अछि, तेँ ओकरा पारोक आँखि आकर्षित करैत छैक। कारी आ दुब्बर पातर बगए बानिक पार्वतीक आँखिमे अजीब आकर्षण छैक। बिरजूकेँ होइ छै जे, 'आगाँ आन कोतो बात जँ नहिओ भेल रहितय तइयो आँखियेक खातिर पार्वती हमरा जिनगी भरि मोन रहैत, कहियो की बिसरैत।' बिरजू पारोक आँखिमे नोर नहि सहि सकैये। 'ओहि दिन ओकर डबडबैल आँखि हमरासँ किए नहि देखल गेल। ओकर लटकल मुँह देखि हम पघीलि किए गेलहुँ।' बहीनि आ संगतुरियाक सम्बन्ध-अनुबन्धक अतिरिक्त ई प्रबल दैहिक आकर्षण दूनूकेँ लगाओक निस्सन डोरीमे बान्हि देलकैक। पार्वतीकेँ सेहो बिरजूक प्रति आकर्षण छैक। ओकर मनोरथ छैक जे बिरजूए भैया सन जँ ओकरा वर होइतैक। अपन मनोरथ ओ सेहन्ताक तापसँ ओ लोकाचारक प्रति सेहो विद्रोही भ' उठैये। 'भाइये-बहीनमे जँ विवाह दान होइतैक तँ केहेन दिब होइतै। कत' कहाँदनक अनठिया के जे लोक उठा क' ल' अबैये, से कोन बुधियारी?' पारो मोनसँ एकदम स्वाधीन अछि। इएह स्वाधीन मोन ओकरा मनुक्ख बनबैत छैक। एकटा व्यक्तित्व प्रदान करैत छैक। ओ अपन वर चौधरीकेँ कहियो स्वीकार नहि करैये एहि रूपेँ ओ वैवाहिक कर्मकाण्डके सेहो नकारि दैत अछि। एहन स्वतंत्रचेता पारो बिरजू भैयाकेँ कहि उठैत अछि, 'जोर-जबर्दस्ती ककरो देहेटा पर क्यो क' सकैत छै मोन पर किन्हु नहि। ओना तँ तोंही कह' जे पचास वर्षक सांइ केर बहु जाहि ठां पन्द्रह सालक होइ ताहि ठां कोना सौमनस्य हेतैक।' बिरजू भैया द्वारा विवाहोत्तर स्थितिकेँ स्वीकार करबाक सुझाओ पर ओ कोनो ध्यान नहि दैत अछि। एतेक तक जे जाहि पुरुषसँ घोर घृणा छैक तकर सम्पर्कसँ अंकुरित सन्तान केँ सेहो राक्षस-राक्षसी कहि सम्बोधन करैत अछि—'के छइ अइ कोखिमे, राक्षस आ कि राक्षसी? मै गे मै आ होहो!' पारो अपन पसिन्नक पुरुष चाहैत अछि। अपन पसिन्नक पुरुषक सन्तान चाहैत अछि। पारोक ई स्वाभाविक मनोरथ समस्त परम्परा, प्रथा, रीति-रेवाज, कर्मकाण्ड पर प्रश्न-चिन्ह ठाढ़ क' दैत अछि। ओहि पर निस्सन चोट करैत अछि। अपन पसिन्न ओ मनोरथक आगू ओ ककरोसँ, कथूसँ समझौता नहि करैत अछि। ओकरा अपन भविष्य बूझल छैक। बिरजूकेँ मोन पड़ैत छैक 'आबय काल सराइमे जनउ-सुपारी दैत कहने रहय-लैह, कने नीक जकाँ गोड़ लाग' दैह। के कहए, ककरा कखन की हेतैक.

... मोनसँ आशीर्वाद देने जाह।' बन्धनसँ मुक्तिक अकुण्ठ आकांक्षा पारोमे भरि गेल छलैक। मुदा तेँ ओ आत्महत्या नहि करैत अछि। कतहुसँ कमजोर नहि छल ओ। मैथिल ललनाक एहन स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व एहिसँ पूर्व मैथिली उपन्यासमे नहि आयल छल।

भले ही पार्वतीक आशा ओ मनोरथ विफल भ' गेल होइक, मुदा उपन्यास ओहि अन्यायी व्यवस्था दिस ठोस संकेत क' गेल जे व्यवस्था ओकर कष्ट आ विफलताक मूल कारण छल। एहीठाम यात्री अपन उपन्यासमे क्रांतिकारी विचारकक रूपमे उभरि क' हमरालोकनिक समक्ष अबैत छथि।

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासमे उत्पन्न स्त्री स्वाधीनताक ई चेतना अथवा कहू जे पारो चेतना मैथिलीक बादक उपन्यासमे कोना विकास केलक से कथा बुझबाक बेगरता उत्पन्न होयब स्वाभाविक थिक। मुदा एहिठाम मैथिली उपन्यासक कथा पारोए धरि कहबाक अछि हमरा। वस्तुतः मैथिलीक आरम्भिक उपन्यासक उत्कर्ष थिक पारो।

परिशिष्ट-क

भारतीय भाषाक आरम्भिक उपन्यास

वर्ष	आरम्भिक उपन्यास	लेखक	भाषा
1801	बाग ओ बहार	मीर अमम	उर्दू
1832-42	फसाना ए अजब	रजब अली बेगसूरर	उर्दू
1831	काशीयात्रा चरित्र	येनागुलु वीरसमाया	तेलगू
1847	निलगिरी यात्रा	कोला शेषचला कवि	तेलगू
1852	फूलमोनी ओ करुनार विवरण	कैथेरीन हन्ना मूलेन्स	बंगला
1856	सुशीलार उपाख्यान		बंगला
1858	अलाले घरेर दुलाल	प्यारीचन्द मित्रा	बंगला
1862	हुतम प्यान्यर नक्श	कालीप्रसन्न सिंहा	बंगला
1864	राजमोहन'स वाइफ	वंकिमचन्द्र चटर्जी	अंग्रेजी
1864-65	घटक वधम दी स्लेअर स्लेन	मिसेज कॉलिन्स	मलयालम एवं अंग्रेजी
1865	दुर्गेशनन्दनी	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1866	कपालकुंडला	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1868	मंजूघोषा	नरो सदाशिव रिसवद	मराठी
1869	मिरत उल उरुस	नाजिर अहमद	उर्दू
1871	मोचनगद	रनचन्द्र भिकाजी गुंजिकार	मराठी
1872	श्री रंगराया चरित्र	नरहरिसेट्टी गोपालकृष्णनमा	तेलगू
1872	बनत उन नश	नाजिर अहमद	उर्दू
1873	इन्दिरा (वृहत संस्करण 1893)	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1872	विषवृक्ष	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1874	तबत उन नुशू	नाजिर अहमद	उर्दू
1874	कल्पतरु	इन्द्रनाथ वंदोपाध्याय	बंगला
1875	गोविन्द सामन्ता	रेव. लाल बेहारी डे	अंग्रेजी
1878-79	फसाना-ए-आजाद	रतन नाथ शरशर	उर्दू
1878	राजशेखर चरित्र	कंदुकुरी विरेशलिंगम	तेलगू
1881-1905	दाशताने-अमीर हमजा	मुहम्मद हुसैन जाह, अहमद हुर्सन और तस्दुक हुसैन	उर्दू
1882	परीक्षा गुरु	श्रीनिवास दास	हिन्दी
1882	आनन्दमठ	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1884	सुधारमर उपाख्यान	पद्मावती देवी फूकोनोनी	असमिया
1884	देवी चौधुरानी	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1885	श्यामा स्वप्न	ठाकुर जगमोहन सिंह	हिन्दी
1887	सीताराम	वंकिमचन्द्र चटर्जी	बंगला
1887	सरस्वतीचन्द्र (भोल्यूम-1)	गोवर्धनराम त्रिपाठी	गुजराती
1888	इब्न-उल-वक्त	नाजिर अहमद	उर्दू
1888	मलिक अल अजीज वरजना	अब्दुल हलीम शरर	उर्दू
1888	पद्मामाली	उमेशचन्द्र सरकार	उड़िया
1889	इन्दुलेखा	ओ. चन्दू मेनन	मलयालम
1889	हसन और मन्जलीना	अब्दुल हलीम शरर	उर्दू
1890	मनसूर मोहाना	अब्दुल हलीम शरर	उर्दू
1890	पदुम कुमारी	लक्ष्मीनाथ बेजवरुआ	असमिया
1891	भानुमती	पद्मनाथ गोहेन वरुआ	असमिया
1891	कैश और लुबना	अब्दुल हलीम शरर	उर्दू
1891	मारथण्डा वरमा	सी. भी. रामन्ना पिल्लै	मलयालम
1891	बिबासिनी	रामशंकर रे	उड़िया
1892	शारदा	ओ चन्दू मेनन	मलयालम
1892	सरस्वतीचन्द्र (भोल्यूम-2)	गोवर्धनराम त्रिपाठी	गुजराती
1892	लाहोरी	पद्मनाथ गोहेन वरुआ	असमिया
1893	सरस्वती विजयम्	पोथेरु कुनहम्बू	मलयालम
1894	मिरी ज्योरी	रजनीकान्त बरदोलई	
1897	सुकुमारी	जोसेफ मूलियिल	
1898	सरस्वती चन्द्र (भोल्यूम-3)	गोवर्धनराम त्रिपाठी	

1898	भीम भूइना	गोपाल वल्लभ दास	उड़िया
1899	फ्लोरा फ्लोरिण्डा	अब्दुल हलीम शरर	उर्दू
1899	इन्दिरा बाइ	गुलबदी वेंकट राव	कन्नड़
1899	उमराओ जान अदा	मिर्जा हादी मोहम्मद रुसबा	उर्दू
1900	मनोमती	रजनीकान्त बरदोलई	असमिया
1900	सरस्वतीचन्द्र (भोल्यूम-4)	गोवर्धनराम त्रिपाठी	गुजराती
1902	छह मन अठ गुंठ	फकीरमोहन सेनापति	उड़िया
1905	वाग्देवी	बोलारु बाबू राव	कन्नड़
1913	मामू	फकीरमोहन सेनापति	उड़िया
1913	धर्मराजा	सी.भी. रामन्ना पिल्लई	मलयालम
1914	लक्ष्मा	फकीरमोहन सेनापति	उड़िया
1915	प्रायश्चित	फकीरमोहन सेनापति	उड़िया
1918-19	रामराजा बहादुर	सी.भी. रामन्ना पिल्लई	मलयालम
1926	तमरेश्वरिर मन्दिर	रजनीकान्त बरदोलई	असमिया
1926	सेनवाग विजयम्	कोथेन्या अमाल	तमिल
1930	रोहडोइ लिगरी	रजनीकान्त बरदोलई	असमिया

(मीनाक्षी मुखर्जी द्वारा सम्पादित 'अरली नाभेल्स ऑफ इण्डिया' पोथीसँ साभार)

■

परिशिष्ट-ख

मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास

वर्ष	उपन्यास	लेखक
1907-08	मोहिनी मोहन	जीवनाथ मिश्र प्रसिद्ध पुलकित मिश्र
1912	सती-सर्वस्व	जनार्दन झा 'जनसीदन'
1914	निर्दयी सासु	जनार्दन झा 'जनसीदन'
1915-16	शशिकला	जनार्दन झा 'जनसीदन'
1915	रामेश्वर	जीवछ मिश्र
1918	सुमति	रासविहारी लाल दास
1924	मनुष्यक मोल	कुमार गंगानन्द सिंह (भोल नामसँ)
1925	मिथिला दर्पण	पुण्यानन्द झा
1926	पुनर्विवाह	जनार्दन झा 'जनसीदन'
1933	चन्द्रग्रहण	कांचीनाथ झा 'किरण'
1933	कन्यादान	हरिमोहन झा
1933	चामुण्डा	लक्ष्मीपति सिंह
1935	माधवी माधव	हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज'
1938	सौन्दर्योपासनाक पुरस्कार	चौधरी केदारनाथ ठाकुर
1943	सुशीला	गंगापति सिंह
1943	द्विरागमन	हरिमोहन झा
1944	भलमानुस	योगानन्द झा
1945-46	द्विरागम रहस्य	जनार्दन झा 'जनसीदन'
1945	असहाय जाया	ब्रजनन्द
1946	पारो	वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
1946	जयबार	शारदानन्द झा
1946	कुमार	उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'
1947	बनमानुस	अवध नारायण झा
1948	कला	चतुरानन मिश्र

(डा. अमरेश पाठकक 'मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन'मे देल सूचीक आधार पर साभार)

■

परिशिष्ट–ग

हरिसिंहदेवी

रमानाथ सोति छथि। रातिमे कहियो क' निचेन भेलापर बेचैन भ' जाइत छथि। देहपर जेना चुट्टी बूल' लगैत छनि। काछ कुड़िआए लगैत छनि। होइ छनि जे कुड़िअबैत–कुड़िअबैत लहू–लहुआन क' ली काछ के। सौंसे देहके नोचि ली। रगड़ि–रगड़ि क' साफ क' ली सभटा. ...। देह, मोन आ आत्मा सभ स्वच्छ भ' जाए। मुदा पपटी नहि हटि रहल छनि। आर कारी आ मैल भेल जा रहल छनि। आतंकसँ जेना घामे–पसेने तर–वतर भ' जाइत छथि रमानाथ। नीन्न नहि होइ छनि। कछमछ करैत समय बीतैत छनि....।

रमानाथ सोति छथि। मुदा ई बात अनकासँ नुकेबाक चेष्टा करैत छथि। नामसँ कियो हुनका सहजहि ब्राह्मण बूझि सकैत अछि। सबा सोलह आना मैथिल ब्राह्मण। रमानाथ झासँ कियो हुनका सोति नहि बूझि सकैत अछि। सोति तँ बुझैत अछि बादमे। जखन कियो आन ई तथ्य जनबैत छैक। अरे, ओ तँ सोति छथि। अहाँके नहि बूझल छल एखन धरि? वाह, खूब छी अहूँ। देखब, सम्हरि क' रहब। ई जानकारी पाबि ओ व्यक्ति चौकि जाइत छथि। अकस्मात् जेना कोनो तिलिस्म उजागर भेल हो। ऐ, रमानाथजी सोति छथि? सुआइत....। आ तहियासँ रमानाथ झाक कोनो गुण हुनकर व्यक्तिगत खाता मे आ अवगुण उपजातिगत खाता मे जमा हुअ' लगैत अछि। तकर बाद जहिया कहियो ओहि व्यक्ति के भेंट होइत छनि रमानाथसँ त' ओ या तँ सोझे टोकि दैत छथिन, अँए यौ अहाँ सोति छी औ? अथवा गप्पक क्रममे जना दैत छथिन जे ओ बाघ मारि चुकल छथि। एहि शाश्वत परम्पराक निर्वाह मात्र एक गोटे नहि केने रहथि। ने हुनका कियो जानकारी देलकनि। ने ओ चौकि क' पूछलखिन। आ ने कोनोना जना देलखिन जे ओ बाघ मारिए देने छथि। ओ व्यक्ति छलाह विमल कुमार झा, बी.डी.ओ.।

विमल कुमार झासँ रमानाथ झाके मोहनियाँमे भेंट भेलनि। मोहनियाँ प्रखण्ड मे। विमल ओत' बी.डी.ओ. रहथि आ रमानाथ अंचलाधिकारी भ' कए ज्वाइन केलनि। ई करीब सोलह–सत्तरह वर्ष पूर्वक कथा थिक। आब त' सम्भवे नहि अछि जे कियो दू टा झाजी एक्कहि प्रखंड मे बी.डी.ओ.–सी.ओ. भेटथि। ओहिकालमे बिमल बैचलरे रहैत छलाह। रमानाथके सेहो परिवार के गामहि राखब जरुरी छलनि। तैं दूनू एक्कहि डेरामे संगहि संग रह' लगलाह। बएस मे विमल जेठ रहथि। करीब चारि बरस जेठ। तीन बैच सीनियरो रहथिन। काशीक नजदीक एहि भोजपुरी क्षेत्रमे दू मैथिलक भेंट मने उल्लासक बागमती उमड़ि आयल। सभ काज संगे चल' लागल। क्षेत्र भ्रमणसँ ल' कए सिनेमा देखब धरि। दूनूके सरकारी जीप

भेटल रहनि मुदा ई अवसर गनिये गूथिक' आएल जे दूनू गोटे अपन–अपन जीपपर फूट बैसल होथि। रहैत छलाह संगहि, चलैत छलाह संगहि। कखनो ब्लौकक जीप रहनि कखनो अंचलक। स्वभावो बेशी मिलैते रहनि। आश्चर्यजनक रुपसँ दूनू ईमानदार ओ संवेदनशील अधिकारी। प्रखंड मे खूब काज भेलैक। दूनूक खूब प्रशंसा भेलनि। मुदा एक दिन कोनो गप्पक प्रसंग मे विमल अकस्मात बाजि उठलाह, 'दुर छोड़ू। सोति सभ तँ बूड़ि होइत अछि।' सुनि क' रमानाथ चौकलाह अवश्य मुदा बातके आगू बढ़ौलनि नहि। हँसि के चुप्प रहि गेलाह। मने मन्तव्यपर सहमतिक मोहर लगा देनि। अथवा सहमतिक भ्रम उत्पन्न केलनि। भ' सकैए जे व्यक्तिगत सम्बन्ध पर जरब पड़बाक डरे बातके टारि देलनि। चुप्पे रहलाह। बात खतम भ' गेल। मुदा रमानाथके मन्तव्य मोन पड़ैत रहलनि। एहिसँ पहिने एहन स्थिति सोझे–सोझ नहि आएल रहनि। मुँहपर कियो ई बात नहि कहने रहनि। सभ दिन परिवार आ उपजातिक कारणे एक विशिष्टताबोधसँ हुलसैत रहलाह। घर–परिवारमे बाबूसाहेब सभके बूड़ि कहैत सुनैत छलाह। बाबूसाहेबक खूब खिधांश होइत रहैक। फल्लाँ ठामक बाबूसाहेब सभ दरिद्र भंजन भ' गेल छथि। फूसक घर छनि। मुदा कोनो सोतिके अबैत देखि चट्टसँ टुटलाहा कुर्सीपर बैसि क' पटिया ओछा दैत छथि नीचाँमे। सोतिके बैसबाक लेल। अपन दियाद सभके कहैत सुनथि; 'फल्लाँ बाबूसाहेब जे बूड़ि अछि यौ।' मुदा बाबूसाहेबक कन्यासँ वियाहक लेल सभ धड़फड़ायल रहथि। अपन बाप–पित्तीक मुँहपर प्रसन्नताक लहरि देखथि जखन कोनो बाबूसाहेबक ओहिठामसँ कोनो कथा–वार्त्ता हुअए। कथा आबए। मुदा बाबूसाहेबक खिधांश चलिते रहय। ई खिधांश आन जाति–उपजाति लेल सेहो चलैत छल। 'ब्राह्मण सभ बड़ छट्टू चालक होइये। रोटी–आलू साना–खिच्चड़ि खा नोट जमा करैये। एकदम अविश्वसनीय होइये। बाभनक फेरमे नहि पड़ब। बहुत दोस्ती देखै छी अहाँके।' कियो जेठ धोप' लागथि। तहिना भूमिहार, राजपूत, कायथ, गुआर, धानुक, बनियाँ सभहक खिधांश हुअए। जातिक कारणे। चमार–दुसाधक मुदा कोनो खिधांश मोन नहि पड़ैत छनि। भरिसक ओ सभ खिधांशक जोकर नहि बूझल जाय। ओकर अस्तित्वक स्वीकृति जेना नहि रहैक।

मुदा जखन मुँहपर सुन' लगलाह तँ सुनिते रहलाह। विमल एक–दू बेर आर कोनो प्रसंगमे रमानाथक मुँहे पर सोतिके बूड़ि कहने छलाह। मुदा ओ फेर किछु नहि बजलाह। सोच' लगलाह जे जखन विमलबाबूके पता चलतनि जे ओ सोति छथि तँ हुनका ग्लानि हेतनि। रमानाथ सोचिक' रोमांचित होथि जे जखन अकस्मात् विमल बाबू बुझताह जे ओ सोतिए छथि जिनका मुँह पर सभ दिन बूड़ि कहैत रहलाह तँ क्षमा माँग' लगताह। पश्चाताप हेतनि। अपन व्यवहारसँ, गुणसँ रमानाथ विमलक धारणा बदलबाक मादे सोचैत रहलाह। अपन सोति हेबाक रहस्योद्घाटन नहिये केलनि अथवा ने बूड़ि कहबाक विरोधे केलनि। हुनका अपनहुँ एहिमे सन्देह नहि रहनि जे यदि ओ अपन उपजाति खोलि देताह तँ विमल कमसँ कम हुनका मुँहपर सोतिके बूड़ि नहिये टा कहताह। अपन एहि चूकक कारणे रमानाथ एक

दिन बेश विचित्र स्थितिमे फँसि गेलाह। अपन ममियौत जेठ भाइसँ फज्झति आ गंजन सुन' पड़लनि से फराक। भेल ई रहैक जे ओ विमलक संग पटना गेल रहथि। विमलके शिक्षा विभागमे काज रहनि। रमानाथक ममियौत ओहिमे किरानी रहथिन। तैं रमानाथ विमलक काजक मादे अपन ममियौतसँ कहलथिन। ताहिपर अनायास हुनकर ममियौत बाजि उठलाह,

'हिनकर काज तँ शंकरे बाबू करथिन। उजानक सोति छथि।' ताहि पर विमल चोट्टे जवाब देलथिन, 'सोति छथि? सोति सभ तँ बड़ बूड़ि होइये।' रमानाथके भेलनि जेना ओ एक्कहि बेर नांगट भ' गेल होथि। लाजसँ मुँह-आँखि लाल भ' गेलनि। अपन ममियौतके आँखि गुड़ारिक' अपना दिस तकैत देखलनि। ओ किछु बाजि नहि देथि तैं इशारासँ हुनका रोकलनि। अनोन-विसनोन सन सचिवालयक सड़क रगड़ैत रहलाह। विमलक परोक्ष भेला पर ममियौत गरजि उठलाह, अँए हौ। बी.डी.ओ. साहेब नहि बूझैत छथि जे तों सोति छह। दू बरखसँ तों दूनू गोटे एक्के संग रहै छह आ एखन धरि अपना बारेमे कहबो ने केलहुन अछि। चुपचाप सोतिके बूड़ि कहैत सुनैत रहैत छह? की पढ़ि-लीखि क' तो सभ डिप्टी-कलक्टर भेलह से नहि जानि। कोन बातमे तों हुनका सँ कम छह? रमानाथ अपन ममियौत के शान्त करबाक चेष्टा केलनि, 'कम बेशीक बात नहि छैक भाइ। दू-सए-तीन सए बरखक बद्धमूल भेल धारणा छनेमे हटैबला नहि छैक। जँ ओ बुझिये गेल रहितथि जे हम सोति छी तँ ताहि सँ की फर्क पड़ै वला छलैक। हमरा मुँहपर नहि कहितथि, हमर परोक्षमे बजितथि। असलमे हम अपन बात-व्यवहारसँ सोतिक प्रति हुनक धारणा बदल' चाहैत छी। रहल बूड़ि कहबाक बात तँ ताहिसँ हमरा तामस नहि होइये।'

–किए, तामस किएक नहि होइ छह? तों सोति छह की नहि? तोहर मुँहपर सोतिके बूड़ि कहैत छथि आ तों चुपचाप सुनिक' रहि जाइत छह।' ममियौत गुम्हरि रहल छलाह।

–चुपचाप सुनिक' रहि नहि जाइत छी। हँसि दैत छी। ओहिना जेना अहाँ बूड़ि कहैत छी त' हँसि दैत छी।' रमानाथ मुसकुरा रहल छलाह। मुदा ममियौतक क्रोध बढ़ैत गेलनि।

–ऍं, दूनू एक्के बात भेलैक। हम तोरा कहैत छियह आ ओ तोहर जातिके कहैत छथुन।'

–भाइ, हम से कहाँ कहलहुँ जे दूनू एक्के बात भेलैक। दूनू दू बात भेलैक। कने सोचियौ। अहाँ हमरा नीक जकाँ चिन्हैत छी जे हम की छी तैयो बूड़ि कहि दैत छी। मुदा ओ तँ हमरा नहि कहैत छथि। सोतिके कहैत छथि। सेहो समाज मे पसरल धारणाक आधारपर कहैत छथि। धारणामे तथ्य आ भ्रान्ति दूनू मिज्झर रहि सकैत छैक। धारणा बिना देखनहुँ, बिन परीक्षणोक बनि जाइत छैक। ई सभटा पंजी व्यवस्थाक आ जातिवादक दोष थिकैक। रमानाथ अपन ममियौतके बुझेबाक चेष्टा केलनि। मुदा हुनकर ममियौत बात नहि बूझि पबैत छथि। रमानाथक जबाबपर ओ आर भड़कि जाइत छथि 'तौं बुझैत छह जे जखन हुनका पता

चलतनि जे तों सोति छह तँ हुनका ग्लानि हेतनि। पश्चाताप हेतनि। हुनकर धारणा तोहर व्यक्तिगत व्यवहार-गुणसँ सोतिक प्रति बदलि जेतनि। किन्हुँ नहि बदलतनि। ई तोहर भ्रम छह। तोरा भले ही शुद्धा ओ नीक लोक बूझ' लागथि मुदा सोतिकेँ बूड़िये बूझैत रहताह। कहैत रहताह।' ममियौतक जे विचार होइन मुदा रमानाथ अपन व्यवहार नहिये बदललनि। ने विमलक प्रतिरोध केलनि आ ने कहि सकलाह जे ओ सोति छथि। एहिना सभ किछु चलैत रहल। ओ तँ बहुत बादमे जा कए रमानाथक बहीनक वियाहमे विमल हुनकर गाम गेलाह तँ बुझलनि। ओहि समयमे दरभंगाक मनीगाछी प्रखण्ड मे आबि गेल रहथि विमल। रमानाथक गामसँ किछुए दूर। बरियाती सभ जखन खा क' चल गेल तँ सरियाती भोजनक बेरमे विमलके आवेससँ खुआब बैसलाह रमानाथ। अनोन तरकारी सभमे नोन मिलाबक लेल कहलथिन। अनोन तरकारीक परम्परापर गप्प भेल। सोति मे काटर नहि लगबाक मादे गप्प भेल। एक्के साँझ बरियाती भोजनक गप्प भेल। दूनू मित्र मुसकुराइत गप्प करैत रहलाह। मुदा रमानाथ ने अपनाके सोति उद्घोषित केलनि ने विमलक धारणा मादे पुछलनि। विभिन्न स्थानपर स्थानान्तरणक कारणे दूनू गोटे आब संगे नहि रहैत छथि। मुदा सम्बन्ध बनल छनि। विभिन्न अवसर पर भेंट-घांट होइत छनि। परुकाँ रमानाथ विमलक बेटीक वियाहमे हुनकर गाम गेल छलाह। बेश आगत-स्वागत भेलनि। बरियातीक विदाइ बेरमे विमल रमानाथेके आग्रह कएलथिन धोती आ जनउ-सुपारी देबाक लेल। रमानाथेक हाथसँ वरियाती लोकनिके धोती आ जनउ-सुपारी देल गेल। रमानाथ के बूझि पड़लनि जे हुनका प्रतिष्ठा देल जा रहल छनि। ओ एकर विरोधो केलनि। मुदा विमल नहि मानलथिन। बिना कोनो स्पष्ट वाक्य के रमानाथके लगलनि जे सोति हेबाक कारणे हुनका प्रतिष्ठा देल गेलनि अछि। विमलक बूढ़ पिताक अनुरोध सेहो मोन पड़लनि। रमानाथकेँ लाज भेलनि।

रमानाथके मोन पड़ैत छनि जे अपन उपजातिक कारणे विशिष्टताबोध जे धिया पुतामे कहियो उत्पन्न भेल रहनि आब खिया क' पपटी भ' गेल छनि। ओ कत्तोक बेर देखने छथि जे ई पपटी भेल विशिष्टताबोध कोनो सोतिके कोना दिनाय जकाँ कुड़िआए लगैत छैक। दिनाय कुड़िआएब नीक लगैत छैक। ककरो नह लगलासँ जखन छनछनाए लगैत छैक तँ कष्टो होइत छैक। मुदा इस-इसो करैत दिनाय कुड़ियबैत रहैए लोक। अपन कतेक सोति मित्रके देखने छथि ओ आन जातिक अपन संगी सभहक लग ब्राह्मणक खिधांशमे अपनाके बिलगा लेबाक प्रयत्न करैत। 'हमरा सभमे एना नहि होइत छै।' कोनो बात व्यवहार पर चर्चाक क्रममे मित्र कहि उठैत छथि।

सभ प्रश्नवाचक दृष्टियें हुनका दिस ताक' लगैत छनि। ओ स्पष्ट रुपें मैथिल ब्राह्मणक चारि उपजातिक चर्चा करैत छथि। अपनाके श्रोत्रिय अथवा सोति कहैत परम्परा, रीति-रेवाजसँ अपनाके विशिष्ट बना लैत छथि। ब्राह्मणक प्रति अपन आन जातिक संगी सभहक धारणासँ

अपनाके साफ बचा लेबाक हुनक कोशिश कखनो क' सफलो भ' जाइत छनि। एहिठाम कखनो क' व्यक्तिगत व्यवहार आ गुण, नीक लोक हेबाक इमेज, कट्टरताक अभाव उपजातिपर हाबी भ' जाइत अछि। मने व्यक्ति जातिके दबा दैत अछि। आन जातिक संगी व्यक्तिएके जाति वा उपजातिक प्रतीक मानि लैए। मुदा ई स्थिति बहुत कम ठाम उपलब्ध होइत छनि रमानाथक सोति मित्र सभके। वेशीकाल अपनाके विलगेबाक अवसर नहिये भेटैत छनि। यदि भेटतो छनि तँ आन सभहक धारणा बदलि नहि पबैत छथि। लोक सभ सन्देहक दृष्टिसँ देखिते रहि जाइत छनि। 'अरे बाप! मैथिल आ सापमे मैथिले खतरनाक होइए ज्यादे। सापसँ पहिले मैथिलेके मारक चाही।' कोनो अंग्रेजक लिखल बात अदौसँ लोक गीरह बन्हने अछि। एक-दूटा उदाहरणो भेटिये जाइत छैक। लोक जातिवादी चश्मामे एहि बातके गीजैत रहैए। रमानाथके अपन ब्राह्मण मित्र सभहक गप्प सेहो मोन पड़ैत छनि। हँसी-ठहक्का मे उधियाइत गप्प-खिस्सा सभ....। गीदड़क भुकला पर कम्मल देबाक गप्प! सापके मारबाक लेल मुस्सर अनबाक गप्प। चोरके पकड़बाक लेल पुरुखके बजेबाक खिस्सा। चोर द्वारा राहड़िक दालि चोरौला पर आमिलके ताकब। कौआके चारपर देखिक' सीढ़ी हटा लेबाक खिस्सा। सोतिक कौचर्य! खिधांश! ब्राह्मणक कौचर्य! ब्राह्मणक खिधांश।

ई सभ आखिर किएक होइत छैक। किएक आइयो एतेक आधुनिक भेल लोक जाति आ उपजातिमे बँटल अछि? एक दोसराक खिधांश करैये! जातिक आधार पर चलैत चुटकुलाक कहियो अन्त छैक की नहि! हँसी-हँसी मे मर्मभेदी प्रहारक की प्रयोजन छैक? एतेक हिंसा किएक भरल छैक लोकक मोनमे? रमानाथ सोचैत छथि। सोचैत रहैत छथि। मोन पड़ैत छनि रमानाथके सोति ससुर द्वारा ब्राह्मण जमायक अपमान। ब्राह्मणी सासु द्वारा सोतिआइन पुतहुक खिधांश! परिवारमे ब्राह्मणी पुतहुक हास्य। जखन खान-पान, बियाह-दानो जातीय वा कहू उपजातीय भावनाके नहि खतम क' पाबि रहल छैक तखन आब की उपाय छैक?

रमानाथकें सोचैत-सोचैत हरिसिंहदेव मोन पड़ैत छथिन। पंजी बनाक' जे ब्राह्मणके छोट-पैघमे बाँटि देलनि। कियो दोसरासँ अपनाके किए दबल रहब पसिन्न करत? जेना ब्राह्मण आ कायस्थक पांजि बनल तहिना क्षत्रियक सेहो बनल। परन्तु क्षत्रिय सभ हरिसिंहदेवक पंजी प्रबन्धके लागू नहि केलनि। किएक तँ अधिक लोकके तँ छोटे बनौने छलाह। लोक छोट बनब किएक स्वीकार करितय? एही हलचलमे जखन मुहम्मद तुगलकक सेना मिथिलापर फेर आक्रमण केलक, क्षत्रियलोकनि महाराज हरिसिंहदेवक कोनो सहायता नहि केलनि। ब्राह्मणोमे जे सभ जमीन्दार छलाह हुनका छोटे बनौने छलथिन। श्रोत्रियलोकनि होमक स्रुबसँ कतेक सहायता करितथिन? कुलीन कायस्थलोकनि कलमक नोकसँ लड़ाइ कोना लड़ितथि? फल भेल जे हरिसिंहदेव महाराज के अपन राजधानी छोड़ि क' जंगल-पहाड़ मे शरण लिअ पड़लनि। नेपाल पड़ाए पड़लनि। जाहि महाराज हरिसिंहदेवकेँ पाँजि चलौलाक कारणे शत्रुसँ

हारि क' जंगल-पहाड़मे बौआए पड़लनि, हुनकर पाँजिक पोटरीके हमसभ कतेक दिन धरि पीठपर उघने फिरब?

रमानाथ चाहैत छथि जे ओ अपन उपजाति बिसरि जाथि। उपजाति की जातियो बिसरि जाथि। मुदा से पार नहि लगैत छनि। कखनहुँ लोक मोन पाड़ि दैत छनि। कखनहुँ परम्परा सँ चल अबैत विशिष्टताबोधक पपटी दिनाय अपने मोने कुड़िआए लगैत छनि। दिनाय कुड़िआएब नीक लगैत छनि। मुदा नह लगलासँ जखन छनछनाय लगैत छनि तँ कष्टो होइत छनि। इस-इसो करैत दिनाय कुड़िअबैत रहैत छथि। मुदा कतेक दिन चलतनि एना? कतेक युग? नेनासँ सुनैत हरिसिंहदेवी आब भविष्योके बकुटने हँसि रहल अछि। ओहि दिन दस बरखक बेटा पूछि देलकनि, 'पापा! हम सभ सोति छी ने? मैथिल ब्राह्मणमे सभ सँ ऊपर?' रमानाथ भरि नजरि अपन बालक दिस तकलनि। बेटाक मुँहपर वैह विशिष्टताबोध दमकि रहल छलनि। ओ आतंकसँ घामे-पसेने तर-बतर भ' गेलाह। ओही अवस्थामे बेटासँ कहलनि, 'जातिमे पैघ होयब त' बूड़ियो कहायब ने? बूड़ि कहायब नीक लागत अहाँके?' एहि प्रश्न पर बेटा के चुप्प देखि अपने बजलाह, 'बूड़ि कहायब नीक नहि लागत त' सोतिए होयब कोना नीक लागत....।'

(मातबर कथा-संग्रह सँ)

■

मैथिली अकादमी, पटना

महत्त्वपूर्ण समीक्षा-पुस्तक

महाकवि विद्यापति	-	शिवनन्दन ठाकुर
समालोचना शास्त्र	-	जयधारी सिंह
मैथिली शैव साहित्य	-	रामदेव झा
अर्थात्	-	मोहन भारद्वाज
मिथिला तत्व विमर्श	-	परमेश्वर झा
रामकथा आ मैथिली रामायण	-	तारानन्द वियोगी
हरिमोहन झाक साहित्य-संसार	-	रघुवीर मोची (सम्पादक)
मैथिल आँखि	-	अशोक
मैथिली लोकगाथा विवेचन	-	विश्वेश्वर मिश्र
वर्णरत्नाकर मे चित्रित पूर्व मध्ययुगीन सांस्कृतिक भारत	-	भूवनेश्वर प्र. गुरुमैता